प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषत: जयपुर प्रान्त मे दि० जैन मन्दिरों मे बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पडा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी संख्या मे कौन कौन से शास्त्र विराजमान है, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारो मे जो अमूल्य साहित्य बिखरा पड़ा है वह अपने उद्धार की बाट देख रहा है। राजस्थान मे उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान मे रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसंधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारो की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमे उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरंभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारो मे गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति संग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। इसमे केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियो का ही संकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियो के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड दी गयी हैं जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय मे काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तिया इस संग्रह मे मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने मे काफी सहायता देगी। इस संग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज मे कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त प० अखयराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरू होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारों की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बडी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा मे जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था मे है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा मे श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरू कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहब मुख्तार देवबन्द वालो से उनका श्री वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी मे लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा-ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध मे घोर उदासीनता बड़े दु:ख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर का दरजा

प्रकाशकीय

राजस्थान और विशेषत: जयपुर प्रान्त में दि० जैन मन्दिरों में बहुत सा प्राचीन साहित्य अज्ञात अवस्था में पडा हुआ है, किन्तु किस किस मन्दिर एवं ग्रन्थ भण्डार में कितनी सख्या में कौन कौन से शास्त्र विराजमान है, हमारे पास इतनी भी सूचना का संकलन नहीं है। इन ग्रन्थ भण्डारों में जो अमूल्य साहित्य बिखरा पडा है वह अपने उद्धार की बाट देख रहा है। राजस्थान मे उपलब्ध जैन साहित्य के प्रकाशन एवं शोध की नितान्त आवश्यकता को ध्यान मे रखकर दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी की प्रबन्ध कारिणि कमेटी ने अनुसधान विभाग खोलने का विचार किया। सबसे पहिले प्रबन्ध समिति ने राजस्थान के नहीं, तो कम से कम जयपुर के जैन भण्डारो की एक संक्षिप्त सूची बनवाने तथा उनमे उपलब्ध उपयोगी साहित्य का प्रकाशन कराने का कार्य आरभ किया। इसी के फलस्वरूप आमेर शास्त्र भण्डार जो भारत के प्रसिद्ध शास्त्र भण्डारों मे गिना जाता है उसकी एक विस्तृत सूची प्रकाशित की गयी।

यह प्रशस्ति सग्रह भी इसी विभाग द्वारा प्रकाशित किय जा रहा है। इसमे केवल आमेर शास्त्र भण्डार के ही संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी भाषा के उपलब्ध ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही सकलन है। ग्रन्थ प्रशस्तियों के साथ २ लेखक प्रशस्ति भी जोड दी गयी है जिससे ग्रन्थ के समय आदि के निर्णय मे काफी सहायता मिलेगी। अपभ्रंश साहित्य की ४० से अधिक ग्रन्थों की प्रशस्तियां इस संग्रह मे मिलेगी जो इस साहित्य के महत्त्व को प्रकट करने मे काफी सहायता देगी। इस सग्रह के प्रकाशन से जैन साहित्य की खोज मे कितनी सहायता प्राप्त होगी इसका अनुमान तो विद्वानगण ही कर सकेंगे।

इस प्रकाशन के अतिरिक्त प० अखयराज कृत 'चतुर्दश गुणस्थान चर्चा' शीघ्र ही पाठकों के सामने आने वाली है। अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध महाकवि नयनन्दि कृत 'सुदर्शन चरित्र' का भी सम्पादन हो रहा है और उसके प्रकाशन का कार्य शुरु होने वाला है। जयपुर और राजस्थान के दि० जैन शास्त्र भण्डारो की विस्तृत सूची का कार्य भी प्रारम्भ होने वाला है जिससे कम से कम उपलब्ध ग्रन्थों का साधारण परिचय तो प्राप्त हो सकेगा। प्रबन्ध कारिणि के सामने साहित्य प्रकाशन की बहुत बडी योजना है। तामिल, तेलगू और कन्नड भाषा मे जो महत्त्वपूर्ण साहित्य अप्रकाशित अवस्था मे है उसे भी प्रकाशित करवा कर जन साधारण के लिये सुलभ बना देने की हार्दिक इच्छा है। इस दिशा मे श्री० सी० एस० मल्लिनाथजी, भूतपूर्व सम्पादक अंग्रेजी जैनगजट द्वारा भी कार्य शुरु कर दिया है। इधर जैन समाज के प्रसिद्ध साहित्य सेवी बाबू जुगलकिशोरजी साहब मुख्तार देवबंद वालो से उनका भी वीर सेवा मन्दिर श्री महावीरजी मे लाने तथा वहीं बैठकर साहित्योद्धार का कार्य करने की बातचीत चल रही है। यदि वह बातचीत सफल हो गयी तो यह कार्य और भी तेजी से हो सकेगा—ऐसी आशा है।

साहित्योद्धार का कार्य कितना उपयोगी एवं आवश्यक है यह सब कुछ जानते हुये भी जैन समाज की इस सम्बन्ध मे घोर उदासीनता बड़े दुःख की बात है। जो समाज देव शास्त्र गुरु का बराबर हो ...

प्रस्तावना

प्राचीन काल मे मुद्रण यन्त्र (छापाखाना) के आविष्कार के पहिले मनुष्य ने पत्रों (ताम्रपत्र व ताडपत्र) तथा कागजों पर हाथ मे लिख लिख कर ही अपने साहित्य एव ज्ञान की वृद्धि की थी। उस समय भी भारत मे सैकडो एव हजारों विद्वानो ने जन्म लिया और अपनी लेखनी से भारतीय साहित्य के सभी अंगो को पूर्ण किया। हाथ से लिखने के उस युग मे शास्त्र भण्डारों एवं पुस्तकालयों की संख्या पर्याप्त थी। प्रत्येक नगर एव गाव मे मन्दिरों तथा अन्य धर्मस्थानों में शास्त्र भण्डार होते थे जिनका प्रत्येक मनुष्य पठन पाठन के लिये उपयोग कर सकता था।

जैनाचार्यो ने दान के चार भेदो मे शास्त्रदान को सम्मिलित किया और इसी के सहारे ज्ञान के विशिष्ट साधन पुस्तकों के लिखने लिखवाने को श्रावकों के दैनिक जीवन मे उतारा। जिस तरह मन्दिरो को बनवाने एवं प्रतिमाओ की प्रतिष्ठा करवाने मे पुण्यलाभ बतलाया उसी प्रकार शास्त्रों को लिखकर अथवा लिखवा कर शास्त्रभण्डारो को भेट करने मे भी कम पुण्यलाभ नहीं बतलाया। यही नहीं, किन्तु जितनी भक्ति व श्रद्धा उपास्य देवताओं मे रखने के लिये उपदेश दिया उतनी ही श्रद्धा व भक्ति शास्त्रों के प्रति भी प्रदर्शित करने को कहा। जैनाचार्यो के इस उच्चतम उपदेश के कारण ही आज हमे प्रत्येक मन्दिर मे शास्त्रभण्डार के दर्शन होते है अन्यथा हजारों वर्षो से राज्याश्रयहीन जैन धर्म का साहित्य आज इस विशाल मात्रा मे नजर नहीं आता। श्रद्धालु श्रावकों ने आचार्यो के इस उपदेश को अक्षरश पालन किया और अपने जीवन अथवा द्रव्य का बहुत भाग इस पुण्य कार्य मे भी व्यतीत किया।

शास्त्र लिखने और लिखवाने मे साधुओं और गृहस्थों का समान हाथ रहा है। साधुओं ने हजारों शास्त्र लिखकर जैन वाङ्मय की वृद्धि की तथा श्रावकों ने शास्त्रो की प्रतिलिपिया करवाकर उसका अत्यधिक प्रचार किया और साधुओं से अनुरोध करके नवीन साहित्य का निर्माण भी करवाया। जैनों का अधिकाश अपभ्रंश एव हिन्दी साहित्य का निर्माण इन्हीं श्रावकों के अनुरोध एव भक्ति का परिणाम है।

दो प्रकार की प्रशस्तिया इस सग्रह मे दी गई है। एक तो वे जो स्वय कवि अथवा ग्रन्थकर्त्ता द्वारा लिखी गयी है तथा दूसरी वे जो लिपिकारों ने लिखी है। पहिली का नाम ग्रन्थ प्रशस्ति तथा दूसरी का नाम लेखक प्रशस्ति है। ग्रन्थ प्रशस्ति मे कवि का परिचय, भट्टारक परम्परा का उल्लेख, तत्कालीन भट्टारक का नाम; देश व स्थान व समय का निर्देश तथा वहां के शासक का परिचय आदि दिये हुये होते है। लेखक प्रशस्ति मे सबसे पहिले समय, फिर ग्राम व नगर का नाम, वहा के शासक का नाम, उसके पश्चात भट्टारक परम्परा का उल्लेख तथा तत्कालीन भट्टारक का नाम, उसके पश्चात लिपि करवाने वाले का विस्तृत वंश परिचय, लिपि किस निमित्त से करायी गयी और अन्त मे लिपि का नाम दिया हुआ मिलता है। किसी प्रशस्ति मे निर्दिष्ट बातों से कम अथवा ज्यादा का भी वर्णन मिल जाता है।

ग्रन्थ कर्त्ता जैन साधु अथवा भट्टारक होते है तो वे अपना वंश परिचय नहीं लिखते किन्तु जिस आचार्य अथवा भट्टारक के शिष्य होते हैं उसका ही परिचय लिखते है। संस्कृत ग्रन्थों की अधिकाश ग्रन्थ प्रशस्तियां इसी

सकता है। अब तीनों भागों का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने उपस्थित किया जाता है—

संस्कृत विभाग—

इसमें ५९ ग्रन्थ-प्रशस्तियों एवं ५० लेखक-प्रशस्तियों का संग्रह है। इन प्रशस्तियों में जिनसेन, अमितिगति एवं आशाधर आदि प्राचीन आचार्यों को छोड कर शेष १५वीं शताब्दी से लेकर १८वीं शताब्दी तक के विद्वानों द्वारा निर्मित ग्रन्थों की प्रशस्तियों का ही संकलन है। इन विद्वानों में सकलकीर्ति, शुभचन्द्र, सकलभूषण, ज्ञानभूषण, धर्मकीर्ति, मेधावी, सोमकीर्ति, रायमल्ल, नेमिदत्त, जिनदास, ज्ञानकीर्ति आदि प्रमुख हैं। इन विद्वानों का बहुत कुछ परिचय इन प्रशस्तियों के आधार पर एकत्रित किया जा सकता है। अधिकांश विद्वानों ने साधु अवस्था धारण करने के पश्चात ग्रन्थ निर्माण किया था इसलिये अपनी गृहस्थ अवस्था का परिचय कुछ भी नहीं लिखा। गत ५०० वर्षों में इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की अत्यधिक सेवा की है। हिन्दी के लगातार जनप्रिय बनते रहने पर भी इन विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का निर्माण करके संस्कृत पठन पाठन के प्रति प्रेम ही प्रदर्शित नहीं किया किन्तु अपनी विद्वत्ता का भी परिचय दिया। इस युग में पुराण एवं कथा साहित्य ही अधिक लिखा गया। इससे ऐसा मालूम होता है कि उस युग में भी साधारण जनता सिद्धान्त ग्रन्थों के स्वाध्याय में उतनी दिलचस्पी नहीं लेती थी जितनी पुराण एवं कथा साहित्य के पठन पाठन में लेती थी। इसी से विद्वानों ने भी इस प्रकार साहित्य के द्वारा ही सिद्धान्त एवं पौराणिक ज्ञान को जीवित रखने का एकमात्र उपाय समझा।

प्राकृत अपभ्रंश- विभाग—

हिन्दी भाषा के पूर्व अपभ्रंश बोलचाल की भाषा होने के कारण जैनाचार्यों ने श्रावकों के अनुरोध से इस भाषा में अपरिमित साहित्य का निर्माण किया। इसलिये जितना अपभ्रंश साहित्य जैनाचार्यों द्वारा लिखा गया है उसका एकांश भी अन्य विद्वानों द्वारा लिखा हुआ नहीं मिलता। इस संग्रह में अपभ्रंश के ४९ ग्रन्थों की प्रशस्तियां दी गयी हैं। इन ग्रन्थ प्रशस्तियों में अपभ्रंश भाषा के प्रायः सभी विद्वानों का परिचय मिल सकता है। अपभ्रंश भाषा के इन आचार्यों में स्वयंभु, पुष्पदंत, पद्मकीर्ति, वीर, नयनन्दि, श्रीधर, श्रीचन्द, हरिषेण, अमरकीर्ति, यश कीर्ति, धनपाल, श्रुतकीर्ति, रइधू, माणिक्कराज आदि प्रमुख हैं। अपभ्रंश भाषा के साहित्य का अधिकांश निर्माण १३वीं शताब्दी तक ही हुआ है यद्यपि इनके पश्चात् भी रइधू, यश कीर्ति, धनपाल, श्रुत कीर्ति, और माणिक्कराज ने १६वी शताब्दी तक इस भाषा में खूब साहित्य लिखा है। भण्डार में अपभ्रंश ग्रन्थों की जितनी प्रतियां हैं वे प्राय सभी १७वीं शताब्दी तक की हैं। अधिकांश प्रतियां १६वीं और १७वीं शताब्दी की हैं। यह उस समय भी अपभ्रंश का जनप्रिय बना रहना सिद्ध करता है। ग्रन्थ प्रशस्तियां प्रायः सभी विषद एवं विस्तृत हैं। सभी कवियों ने अपने आश्रयदाता श्रावकों का विशद एवं सुन्दर परिचय लिखा है। अपभ्रंश भाषा के अधिकतर विद्वान गृहस्थ थे इसलिये उन्होंने अपने कुल एवं जाति का भी अच्छा परिचय लिखा है। आमेरशास्त्र भण्डार अपभ्रंश-साहित्य-संग्रह के लिये भारत में सबसे प्यारा है। इस भण्डार में किसी ग्रन्थ की तो दस दस प्रतियां तक मिलती हैं। कुछ ऐसी भी प्रतियां हैं जो भारत के अन्य

है। संग्रह मे अधिकाश प्रशस्तियां एव लेखक-प्रशस्तिया आचार्य कुन्दकुन्द, भट्टारक पद्मनन्दि तथा शुभचन्द्र आम्नाय मे होने वाले भट्टारकों द्वारा लिखी हुई मिलती है। यद्यपि इनमे भी आगे चलकर कितनी ही नवीन भट्टारक परम्पराओं का जन्म होता है. उदाहरणार्थ भट्टारक सकलकीर्त्ति ने आचार्य कुन्दकुन्द एवं भट्टारक पद्मनन्दि को ही आदि मान कर एक नवीन परम्परा को जन्म दिया तथा इसके पश्चात् होने वाले सकलकीर्त्ति के सभी पट्टधर शिष्यों ने उसी प्रकार भट्टारक परम्परा का उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त सेनगण, पुष्करगण एव विद्यागण मे होने वाले भट्टारकों का भी काफी अच्छा परिचय उपलब्ध होता है।

जैन समाज की प्रमुख जातियां—

उत्तर भारत मे खण्डेलवाल और अग्रवाल इन्हीं दो जातियों का जैन साहित्य की रचा एवं वृद्धि मे विशेष हाथ रहा है। राजस्थान मे प्रारम्भ से ही खण्डेलवाल जाति का प्रभुत्व रहा इसलिये यहां के साहित्य निर्माण एव प्रचार का अधिकाश श्रेय इसी जाति को है। अग्रवाल जाति का दिल्ली, आगरा, ग्वालियर आदि स्थानों मे व्यापक प्रभाव रहा है। अपभ्रंश साहित्य के निर्माण का अधिकांश श्रेय इसी जाति को दिया जा सकता है। अपभ्रंश ग्रन्थों के बहुत से लेखक भी इसी जाति में उत्पन्न हुये थे। प्राचीन काल मे अग्रवाल जाति के लोगों का सारे भारत पर प्रभाव था। इस जाति का एक हजार वर्ष का इतिहास तो प्रशस्तियों के आधार पर तैयार किया जा सकता है। श्रीधर ने १२वीं शताब्दी की रचना मे जिस नट्टल साह की प्रशसा की है उसने भी इस जाति को सुशोभित किया था। कवि के अनुसार नट्टल साह का प्रभाव कलिंग, द्राविड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पचाल, सिंधु, गौड आदि सभी देशों मे व्याप्त था। महा पंडित रइधू ने अपनी अधिकाश रचनायें इसी जाति मे उत्पन्न होने वाले श्रावकों के अनुरोध से की थीं। इन दोनो जातियों के अतिरिक्त बघेरवाल, श्रीमाल, पुरवाल, लमेचू जैसवाल आदि जातियों मे उत्पन्न श्रावकों द्वारा भेंट दिया हुआ साहित्य भी काफी सख्या मे मिलता है। इसी प्रकार इक्ष्वाकु, तोमर, चालुक्य, राठौर आदि क्षत्रिय वश के एव कायस्थ, माथुर आदि अन्य जातियों के महानुभावों ने भी साहित्य प्रचार में काफी सहयोग दिया है।

पाठकों की साधारण जानकारी के लिये प्रशस्ति-सग्रह मे आये हुये आचार्य-लेखकों एव कवियों का अति सक्षिप्त परिचय भी उपस्थित किया जारहा है—

संस्कृत भाषा के विद्वान्

१. भट्टाकलंकदेव—जैनधर्म के सर्वख्यात सैद्धान्तिक एवं दार्शनिक आचार्यो मे आप अग्रगण्य है। आपके जीवन के सम्बन्ध मे अनेक कहानियां प्रचलित हैं। बौद्ध दर्शन के उत्कर्ष काल मे आपने जैन दर्शन को जीवित ही नहीं रखा किन्तु उसे सजेग एव उत्कर्षमय बना दिया। आपने सस्कृत में अनेक ग्रन्थों की रचना की है। उनकी राजवार्तिक, अष्टशती, न्यायविनिश्चयालकार आदि प्रसिद्ध रचनायें मिलती हैं।

प्रतिष्ठाता पद्मप्रभसूरि थे। टीका का नाम सुबोधिका टीका है।

९. चन्द्रकीर्ति—काष्ठासंघ में होने वाले भट्टारक रामसेन की परम्परा में ये श्री विद्याभूषण के शिष्य थे। इन्होंने पद्मपुराण की रचना इन्हीं के पास रह कर की थी। चन्द्रकीर्ति मुनि थे।

१०. चारित्रसुन्दरगणि—कवि ने सर्वप्रथम विजयेन्द्र सूरि को स्मरण किया है इनके पश्चात् होने वाले शिष्यों का उल्लेख करते हुये इन्होंने अपने को रत्नसिंह सूरि का शिष्य लिखा है। महीपाल चरित्र को कवि ने १५२५ के आस पास समाप्त किया था। यह काव्य जामनगर से प्रकाशित हो चुका है।

११. जिनसेनाचार्य—हरिवंश पुराण के कर्त्ता आचार्य जिनसेन पुन्नाट संघ के आचार्य थे। इनके गुरु का नाम कीर्तिषेण एवं दादा गुरु का नाम जिनसेन था। इन्होंने हरिवंश पुराण को वर्द्धमानपुर में शक संवत् ७०५ में समाप्त किया था। हरिवंश पुराण की गणना जैन पुराणों में सर्वोपरि है। इसका ग्रन्थ परिमाण बारह हजार श्लोक प्रमाण है। पूरा पुराण ६६ सर्गों में समाप्त होता है। जिनसेनाचार्य ने अपनी रचना के ६६वें सर्ग में भगवान महावीर से लेकर लोहाचार्य तक की आचार्य परम्परा का उल्लेख किया है।

१२. ज्ञानकीर्ति—यशोधर चरित्र के रचयिता श्री ज्ञानकीर्त्ति यति वादिभूषण के शिष्य थे। इन्होंने उक्त काव्य की रचना श्री नानू के आग्रह से की थी। नानू उस समय बंगाल के गवर्नर (राजपाल) महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य थे। जब प्रधान अमात्य सम्मेद शिखर की यात्रा पर गये तो वहां इन्होंने जीर्णोद्धार भी कराया था। कवि स्वयं बंगाल प्रान्त के अकब्बरपुर नामक नगर के रहने वाले थे। इन्होंने ग्रन्थ को संवत् १६५९ में समाप्त करके प्रधान मंत्री को भेंट किया था।

१३. ज्ञानभूषण—भट्टारक सकलकीर्ति के प्रशिष्य एवं भुवनकीर्त्ति के शिष्य थे। ज्ञानभूषण संस्कृत, हिन्दी और गुजराती के अच्छे विद्वान थे। इनका मूल निवास स्थान गुजरात था। इन्होंने भट्टारक बनने के पश्चात् अहीर, बागड, तौलव, तैलंग द्राविड, एवं महाराष्ट्र आदि दक्षिण के प्रान्तों और गांवों में ही विहार नहीं किया किन्तु उत्तरी भारत में भी घूम २ कर जैनधर्म का प्रचार किया। इनके द्वारा रचित तत्त्वज्ञानतरंगिणी सुन्दर एवं सरस रचना है। आपने सिद्धान्तसारभाष्य एवं कर्मकाण्ड टीका भी लिखी है। हिन्दी भाषा में भी आपकी कई रचनायें मिलती हैं इनमें आदीश्वरफाग उल्लेखनीय है। आपका समय १५२५ से १५७५ तक अनुमानित किया गया है। तत्त्वज्ञान तरंगिणी का रचना काल संवत् १५६० है।

१४. धर्मकीर्ति—इन्होंने पद्मपुराण की रचना सरोजपुरी (मालवा) में की थी। भट्टारक ललितकीर्ति इनके गुरु थे। धर्मकीर्ति का नामोल्लेख अनेक प्रशस्तियों में हुआ है। इन्होंने उक्त ग्रन्थ को संवत् १६६९ में समाप्त किया था। संवत् १६७० की प्रति में लिपिकार ने इनको भट्टारक नाम से सम्बोधित किया है इससे यह ज्ञात होता है कि पद्मपुराण की रचना के पश्चात् ये भट्टारक बने थे।

१५. आचार्य नरेन्द्रसेन—इन्होंने सिद्धान्तसारसंग्रह की रचना की है। आप वीरसेन के प्रशिष्य एवं गुणसेन के शिष्य थे।

काव्य भी है जिसकी पद्य संख्या १०१ है । इन्होंने अपने को प्रभाचन्द्र का शिष्य लिखा है ।

२३. **विवेकनन्दि**— इनका जन्म बघेरवाल जाति मे हुआ था । इनके नाना श्री नारायण तथा माना निजोणी थीं । त्रिभंगीसार की टीका पहिले श्रुतमुनि ने कर्णाटक भाषा मे लिखी उसके पश्चात् सोमदेव ने उसका लाटी भाषा में परिवर्तन किया उसी के आधार पर इन्होंने संस्कृत मे टीका का निर्माण किया था ।

२४. **ब्रह्म कामराज**— इनके गुरु का नाम पद्मनन्दि था और इन्हीं के उपदेश से इन्होंने जयकुमार पुराण की रचना की । कवि ने सकलकीर्ति की भट्टारक परम्परा मे होने वाले भट्टारकों की अच्छी नामावली दी है । प्रशस्ति मे इन्होंने अपने को भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति का भी शिष्य लिखा है । पण्डित जीवराज ने उक्त ग्रन्थ को कवि से अनुरोध करके लिखवाया और फिर मन्दिर मे स्थापित किया ।

२५. **ब्रह्मजिनदास**— भट्टारक सकलकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे । अपने गुरु के समान इन्होंने भी हिन्दी संस्कृत, गुजराती आदि भाषाओं में रचनाये लिखी हैं । संस्कृत मे इन्होंने १२ से अधिक ग्रन्थ रचना की है जिनमे हरिवंश पुराण, पद्मपुराण, जम्बूस्वामी चरित्र, हनुमच्चरित्र, व्रतकथा कोष आदि उल्लेखनीय हैं । हिन्दी मे आदिनाथपुराण, श्रेणिक चरित्र, सम्यक्त्वरास, यशोधररास, धनपालरास, व्रतकथाकोष आदि रचनाये उल्लेखनीय हैं । इन पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव झलकता है ।

२६. **ब्रह्म नेमिदत्त**— ये अग्रवाल जाति के थे । गोयल उनका गोत्र था । मालव देश मे आशानगर के रहने वाले थे । भट्टारक मल्लिभूषण इनके गुरु थे । संवत् १५८५ मे इन्होंने श्रीपाल चरित्र की श्री शांतिदास के अनुरोध से रचना की थी । इसके अतिरिक्त सुदर्शनचरित्र एवं नेमिनाथपुराण आदि ग्रंथों की भी आपने रचना की है । सुदर्शनचरित्र मे इन्होंने ग्रंथ समाप्ति के समय 'मल्लिभूषण शिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि' यह विशेषण नहीं लगाया है और शेष दो में यह विशेषण मिलता है इससे यह मालूम पड़ता है कि सुदर्शनचरित्र इनकी सबसे पहिले की रचना थी ।

२७. **ब्रह्मरायमल्ल**— हुंवड जाति में इनका जन्म हुआ था । इनके पिता का नाम महीय एवं माता का नाम चंपा था । समुद्र तट पर स्थित ग्रीवापुर में इन्होंने भक्तामर स्तोत्र की वृत्ति को समाप्त किया था । संवत् १६६७ मे रचित इस रचना के अतिरिक्त लेखक की अन्य रचना उपलब्ध नहीं है ।

२८. **ब्रह्मजित**— सुरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य एवं विद्यानन्दि के शिष्य थे । आपका जन्म गोलश्रृंगार जाति मे हुआ था । इनके पिता का नाम वीरसिंह तथा माता का नाम पीथा था । हनुमच्चरित्र इनकी उल्लेखनीय रचना है ।

२९. **भट्टारक सोमसेन**— ये सेनगण के आचार्य गुणभद्र के शिष्य थे । इन्होंने पद्मपुराण की रचना वैराठ (जयपुर) प्रान्त के जितुरनगर में की थी । उक्त ग्रन्थ को इन्होंने शक संवत् १६५६ मे निर्माण किया ऐसा वर्णन मिलता है । लेकिन इसी की एक लेखक प्रशस्ति मे शक संवत् १६१६ दे रखा है ।

३०. **सकलकीर्ति**— १५ वीं शताब्दी के बड़े भारी विद्वान् एवं साहित्य सेवी थे । इन्होंने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं का गहरा अध्ययन किया था । इन्होंने अपने प्यारको भट्टारक

मारुतदेव तथा माता का नाम पद्मिनि था। इनका सबसे छोटा पुत्र त्रिभुवन स्वयम्भु था। स्वयम्भु ने गृहस्थावस्था में ही साहित्य निर्माण किया। इन्होंने तथा त्रिभुवन स्वयम्भु ने मिलकर तीन ग्रन्थों की रचना की – पउमचरिय, रिट्ठणेमिचरिउ या हरिवंशपुराण, पंचमिचरिउ। तीसरा ग्रन्थ अभी तक उपलब्ध नहीं हो सका है। अपभ्रंश भाषा के उपलब्ध साहित्य में स्वयम्भु की रचनायें सबसे प्राचीन हैं। रचनायें साहित्य की सभी दृष्टियों से परिपूर्ण मानी जाती हैं। ये कवि रविषेणाचार्य के पीछे हुए हैं। विद्वानों ने इनको ९वीं शताब्दी का कवि माना है।

३८. पद्मकीर्ति --माधवसेन के प्रशिष्य एवं जिनसेन के शिष्य थे। ये मुनि थे। संवत् ९९९ में इन्होंने पार्श्वनाथ-चरित्र की रचना समाप्त की थी। अपभ्रंश भाषा का यह बहुत पुराना काव्य है। उसमें १८ संधियां हैं। संवत् १४६६ की लिखित उसकी एक प्रति भण्डार में है।

३९. पुष्पदंत---अपभ्रंश भाषा के सर्व श्रेष्ठ महाकवि माने जाते हैं। ये काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम केशवभट्ट और माता का नाम मुग्धा देवी था। राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेट में रहकर इन्होंने साहित्य निर्माण का पवित्र कार्य किया था। कवि के आश्रयदाता महामात्य भरत और नन्न थे। ये दोनों पिता पुत्र थे और महाराजा कृष्णराज (तृतीय) के महामात्य थे। अभिमानमेरु, अभिमानचिन्ह, काव्यरत्नाकर, कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय आदि इनकी पदवियाँ थीं। महाकवि की तीन रचनायें मिलती हैं। महापुराण के दो खंड हैं एक आदिपुराण और दूसरा उत्तरपुराण। नागकुमार चरित्र एक खण्ड काव्य है और यशोधर चरित्र भी इसी तरह एक खन्ड काव्य है। विद्वानों ने इनको ११वीं शताब्दी का विद्वान् माना है।

४०. हरिषेण---इन्होंने अमितिगति के २२ वर्ष पहिले संवत् १०४४ में धर्मपरीक्षा को समाप्त किया था। ये मेवाड़ देश में श्रीउजपुर ग्राम के रहने वाले थे। इनके पितामह का नाम कुसलु, पिता का नाम गोवर्द्धन एवं माता का नाम धनवती था। सिद्धसेन इनके गुरु थे। इन्होंने मंगलाचरण में चतुर्मुख, स्वयम्भु, तथा पुष्पदंत का भी स्मरण किया है। धर्मपरीक्षा में कुल ११ संधियां हैं तथा यह अपभ्रंश भाषा की उत्तम रचना है।

४१ महाकवि वीर---कवि वीर के पिता गुडखेड देश के निवासी थे। इनका वंश अथवा गोत्र लाड बागड था। यह काष्ठा संघ की एक शाखा है। इनके पिता का नाम देवदत्त था। कविवर का बहुत समय राज्यकार्य, धर्म और अर्थ की चर्चा में समाप्त होता था। इसलिये कवि को जम्बूस्वामी चरित्र लिखने में एक वर्ष लगा था। कवि ने इसको संवत् १०७६ माघ शुक्ला दशमी के दिन समाप्त किया था। कवि भक्ति रस के प्रेमी भी थे। इन्होंने मेघवन में पत्थर का एक विशाल जिनमन्दिर बनवाया था। इनके ४ स्त्रियां जिनवती, पोमावती, लीलावती, और जयादेवी और नेमिचन्द्र नामका एक पुत्र भी था।

४२ श्रीचन्द---ये १२वीं शताब्दी के कवि थे। इन्होंने रत्नकरण्ड को संवत् ११२० में समाप्त किया था। ये मुनी थे और इसी अवस्था में इन्होंने अपने ग्रन्थ को समाप्त किया था। श्रीपालपुर के सामुद्र गर्ग

पाण्डवपुराण को इन्होंने संवत् ११७६ कार्त्तिक शुक्ला अष्टमी के दिन समाप्त किया था। इस काव्य को अग्रवाल वंश मे उत्पन्न साधु पील्हा के सुपुत्र श्री हेमराज ने नवगावपुर में लिखवाया था। चन्द्रप्रभचरित्र गुज्जरदेश के निवासी सिद्धपाल के अनुरोध से लिखा गया था। ये गुणकीर्त्ति के शिष्य थे। चन्द्रप्रभचरित्र मे इन्होंने 'महाकवि' विशेषण से अपने आपको अलकृत किया है।

४८—पं० लाखू — इन्होंने सवत १२७५ में जिनदत्त चरित्र को समाप्त किया था। ये जैसवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम साहु साहुल था। इनका दूसरा नाम लक्खण भी था। आपका सन्मान करने वालों मे श्रीधर श्रावक उल्लेखनीय है और इन्हीं के अनुरोध के कारण पं० लाखू ने जिनदत्त चरित्र की रचना की थी। श्रीधर उस समय काफी प्रसिद्ध थे।

४९—गणिदेवसेन — अपभ्रंश भाषा मे इन्होंने सुलोचना चरित्र लिखा है। ये विमलसेन के शिष्य थे। सुलोचना चरित्र अपभ्रंश की प्राचीन रचना है।

५०—जयमित्रहल — इन्होंने अपभ्रंश मे वर्द्धमान चरित्र लिखा है। इनके पिता का नाम सहदेव था। कवि ने अल्लाउद्दीन खिलजी के शासन का उल्लेख किया है। इस आधार पर कवि का समय १३ वीं शताब्दी होता है। इनके गुरु मुनि पद्मनन्दि थे।

५१—धर्मदासगणि — प्राकृत भाषा मे इनके द्वारा रचित उपदेशमाला श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों मे ही बहुत प्रिय रही है। उक्त रचना पर २२ से अधिक टीकायें मिलती है इसमे ही कृति की प्रियता जानी जा सकती है। धर्मदासगणि का समय १० वीं शताब्दी या उससे भी पूर्व का माना जाता है।

५२—नरसेन — वर्द्धमान कथा और श्रीपालचरित्र इन दो काव्यों की इनने रचना की है। कवि ने रचनाओं मे नाम के अतिरिक्त अपना अधिक परिचय नहीं दिया। नरसेन स्वयं पंडित थे और गृहस्थावस्था मे ही रहकर काव्य रचना की थी। ये १४ वीं अथवा १५ वीं शताब्दी या इससे पूर्व के कवि होंगे, क्योंकि सवत् मे १५१२ मे लिखी हुई श्रीपाल चरित्र की एक प्रति मिलती है।

५३—महाकवि सिंह या सिद्ध— इनके पिता का नाम रल्हण था। कवि गुज्जर कुल के थे। प्रद्युम्न चरित्र को इन्होंने अपनी माता के अनुरोध से बनाया था। कवि अमृतचन्द्र (अभियचन्द) के शिष्य थे।

५४—महाकवि धनपाल— ये १५वीं शताब्दी के कवि थे। इनके द्वारा लिखित बाहुबलिचरित्र तथा भविष्यदत्तचरित्र १५वीं शताब्दी की रचनाये है। महाकवि ने बाहुबलिचरित्र काव्य के प्रारम्भ तथा अन्त मे बहुत सुन्दर प्रशस्ति लिखी है। ये गुर्जर देश के रहने वाले थे। पल्हणपुर इनका निवास स्थान था। उस समय वहां वीसलदेव राजा राज्य करते थे। इनके पिता का नाम सुहडदेव तथा माता का नाम सुहडा था। ये पोरवाड जाति मे उत्पन्न हुये थे। इन्होंने दिल्ली को योगिनीपुर लिखा है।

इन्होंने मृगांकलेखा चरित्र लिखा है। जिसको संवत् १७०० मे समाप्त किया था। यह अपभ्रंश भाषा का अन्तिम काव्य है। ये हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे। हिन्दी में इनकी २० से अधिक रचनाये मिलती है।

हिन्दी साहित्य के कवि एव लेखक

६०—**किशनसिंह** — कवि रामपुर के निवासी सगही कल्याण के पौत्र तथा आनन्दसिंह के पुत्र थे। ये खण्डेलवाल जाति मे उत्पन्न हुये थे तथा पाटनी इनका गोत्र था। कवि रामपुर को छोड कर सांगानेर आकर रहने लगे थे और यहीं पर त्रेपनक्रियाकोश को संवत १७८४ मे समाप्त किया था। इस रचना के अतिरिक्त भद्रबाहुचरित्र एव रात्रिभोजनकथा भी इन्हीं के द्वारा लिखी हुई है।

६१—**कुमुदचन्द्र** — ये भट्टारक रत्नकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने भी त्रेपनक्रियाविनती, ऋषभविवाहलो, भरतबाहुबलिछन्द आदि रचनायें लिखी हैं। भरतबाहुबलिछन्द कवि की सुन्दर रचना है इसको इन्होंने संवत् १६०७ मे समाप्त किया था।

६२—**कुसुललाभगणि** — सवत १६१६ मे जैसलमेर मे इन्होंने 'माधवानलचौपाई' को पूर्ण की थी। ये श्वेताम्बर सम्प्रदाय के साधु थे।

६३—**खडगसेन**— ये लाभपुर (लाहोर) के निवासी थे। लाहोर मे उस समय [illegible] विद्वान् रहते थे। इन्हीं की संगति से इनको लिखने की इच्छा उत्पन्न हुई। इनके पिता का नाम [illegible] इनके पूर्वज पहले नारनोल मे रहा करते थे। यहीं से लाहौर जाकर रहने लगे थे। नारनोल मे [illegible] बैरागी के पास [illegible] प्राप्त कर तथा अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके त्रिलोकदर्पण को संवत् [illegible] मे सम्पूर्ण किया था।

६४—**खुशालचन्द काला**— भट्टारक लक्ष्मीदास के पास इन्होंने [illegible] किया था। इनका [illegible] निवास स्थान देहली था। लेकिन सांगानेर भी कभी आकर रहा करते थे [illegible] पिता का नाम [illegible] माता का नाम अभिधा था। इन्होंने हरिवंशपुराण (१७८०), [illegible] जम्बूकुमारचरित्र [illegible] व्रतकथाकोश आदि ग्रन्थों की रचना की है।

६५—**चतुरुमल**— ये ग्वालियर के निवासी थे [illegible] मे नेमीश्वर गीत' को समाप्त किया था। इनके [illegible] नेमीश्वर गीत एक साधारण रचना है।

६६. **छीतर ठोलिया**— ये मोजमाबाद के [illegible] इन्होंने [illegible] समाप्त की थी। उस समय जयपुर के [illegible]

६७. **जयसागर**—ये [illegible]

रचनायें लिखी है ।

७६—देवेन्द्रकीर्त्ति— ये भट्टारक सकलकीर्त्ति की शिष्य परम्परा में होने वाले भट्टारक पद्मनन्दि के शिष्य थे । इन्होंने सूरत निवासी संघपति श्री खेमजी के अनुरोध से महेश्वरनगर मे प्रद्युम्नप्रबन्ध को संवत् १७२२ में समाप्त किया था । प्रबन्ध की भाषा साधारण है ।

७७—दिलाराम—इनके पूर्वज रूडेले के रहने वाले थे । वहां से बूंदी नरेश के अनुरोध से बूंदी आकर रहने लगे थे । इनका गोत्र पाटणी था । कवि ने बूंदी नगर तथा वहां के राजवंश की खूब प्रशंसा लिखी है । इसके अतिरिक्त अपने वंश का भी अच्छा परिचय लिखा है । इन्होंने दिलारामविलास और आत्म-द्वादशी ये दो रचनाये लिखी है । कवि ने दिलारामविलास को संवत् १७६८ मे समाप्त किया था । इनकी वर्णन शैली अच्छी है ।

७८—धर्मदास— कवि बारहसैनी (द्वादशश्रेणी) जाति मे उत्पन्न हुये थे । इनके पूर्वज अपने प्रान्त मे बहुत ही प्रतिष्ठित थे । इनके पिता का नाम राम और माता का नाम शिरी था । कवि ने धर्मोपदेशश्रावकाचार को १५७८ मे समाप्त किया था । रचना की भाषा बड़ी सुन्दर है । इसमे जैन धर्म के मुख्य २ सिद्धान्तों को बड़ी ही अच्छी तरह से समझाया गया है ।

७८. नथमल बिलाला— ये मूल निवासी आगरे के थे किन्तु बाद मे भरतपुर मे और अन्त में हीरापुर आकर रहने लगे थे । इनके पिता के नाम शोभाचन्द था । इनने सिद्धान्तसारदीपक की रचना भरतपुर मे गुलराम की सहायता से की थी और भक्तामर की भाषा हीरापुर मे पं० लालचन्द जी की सहायता से की थी । इनके अतिरिक्त जिनगुणविलास, नागकुमारचरित्र, जीवधरचरित्र, जम्बूस्वामीचरित्र आदि भी आपकी ही कृतियां हैं ।

७९. नरेन्द्रकीर्त्ति— भट्टारक शुभचन्द्र के प्रशिष्य एवं सुमतिकीर्ति के शिष्य थे । इन्होंने नेमीश्वर चन्द्रायण लिखा है जो एक साधारण कृति है ।

८०. नेमिचन्द— ये भट्टारक जगत्कीर्त्ति के शिष्य थे । आमेर इनका निवास स्थान था । संवत १७७३ मे इन्होंने हरिवंशपुराण की रचना की थी । कवि ने आमेर का बहुत सुन्दर वर्णन किया है । कवि के छोटे भाई का नाम झगड़ू था । इनका गोत्र सेठी था । कवि के रूपचन्द, डूगरसी, लक्ष्मीदास, टोडराज आदि शिष्य थे ।

८१. प्रभाचन्द्र मुनि— इन्होंने अपने को मुनि धर्मचन्द्र का शिष्य लिखा है । प्रभाचन्द्र ने तत्त्वार्थसूत्र की हिन्दी टीका लिखी है । इनके समय के सम्बन्ध मे विशेष ज्ञान नहीं हो सका है । तत्त्वार्थसूत्र भाषा की एक प्रति संवत् १८०२ की लिखी हुई शास्त्र भण्डार में है ।

कवि ने हीरामणि के उपदेश से धर्मपरीक्षा की रचना की थी। आगरा निवासी सालिवाहण, हिसार के जगदत्तमिश्र तथा उसी नगर में रहने वाले गंगराज के अनुरोध से धर्म परीक्षा की रचना की गयी थी।

९०. राजमल्ल — उपलब्ध हिन्दी जैन गद्य के सबसे प्राचीन लेखक हैं। इन्होंने संवत १६०० के आस पास समयसार की हिन्दी टीका लिखी थी। समयसार के पठन पाठन को इन्होंने ही टीका लिख कर सुगम बनाया था। महाकवि बनारसीदास ने भी इन्हीं की टीका के आधार पर समयसार नाटक की रचना की थी।

९१. रूपचंद — कविवर रूपचंद पाडे रुपचन्दजी से भिन्न हैं। इनको महाकवि बनारसीदास ने गुरु के समान माना है। आप एक उच्च कोटि के कवि थे। कविता की भाषा और शैली बहुत ही उत्कृष्ट है। कवि की अभी तक परमार्थ दोहा शतक, परमार्थगीत, पदसंग्रह, गीतपरमार्थी, पंचमंगल एवं नेमिनाथरासो आदि रचनायें उपलब्ध हुई हैं। आप भी आगरे के ही रहने वाले थे।

९२. लब्धरुचि—ये विद्यारुचि के शिष्य थे। इन्होंने चन्दनृपरास नामक एक रचना लिखी है जिसको इन्होंने संवत् १७१३ मे समाप्त की थी। इनकी भाषा पर गुजराती का अत्यधिक प्रभाव है। इन्होंने प्रशस्ति मे भट्टारक परम्परा एवं अपनी गुरु परम्परा का अच्छा उल्लेख किया है।

९३. लोहट—इनका जन्म बघेरवाल वंश में हुआ था। इनके पिता का नाम धर्मा था। ये तीन भाई थे। हींग और सुन्दर दोनों इनसे बडे थे। पहिले ये सांभर रहते थे और फिर बूंदी आकर रहने लगे थे। कवि ने बूंदी का सुन्दर वर्णन किया है। बूंदी के राजवंश का भी वर्णन पठनीय है। कवि के समय में राव भावसिंहजी का राज्य था। संस्कृत भाषा मे श्री पद्मनाभ द्वारा रचित यशोधरचरित का हिन्दी पद्य अनुवाद इन्होंने सवत् १७२१ मे समाप्त किया था।

९४. लक्ष्मीदास— पंडित लक्ष्मीदास भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। ये सांगानेर के रहने वाले थे। इस समय महाराजा जयसिंह जी राज्य करते थे। पण्डितजी ने यशोधरचरित्र की रचना भट्टारक सकलकीर्ति और पद्मनाभ की रचना के आधार पर की है। यशोधरचरित्र सवत् १७८१ की रचना है। कविता साधारण है।

९५. ब्रह्म रायमल—ये जयपुर राज्य के निवासी थे इन्होंने अपनी रचनाओं को भिन्न २ स्थानों पर लिखी थी। इनमें हरसोर गढ, रणथम्भोर एवं सांगानेर प्रसिद्ध है। रायमल्ल अन्त मे आकर सांगानेर ही रहने लगे थे। ये मुनि अनन्तकीर्ति के शिष्य थे। इन्होंने हिन्दी में अनेक रचनायें लिखी हैं इनमें नेमीश्वर रास, हनुमंतकथा, प्रद्युम्नचरित्र, सुदर्शनरास, श्रीपालरास भविष्यदत्त कथा आदि उल्लेखनीय हैं। प्रचार की ओर प्रमुख ध्यान होने से इन्होंने सरल एवं साधारण भाषा में साहित्य लिखा है।

९६. ब्रह्म गुलाल— ये ग्वालियर के रहने वाले थे। भट्टारक जगभूषण के शिष्य थे। इन्हीं की अधीनता मे रह कर कविता किया करते थे। त्रेपनक्रिया को इन्होंने संवत् १६५४ मे समाप्त की थी। ग्वालियर पर उस समय सलीम (जहांगीर) का राज्य था।

शुद्धाशुद्धिपत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ तथा पंक्ति
ससारभीमुखे	संसारभीमुपे	१ × ७
भयेंडु	भयेंदु	२ × ८
प्राकृत	अपभ्रंश	२ × १३
प्रार्थना ते	प्रार्थनातो	३ × ३०
प्रणित	प्रीणित	३ × ४
लंचद्र च:	चचद्र च.	५ × १५
षव्याधिक	षष्ट्यधिका:	८ × ७
वह्नयग्नि	वहन्यग्नि	८ × २५
राद्रस्यो तत्पुराणं	राद्रस्ये तत्पुराण	१३ × ६
मेंद	मेंद	१३ × ६
त्रिभगसार	त्रिभगीसार	१८ × ३
सयोरजनः	सपौरजनः	२१ × २
घर्णतां	वर्णना	२६ × २
सव्वंकर्मारिसंतान	सवकर्मारिसतानं	४१ × २
प्रख्यामननेपा	प्रख्यातमनीषा	४२ × २०
वीरनाथं	वीरनाथ	५६ × २१
अकच्द्ररपुर	अकव्वरपुर	५६ × २१
भव्यौघनिस्तोरकः	भव्यौघनिस्तारकः	६० × २
घातद्रामा	वा तद्रामा	६१ × २
जैसवालान्यये	जैसवालान्वे	६५ × १७
अभपद	अभयद	६७ × १
वृषजित	वृष अजित	६९ × २०
तजीय	तजीय	७० × ४
भमिणि	भामिणि	८१ × ३
चवते	मचवते	६१ × २
गुण दाण इट्ट	गुणिदाणइट्ट	१०७ × ७
गुरयण	गुरयणगुत्त	१०७ × २०
पावसु	परवसु	११२ × १२

विषय—अनुक्रम

आमेर शास्त्र भंडार, जयपुर के

ग्रन्थों का

प्रशस्ति-संग्रह



१. आदिपुराण।

रचयिता श्री जिनसेनाचार्य तथा गुणभद्राचार्य। भाषा संस्कृत। साइज १६×४॥ इञ्च। पत्र संख्या ३६६. लिपि संवत् १८०३ माघ सुदी १५. प्रति मे ४२वें सर्ग तक आचार्य जिनसेन का नाम दे रखा है तथा अन्तिम पांच सर्गो मे आचार्य गुणभद्र का नाम दे रखा है। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट है।

मंगलाचरण—

श्रीमते सकलज्ञानसाम्राज्यपदमीयुषे।
धर्म्मचक्रभृते भर्त्रे नमः संसारभीमुषे॥१॥

अन्तिम पाठ—

यो नाभेस्तनयोपि विश्वविदुषां पूज्यः स्वयंभूरिति,
त्यक्ताशेषपरिग्रहोपि सुधियां स्वामीति यः शब्द्यते।
मध्यस्थोऽपि विनेयसत्त्वसमितेरेवोपकारी मतो,
निर्द्वन्द्वोपिबुधैरुपास्यचरणो यः सोऽस्तु वः शांतये॥

इत्यार्षे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीते त्रिषष्टिलक्षणमहापुराणसंग्रहे प्रथमतीर्थंकरचक्रधरपुराण-परिसमाप्तं सप्तचत्वारिंशत्तमपर्व समाप्तः।

संवत् १८०३ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्या-न्वये भट्टारकश्रीविश्वभूषण तच्छिष्य ब्रह्मश्रीजिनसागरजी तच्छिष्य ब्रह्म श्रीहर्षसागरजी तत्गुरुभ्राता पंडित हरिकृष्णजी तच्छिष्य पं० जीवनरामजी तत्पुत्र प० हेमराजस्येदं पुस्तकं पठनार्थं पंडित हरिकृष्णेन दत्तं।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ५२७. साइज १३॥×५ इञ्च।

संवत् १५८७ वर्षे माघ सुदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये कुं-दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा

पंक्ति प्रति पृष्ठ १० तथा अक्षर प्रति पंक्ति ३६–४२. अपभ्रंश भाषा के ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशरत्नमाला के आधार पर उक्त ग्रंथ की रचना हुई है। प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है। रचना संवत् १६२७, लिपि संवत् १८२६.

मंगलाचरण—

वंदे श्रीवृषभं देवं दिव्यलक्षणलक्षितं।
प्रणितप्राणिसद्वर्गं युगादिपुरुषोत्तमं ॥१॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

श्रीमूलसंघतिलके वरनन्दिगच्छे
गच्छे सरस्वतिसुनाम्नि जगत्प्रसिद्धे ।
श्रीकुंदकुंदगुरुपट्टपरंपर या
श्रीपद्मनन्दिमुनियः समभूज्जिताक्षः ॥१॥
तत्पट्टधारी जनचित्तहारी पुराणमुख्योत्तमशास्त्रकारी।
भट्टारकः श्रीसकलादिकीर्त्तिः प्रसिद्धनामा जनिपुण्यमूर्त्तिः ॥२॥
भुवनकीर्त्तिगुरुस्ततउर्ज्जितो, भुवनभासनशासनमंडनः।
अजनि तीव्रतपश्चरणक्षमो, विविधधर्म्मसमृद्धिसुदेशकः ॥३॥
श्रीज्ञानभूषापरिभूषिताङ्गः, प्रसिद्धपांडित्यकलानिधानः ।
श्रीज्ञानभूषाख्यगुरुस्तदीयपट्टोदयाद्राविव भानुरासीत् ॥४॥
भट्टारकश्रीविजयादिकीर्त्तिस्तदीयपट्टे वरलब्धकीर्त्तिः।
महामना मोक्षसुखाभिलाषी बभूव जैनावनियान्र्यपादः ॥५॥
भट्टारकश्रीशुभचंद्रसूरिस्तत्पट्टपंकेरुहतिग्मरश्मिः ।
त्रैविद्यविद्यः सकलप्रसिद्धो वादीभसिंहो जयताद्धरित्र्या ॥६॥
पट्टे तस्य प्रीणितप्राणिवर्गः
शांतोदांतः शीलशालीसुधीमान्।
जीयात्सूरिः श्री सुमत्यादिकीर्त्तिः
गच्छाधीशः सत्प्रशांतिकलावान् ॥७॥
तस्याभूच्च गुरुभ्राता नाम्ना सकलभूषणः।
सूरिर्जिनमते लीनमनाः संतोषपोषकः ॥८॥
तेनोपदेशसद्रत्नमालाख्यो मनोहरः।
कृतः कृतिजनानंदनिमित्तं ग्रंथ एषकः ॥९॥
श्रीनेमिचन्द्राचार्यादियतीनामाग्रहात्कृतः।
सत्कर्ममाना येनाहि प्रार्थना ते सर्वेपकः ॥१०॥

गोत्रे साह श्री माधो, साह श्री टोडर. सोनी गोत्रे साह श्री जंसा. अजमेरा गोत्रे साह श्री पूरा एते सर्वा. भट्टारक श्री जगत्कीर्त्तिदेवातच्छात्र ब्रह्मचारि नाथूराम संज्ञाय तद्भ्रातानुज सुधी मगह सहाय एताभ्यामिदं पुस्तकं नामषट्कर्मोपदेशरत्नमालाप्रथं सर्वे श्रावकाः लिखाप्य ब्रह्म श्री नाथूरामाय घटापितं ।

५. करकण्डुचरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री शुभचन्द्र तथा मुनि श्री सकल भूषण । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०६ । साइज १०।।×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर । रचना सम्वत् १६११. लिपि सम्वत् १८६१ प्रारम्भ के ४ पृष्ठ नहीं है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघे जनि पद्मनंदी तत्पट्टधारी सकलादिकीर्ति·
कीर्ति कृता येन च समस्यलोके शास्त्रार्थवक्री संकला पवित्र ॥ १ ॥
भुवनकीर्तिरभूद्भवनाधिपो भुवनभासनभूरिमतिस्तुतः ।
दुरतपश्चरणोद्यतमानसो भवनयाहि खगेट् क्षितिभूत्तमः ॥ २ ॥
× × × × × × × ×
पट्टे तस्य गुणाम्बुधिव्रतधरो धीमान् गरीयान्वरः
श्रीमच्छ्री शुभचन्द्र एष विदितो वादीभसिंहो महान् ।
तेनेदं चरितं विचारुरुचिरं चाकारि चंचद्रुवः
श्रीमच्छ्री करकंडुनामनृपतेः नीत्यानरस्तंद्विपं ॥ ३ ॥
चन्द्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभ चरितं शुभचन्द्रः ।
मन्मथस्य चरितं च सुचारं जीवकस्य चरितं चकार ॥ ४ ॥
चंदनायाः कथा येन दृष्ट्वा नान्दीश्वरी तथा ।
आशाधरकृतान्चोया धृत्तिः सद्वृत्तशालिनी ॥ ५ ॥
त्रिशच्चतुर्विंशतिपूजनंयः वृद्धं च सिद्धार्चनमाविधत्त ।
सारस्वतीयार्चनमत्रविश्वे चिंतामणीयार्च्चनमुच्चरिष्णु ॥ ६ ॥
श्रीपद्मनंदाह् विधिवंधुरसिद्धसेनां
नानागुणौघगणनाथसमर्च्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवर काव्यसुपंजिका च
य. सचकार शुभचन्द्रयतीन्द्रचंद्रः ॥ ७ ॥
उद्यापनमदीपिष्टा पल्योपमविधिश्च य. ।
चारित्रशुद्ध तपमस्य त्रुंदिन्द्वादशात्मनः ॥ ८ ॥

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघमहासाधुर्लक्ष्मीचंद्रोयतीश्वरः ।
तस्य पट्टे च वीरेंदुर्विबुधो विश्ववंदितः ॥ १ ॥
तदन्वये दयाभोधिर्ज्ञानभूषोगुणाकरः ।
टीकां हि कर्मकाण्डस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥ २ ॥

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणनामाकिता सूरी श्रीसुमतिकीर्ति विरचिता कर्मकांडस्य टीका समाप्तः।

संवत् १७७७ वर्षे द्वितीय अषाढ सुदी ६ भौमदिने श्रीमद्‌भट्टारक श्री १०८ देवेंद्रकीर्त्ति तच्छिष्य पंडितकिशनदासस्य वाचनार्थे लिखितं महात्मा धनराजेन श्री अंबावतीमध्ये श्री सवाईजयसिंहजी विजयराज्ये।

७. चन्द्रप्रभचरित्र ।

रचयिता आचार्य शुभचन्द्र। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ७२। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में, ३८–४२ अक्षर। विषय–आठवें तीर्थंकर श्री चन्द्रप्रभु का जीवन चरित्र। प्रति पूर्ण तथा नवीन है।

मंगलाचरण—

श्रीवृषं वृषभं वंदे वृषदं वृषभांकितं ।
वृषभादिसभाश्लिष्टं पादद्वितयपंकजं ॥ १ ॥
चन्द्रप्रभं जिनं स्तौमि चन्द्रकांतं सुचंद्रकं ।
चन्द्रांकं चेहितं चन्द्रैश्चन्द्रिकाहततामसं ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

त्रैलोक्यसारादिसुलोकमध्यान्, सद्गोम्मटादीन वरदीवहेतून् ।
सत्तर्कशास्त्राप्तसहस्त्यधीशान्नो वेद्मि यद् मोहवशो कृतांतः ॥ १ ॥
तथाविधोपि प्रगुणैर्जिनेशं, स्तुवन्न सद्भिः मदलैः परैश्च ।
क्षम्यः सदा कोपगणं विहाय, बाल्ये जने को हि शुभं न दधान् ॥ २ ॥
श्रीमूलसंघे जनि पद्मनन्दी, तत्पट्टधारी सकलादिकीर्त्तिः ।
तत्पट्टधारी भुवनादिकीर्ति, जीयाच्चिरं धर्मधुरीणदक्षः ॥ ३ ॥
तत्पट्टे जनिबोधबुद्धनिपलन्यायादिशास्त्रार्थ–
वर्गिसद्गूपामृतपानलालसमतिः श्रीज्ञानभूषोजनी ।
श्रीयान् पंचमरालकल्पशिखरी तत्पट्टधारी चिरं,
श्रीमन्द्री विजयादिकीर्तिमुनिपो भूयाद्‌समास्मार्यजिन ॥ ४ ॥

श्रीमद्बलात्कारगणे सुरम्ये सरस्वतीगच्छमुनींद्रपूज्ये ।
श्रीकुंदकुन्दान्वयपंकजे सरोजे देवेंद्रकीर्त्तिः प्रबभूवभानुः ॥ ३ ॥
भट्टारकानां च शिरोमणिर्यस्तत्पट्टके भूत्यमहीद्रकीर्त्ति. ।
देवेंद्रकीर्त्तिम्ममवै गुरुर्या भूम्यां ततोऽभूत्तरमा सुधीरः ॥ ४ ॥

× × × × × × × × × ×

इति जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिसंग्रहे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्त्तिविरचिते प्रमाणपरिच्छेदो नाम त्रयोदशपरिच्छेदः समाप्तः ।

६. जम्बूस्वामिचरित्र ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १०५. साइज १०॥×४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २८–३१ अक्षर । विषय–अन्तिम केवली श्री जम्बूस्वामि का जीवनचरित्र । लिपि संवत १६६३.

मंगलाचरण—

श्रीवर्द्धमानतीर्थेश वंदे मुक्तिवधूवरं ।
कारुण्यजलधिं देवं देवाधिपनमस्कृत ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्रीकुन्दकुन्दान्वयमौलिरत्नं, श्रीपद्मनन्दिविदितः पृथिव्यां ।
सरस्वतीगच्छविभूषणं च, बभूव भव्यालिसरोजहंसः ॥ १ ॥
ततोऽभवत्तस्य जगत्प्रसिद्धेः, पट्टे मनोज्ञे सकलादिकीर्त्तिः ।
महाकविः शुद्धचरित्रधारी, निर्ग्रन्थराजा जगति प्रतापी ॥ २ ॥
जयति सकलकीर्त्तिः पट्टपंकेजभानुः,
जयति भुवनकीर्त्तिः विश्वविख्यातकीर्त्तिः ।
बहुयतिजनयुक्तो मुक्तिमार्गप्रणेता,
कुसुमशरविजेता भव्यसन्मार्गनेता ॥ ३ ॥
विबुधजननिषेव्यः सत्कृतानेककाव्यः,
परमगुणनिवासः सद्व्रतालीविलासः ।
विजितकरणमारः प्राप्तसंसारपारः,
स भवतु गतदोषः शर्मणे वः सतोषः ॥ ४ ॥
पट्टाहमादेस्तपसो विधाता,
ब्रह्माभिधः ज्ञाननिलयं धरित्र्यां ।

मंगलाचरण—

श्रीमंतं त्रिजगन्नाथं वृषभं नृसुरार्चितं ।
भवभीतिनिहंतारं वंदे नित्यं शिवाप्तये ॥ १ ॥
नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकर्मारये निशं ।
पंचभ्यस्सद्गुरुभ्योस्तु प्रणामोभीष्टसाधकः ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

इति पूर्णं जयाख्यस्य पुराणं योगिनो वरं ।
पठनपाठनश्रोतृशीलानां जयपुण्यद ॥ १ ॥
प्राप्तशिवो जयीदेयाज्जयोरमाभिः स्तुतः श्रुत. ।
युस्माभि र्नः पुराणस्य व्याआद्रत्नत्रयं वचः ॥ २ ॥
प्रकथ्यतेऽन्वयोऽथात्र ग्रंथकृद्ग्रंथभक्तजः ।
मूलसंघे वरे वीरपारंपर्यार्च्चितुगंणे ॥ ३ ॥
अभूद्गणो बलात्कार· पद्मनंद्य दि पंचसु ।
नामास्मिन्ख्य मुनिभ्रीव शारदा बलवाचकः ॥ ४ ॥
आचार्यो कुंदकुंदाख्यात्तस्मादनुक्रमादभूत् ।
सकलकीर्तियोगीशो ज्ञानी भट्टारकेश्वरः ॥ ५ ॥
येनाधृतो गतो धर्मो गुर्जरे वाग्वरादिके ।
निर्ग्रंथे न कवित्वादिगुणे न वाहेता पुरा ॥ ६ ॥
तस्माद् भुवनकीर्ति श्रीज्ञानभूषणयोगीराट् ।
विजयकीर्त्त योऽभवन् भट्टारकपदेशिनः ॥ ७ ॥
तेभ्यः श्री शुभचंद्रश्री सुमतिकीर्त्ति संयमि ।
गुणकीर्त्याह्वया आसन बलात्कारगणेश्वर. ॥ ८ ॥
ततः श्री गुणकीर्त्तीशपदव्योमदिवाकरः ।
वादिनां भूषणो भट्टारकोऽभूत् वादिभूषण. ॥ ९ ॥
तत्पट्टाधीश्वरो विश्वव्यापिनी श्वेतकीर्त्तिभृत् ।
रामकीर्तिरभूत्तस्य रामो वा सुन्दरो गुणैः ॥ १० ॥
तस्मात् स्वगच्छनतिरस्ति स पद्मनन्दी ।
निष्णातकोक्सुसारकपद्मनन्दी ।
भट्टारको जिनमतांबरपद्मनन्दी
श्रीरामकीत्तिपदभूधरपद्मनन्दी ॥ ११ ॥

भूयात्पुराणरचना भवपुण्यतो मे,

सम्यक्पदेन सहितो भवसौख्यवर्गात ।

अन्योत्थकर्मजनकाद्विमुखस्य काचि–

चारित्ररत्ननिचयो न हितस्ततोऽन्य ॥ २१ ॥

अमृतवार्द्धि ख भूमि सुदर्शनो विजयनामनगाचलमन्दिरचपलकर ।

समुद्रोः सहिताः इमे जयतु यावदिदं भुवनत्रये ॥ २२ ॥

शिल्पिकृत्यादयत्येव जिनबिंबं तथा कविः ।

शास्त्रं तन्मान्यतामेति मान्यं तन्मानित जनोः ॥ २३ ॥

राद्रस्यो तत्पुराणं शकमनुजयतेमेदपाटस्यमुख्ये ।

पश्चात् संवत्सरस्य प्ररचितमटतः पंच पचाशतोहि ।

अभ्राभ्रान्वोक संवत्सरनिकरयुजः फागुणे मासि पूर्णे ।

द्वप्रबोचोदयाख्ये सुकविविनयिनो लालजिष्णोश्च वाक्यात ॥ २४ ॥

सकलकीर्त्तिकृत पुरुदेवजं समवलोक्य पुराणमियकृति ।

जयमुनेर्गुणपालसुतस्य च वृहदल जिनसेनकृतकृता ॥ २५ ॥

इति श्री जयाके जयनाम्निपुराणे भट्टारक श्री पद्मनन्दिगुरूपदेश ब्रह्मकामराजविरचिते प० जीवराज-महाख्यान त्रयोदशमः सर्गः ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या ८५, साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३७-४२ अक्षर । प्रति पूर्ण है ।

संवत १६६१ वर्षे भादवा सुदी ३ शुक्रे श्रीमूलसंघे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिदेवास्तदन्वये भट्टारक श्री वादिभूषणदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनंदीस्तदाम्नाये श्री गुर्ज्जरदेशे श्री सूरतबिंदार श्री वासपूज्यचैत्यालये हुंबडज्ञातीय साह श्री संतोषी भ्राता साह जीवराज तयोः जननी आर्यिका बाई करमा तथा स्थविराचार्य श्री नन्दकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म श्री लालजी तच्छिष्य ब्रह्म श्री कामराजाय जयपुराणं लिखाप्य दत्तं ॥

संवत् १७३० वर्षे ब्र० कामराजेन स्वाभिष्ट शिष्य ब्र० ज्ञानजीकस्ये जयपुराणमिदं दत्तं ॥

११. जिनसहस्रनाम सटीक ।

मूलकर्त्ता आचार्य जिनसेन । टीकाकार आचार्य श्री श्रुतसागर । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या १,२ साइज १२×४॥ इञ्च । प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है ।

चारे गीष्पतिके त्रयोदशतिथौ सन्नूतने पत्तने,
श्री चन्द्रप्रभधाम्नि वै विरचितं चेद मया तोषत. ॥ २ ॥

इति श्री जीवंधरस्वामिचरिते जीवंधरस्वामिमोक्षगमनवर्णननामत्रयोदशो भर्लः ।

संवत् १६३६ वर्षे अषाढ सुदी १३ सोमवारे सापणाग्रामे राय श्री सुरजनजी प्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य-मंडलाचार्यश्रीधर्म्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्री चन्द्र-कीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये साहगोत्रे साह श्री कमा तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या करमादे द्वितीया लहुडी । तयोः पुत्रा. पंच । प्रथम पुत्र साह ऊदा, द्वि० सा. माधु. तृ सा० माधु चतुर्थ सा. चाटु पंचम सा. कालु । सा. ऊदा तद्भार्या उतिपदे तयोः पुत्रौ द्वौ । प्रथम पुत्र जिनपूजापुरंदरान्, दानगुणे श्रेयास, कीर्ति-गुण रामचन्द्र, शीलगुणे सुदर्शन, प्रभावनागे वज्रकुमार, इत्याद्यनेकगुणालंकृतगात्रान साह श्री भीखा तद्भार्या दानशीलतपभावना भावलदे तयोः पुत्राः चत्वारिः । प्रथम पुत्र साह जेसा भार्या जममादे, द्वि० पुत्र मोटा, तृतीय चि० वेणा चतुर्थ चि० हरीदास । द्वितीय पुत्र साह सेखा तद्भार्यातित्र. प्र० भा० शृंगारदे तयोः पुत्र चि० तेजा । द्वितीया भार्या सक्तादे । तृतीया भार्या संकरदे । सा. माधु भार्या मुक्तादे तयोः पुत्राः पंच । प्रथम पुत्र सा. चीतु भार्या चीतादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रमथ पुत्र खीरा द्वितीय पुत्र सागा । तृतीय पुत्र माल्हा । द्वितीय पुत्र धर्मा भार्या धारादे तत्पुत्र ताल्हू । तृतीय पुत्र लाखा भार्या लखमादे । चतुर्थ पुत्र परवत भार्या पाटमदे । पंचम पुत्र नानू भार्या नारंगदे । सा सातु भार्या पदमपती । साह चादू भार्या दानशीलतप-भावना सुहाणीचांदणदे तयो 'पुत्रा चत्वारः । प्रथम पुत्र कुलमंडन सा खिमा तद्भार्या प्रथम सुहागदे द्वि० भार्या लाहुडी । द्वितीय पुत्र हीरा भार्या हीरादे तृ० पुत्र बोहिथ भार्या बहुरंगदे चतुर्थ पुत्र ढोला भार्या हरषमदे । साह कालू भार्या द्वे प्रथम केलरदे, द्वितीया भार्या कौतिगदे तयोः पुत्राः चत्वार । प्रथम पुत्र सा० खाखा भार्या अहंकारदे द्वि० पुत्र चि० देवा तृतीय पुत्र गढमल चतुर्थ पुत्र आलप एतेषां मध्ये जिनपूजा-पुरंदरान्, राजसभाशृंगारहारोपमान, सौम्यगुणचन्द्रम प्रतापगुणसूर्यसम, गंभीरगुणसमुद्रतुल्यान इत्याद्यनेक गुणगणालंकृतगात्रान साह श्री ऊदा तत्पुत्र कुलमंडन साह सेखा तेनेदं कर्मक्षयार्थं जीवंधरचरित्र लिखाप्य प० श्री [illegible] पठनाय दत्तं ।

१३. ज्ञानसूर्योदय नाटक ।

रचयिता श्री वादिचंद्रसूरि । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३०, साइज १०॥x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४५ अक्षर । रचना संवत् १६४८, लिपि संवत् १८३४ श्री वादिचन्द्र सरस्वतिगच्छ के आचार्य थे तथा प० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । नाटक अभी तक अप्रकाशित है ।

ये च विक्रमातीताः शतपञ्चदशाधिकाः।
षष्टिसंवत्सराः जातास्तदेयं निर्मिताकृतिः॥ ३॥
ग्रन्थसंख्यात्रविज्ञेया. लेखकै. पाठकैः किल।
षड्त्रिंशदधिका पंचशती श्रोतृजनैरपि॥ ४॥

इति मुमुक्षुभट्टारकश्रीज्ञानभूषणविरचितायां तत्त्वज्ञानतरंगिण्यां शुद्धचिद्रूपप्राप्तिक्रमप्रतिपादकोऽष्टादशोध्यायः।

संवत् १८२५ लिखत माणिकचंदमहात्मना सवाईजय पुरमध्ये।

१५. त्रिभंगीसार टीका।

टीकाकार श्री विवेकनन्दि। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या ३७, साइज ११×४॥ इञ्च।

मंगलाचरण—

सर्वज्ञं करुणार्णवं त्रिभुवनाधीशार्च्यपादं विभुं।
यं जीवादिपदार्थसार्थकलने लब्धप्रशंसं सदा॥ १॥
कर्मद्रुमोन्मूलनदिक्करीन्द्रं सिद्धांतपाथोनिधिदृष्टपारं।
षट्त्रिंशदाचार्यगुणैः प्रयुक्तं नमाम्यहं श्रीगुणभद्रसूरिं॥
या पूर्वं श्रुतमुनिना टीका कर्णाटकभाषया विहिता।
लाटीयभाषया सा विरच्यते सोमदेवेन।

× × × × ×

प्रणिपत्य नेमिचन्द्रं वृषभाद्यान् विघ्नितमान् जिनान् सर्वान्।
वक्ष्ये स्वभाषयाहं विशदां टीकां त्रिभंग्याया॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

यथा नरेंद्रस्य पुनोमपुत्रा प्रियानारायणस्यादिवसुना बभूव।
तथा तदेवस्य विजोणिनाम्नी प्रिया सुधर्मा सुगुणा सुशीला॥१॥
तयोः सुतः सद्गुणवान् सुवृत्तः सोमोभिधः कौमुदवृद्धिकारी।
व्याप्रेरवालार्णवनिधि. सुरत्नं जीयाच्चिरं सर्वजनानुरागी॥ २॥
श्रीमज्जिनोक्तानि समंजसानि शास्त्राणि लेभे स यथात्मशक्त्या।
श्रीमूलसंघान्वि विवर्द्धनेंदो. श्रीपूज्यपाद प्रभुमद्गुरुभ्यः॥ ३॥

× × × × × ×

श्रीपद्माद्रियुगे जिनस्य नितरां कीन [illegible]
सोम. सद्गुरुभजन [illegible]।

१७. धन्यकुमार चरित्र ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ३४ । साइज ११x४ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४४ अक्षर । प्रति प्राचीन है । उक्त चरित्र हिन्दी अनुवाद सहित बनारस से प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

नमः श्री वर्द्धमानाय पंचकल्याणभागिने ।
जिनाय विश्वनाथाय मुक्तिभर्त्रे गुणाब्धये ॥ १ ॥

अन्तिमपाठ—

सर्वे तीर्थकरा जगत्रयहिताः सिद्धाः अनंताविदः
पंचाचारपरायणाश्चगणिनः सत्पाठकाः साधवः ।
स्वगुर्वस्यादिसु साधकावरतपो युक्ताश्च वंद्या स्तुता
भव्यैश्च मया दिशतु शिवदं सन्मंगलं मेमत्रः ॥ १ ॥
भवेयुः श्रीमतोधन्यकुमाराख्यसुयोगिनः ।
चरित्रस्याखिलाः श्लोकाः सार्द्धाष्टशतसंख्यकाः ॥ २ ॥

इति धन्यकुमार चरित्रे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवस्तस्य शिष्यमुनिसकलकीर्त्ति विरचिते धन्यकुमारतपः सर्वार्थसिद्धि गमनो नाम सप्तमो सर्गः ।

संवत १५३३ वर्षे पौष सुदी ३ गुरौ श्रवण नक्षत्रे श्री नयनपुरे सुरत्राण ग्यासुद्दीन राज्ये प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतिगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सिंहकीर्तिदेवा तच्छिष्य मुनि रत्नभूषण निमित्ते खंडेलवालान्वये साह नाथू तद्भार्या नैणसिरी तयोः पुत्राः पचायण भार्यानुसरी । साह तेजा भार्या तेजसिरी । तत्पुत्र साह ? गा । साह गोल्हा भार्या गोल्हसिरी तयोः पुत्रौ साह दासा तयोः निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं इदं धन्यकुमारचरित्रं स्वहस्तेन प्रदत्तं ।

१८. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री अमितगति । भाषा संस्कृत । पत्र संख्या ६० साइज १२x५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६–४० अक्षर । रचना संवत १०७० लिपि संवत १५३३ प्रति साधारण अवस्था में है । ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है ।

मंगलाचरण—

श्रीमन्नम्रनरामरेन्द्रमकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा- ... नोदयः प्रबोध ।
सनंततो कांतचयो बरीयो भवंतु ते तीर्थंकराः श्रिये नः ॥ १ ॥

तपो पुत्र साह जगलाम तस्य भार्या हमीरदे तयो पुत्र साह जगमाल तस्य भार्या जौणादे द्वितीय पुत्र झाझू तृतीय पुत्र कल्याण तस्य भार्या करुणादे एतेषां मध्ये साह हरपा तस्य भार्या हरषमदे लिख… शास्त्रवरांगचरित्रं जेठजिणवरव्रत प्रद्योतनार्थं भार्या श्री शुभचद्राय दत्तं ।

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ७३. साइज १३×५ इञ्च । लिपि सवत १८७३.

सवत् १८७३ वर्षे आश्विन कृष्णपक्षे ५ बुधवासरे श्रीमत् ग्वालेरमुत्सललसक्कर महाराज दौलतरावसिंध्या राज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये धर्मोल्लसन्मानसचतुसघ युते वाद्यगीत मगल प्रवर्द्धित नित्योत्सवे श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुदकुदाचार्यान्वये अंबावती सु सकलभट्टारक शिरोमणि भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति जिष्णुना पट्टोदयाद्रि सहस्ररश्मिसन्निभ भट्टारक श्री क्षेमेन्द्रकीर्त्तिजित्सार्वभौमानां पट्टालकारलज्ञापमान भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे धर्मशिरोमणि साहजी श्री जिणदासजी तस्य पत्नीकुक्षौ पुत्रास्त्रयः ज्येष्ठ पुत्र रतनचंद मध्यपुत्रः फतेचदजी तस्य पुत्रौ द्वौ ज्येष्ठ पुत्र रामलालजी लघु पुत्र केवलरामजी तस्य पितृव्य वश सहस्ररश्मि सदृश धर्मभारधुरधर सेठजी श्री मनीरामजी तस्य पत्नि कुक्षौ पुत्र लक्ष्मीचद्र रेतेषां म ज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं वरांगचरित्र ग्रथ घटापित ।

४५. वर्द्धमानपुराण ।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति । भाषा सस्कृत । पत्र सख्या ८० साइज ११×५। इञ्च । प्रत्ये पृष्ठ पर १३ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ५२-५६ अक्षर। प्रति नवीन तथा सुन्दर है । लिपि सवत् १८०४.

मगलाचरण—

जिनेशे विश्वनाथाय ह्यनतगुणसिद्धये ।
धर्मचक्रभृते मूर्द्ध्ना श्री वीरस्वामिने नमः ॥ १ ॥

अन्तिम पद्य—

जल्पितेन बहुना किमाश्रयेद्वीरनार्थं इह यो मया स्तुतः ।
मे ददातु कृपया असोद्भुतान्, मुक्तये निजगुणान् स्वशर्मणे ॥ १ ॥
त्रिसहस्राधिकापञ्चत्रिंशश्लोकाः भवन्ति वै ।

प्रशस्ति—

यस्य तीर्थङ्करस्येव महिमाभुवनातिगः ।
रत्नकीर्त्तिर्यतिस्तुत्यः स नेकषामशेषवित् ॥ १ ॥
अहङ्कारस्फारी भवदमितवेदांतविबुधो,
हसद्ध्वातश्रेणी चपणनिपुणोतिद्युतिभरः ।
अधीती जैनेन्द्रे जनि रजनिनाथप्रतिनिधिः,
प्रभाचद्र सांद्रोदयशमितताप्व्यतिकरः ॥ २ ॥
महाव्रतिपुरंदरः प्रशमदग्धरागांकुरः स्फुरत्परमपौरुषः स्थितिरशेषशास्त्रार्थवित् ।
यशोभरमनोहारी कृतसमस्तविश्वंभरः परोपकृतितत्परो जयति पद्मनंदीश्वरः ॥
श्रीमत्प्रमेंदु प्रभुपादसेवा हे वाकिचेताऽप्रसरत्प्रभावः ।
सच्छ्रावकाचारमुदारमेन श्रीपद्मनन्दी रचयांचकार ॥
आलंबकचुककुले विततातरिक्षे, कुर्वनस्वांधवसरोजविकाशलक्ष्मीः ॥
लुंपन् विपक्षकुमुदव्रजभूरिकांतिं, गोकर्णहेलिरुदियाप्लसत्प्रभावः ॥ ४ ॥
भुवि सूपकारसारं पुण्यवता येन निर्म्ममे कर्म्म ।
भीम इव सोमदेवो गोकर्णात्सोभवत् पुत्र ।
सती मतल्लिका तस्य यशःकुसुमवल्लिका पत्नी,
श्री सोमदेवस्य प्रेमाप्रेमपरायणा ॥ ५ ॥
विशुद्धयोः स्वभावेन ज्ञानलक्ष्मीजिनेंद्रयोः ।
नया इवा भवन् सप्तगभीरास्तनयास्तयोः ॥ ६ ॥
वासाधरहरिराजौ प्रह्लादः शुद्धधीश्चमहाराजः ।
भवराजो रत्नाख्यः स तनयाख्यश्चेरथमीसप्त ॥ ७ ॥
वासाधरस्याद्भुतभाग्यराशेर्मिात्तयोर्वेश्मन कल्पवृक्षः...
अगण्यपुण्योदयतोऽवतीर्णो वितीर्णचेतोऽभिमतार्थसार्थः ॥ ८ ॥
वासाधरेण सुधिया गाभीर्याद्यदि तृणीकृतोनाब्धिः ।
कथमन्यथा स वडवाज्वलनसूत्रस्थितोज्वलति ॥ १० ॥
× × × × ×
द्वितीयोप्यद्वितीयो भूद्धैर्यौदार्यादिभिर्गुणैः ।
पुत्र श्री सोमदेवस्य हरिराजाभिधः सुधीः ॥ १० ॥
गुणैः सदास्मप्रतिपक्षभूतैः सगीकरोत्येष विवेकचक्षु ।
इतीव शिष्यैः हरिराजसाधु दोषैरवालोकि न शीलसिंधुः ॥ ११ ॥

तत् शिष्यो गुणरत्नराजितमतिः श्रीसिंहनन्दीगुरुः,
सद्रत्नत्रयमंडितोतिनितरां भव्यौघनिस्तारकः ।
तेषां पादपयो न मुग्धमधुपः श्री नेमिदत्तायते,
चक्रे चारुचरित्रमेतदुचित श्रीपालज सत्क्रियात् ।। २ ।।
अग्रोत्तोत्तमवंशमण्डनमणिः स ब्रह्मचारीशुभः
श्री भट्टारकमल्लिभूषणगुरोः पादाब्जसेवारतः ।
जीय दत्र महेंद्रदत्त सुयती, सज्ञानवान्निर्मलः
सूरि श्री श्रुतसागरादियतिन सेवा परः सन्मतिः ।। ३ ।।

ख्याते मालवदेशस्थे पूर्णाशानगरे वरे
श्री मदादिजिनागारे सिद्धं शास्त्रमिदशुभं ।। ४ ।।
सवत् सार्द्ध सहस्त्रे च पचाशीति समुत्तरे ।
आषाढशुक्ला पचम्यां संपूर्णं रविवासरे ।। ५ ।।

इति श्री सिद्धचक्रपूजातिशयं प्राप्ते श्रीपालमहाराजचरिते भट्टारक श्री मल्लिभूषणशिष्याचार्य श्री सिंहनन्दि ब्रह्म श्री शांतिदासानुमोदिते ब्रह्म नेमिदत्तविरचिते श्रीपालमहामुनींद्र निर्वाणगमनोनाम नवमोधिकारः समाप्तः ।

श्रीमदग्रोतान्वये यो गोत्रेगोयलमंडितः ।
स श्री रामादासाख्यो तत्तनूजो गुणाग्रणी ।। १ ।।
सुरापगादितीर्थेषु स्नानेषु यः सदारत ।
सः श्रीमान् क्षेमदासोभूत क्षमादिगुणसागरः ।। २ ।।
हरेरर्चा गुरोभक्तिः दानतत्परमानसः ।
नृणाना हृदयिप्राप्ती सौधीयया सुखावह ।। ३ ।।
महागुणवतीरम्या सुचरित्रापतिव्रता ।
क्षेमश्रीः नाम तस्यासीद्भार्या लावन्यसुन्दरी ।। ४ ।।
तयोः पुत्राः समुत्पन्ना त्रयः रत्नत्रयोपमा ।
निजवृत्तेषु ये लीनाः भूपैः सन्मानिताः सदा ।। ५ ।।
ज्येष्ठोति च गुणश्रेष्ठो धर्मज्ञो धर्मवत्सलः ।
निजाचारेषु यो लीनो सः श्रीकेशवनामभाक् ।। ६ ।।
मृद्वागी कोमल धीमानसे करूणान्विता ।

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

जयतु जित विपक्षो मूलसघः सुपक्षो
हरतु तिमिर भारभारती गच्छ वारः
नयतु सुगतिमार्गं शासनं शुद्धवर्गं
जयतु च शुभचन्द्रः कुन्दकुन्दो मुनींद्रः ॥ १ ॥

पुराणकाव्यार्थं विदांवरत्व विकासयन् मुक्तिविदावरत्व ।
विभातु वीरः सकलाद्यकीर्त्तिः कृताय केनोतो सकलाद्यकीर्त्तिः ॥ २ ॥

भुवन कीर्त्तियति जयताद्यमी, भुवनपूरित कीर्त्तिचयः सदा ।
भवनबिब जिनागम कारणो, भवन वा मुदवातभरः परः ॥ ३ ॥

तत्पट्टोदय पर्वते रविरभूद् भव्यांबुज भासयन्,
सन्नेत्रास्रहर तमो विघटयन्ज्ञानाकरैं र्भासुरः ।
भव्यांनंतगतश्च विग्रहमतः श्री ज्ञानभूषः सदा,
चित्रं चंद्रक संगतः शुभकरं श्री वर्द्धमानोदयः ॥ ४ ॥

जयति विजयकीर्त्तिः पुण्यमूर्त्तिः सुकीर्त्ति,—
जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः ।
नयनलिनहिमांशु र्ज्ञानिभूषस्यपट्टे,
विविध पर विवादिक्ष्माधरे वज्रपात्तः ॥ ५ ॥

तत्तच्छिष्येण शुभेंदुना शुभमनः श्री ज्ञान भावेन वै,
पूतं पुण्यपुराण मानुषभवं ससारविध्वसक ।
नो कीर्त्या व्यरचि प्रमोहवशतो जैनेमते केवल,
नाहंकारवशात्कवित्त्वमदतः श्री पद्मनाभेहितं ॥ ६ ॥

इदं चरित्रं पठतः शिवं वै श्रोतुश्चपद्मं श्रवत्पवित्र ।
भविष्णुससारसुख नृ देवं सभुज्य सम्यक्त्वफलप्रदीपं ॥ ७ ॥

चद्रार्कहेमगिरिसागरभूर्विमान,
गगानदीगगनसिद्धशिलाश्च लोके ।
तिष्ठन्ति यावदभितो वरमर्त्यसेवा,
तिष्ठंतु कोविद मनोबुजमध्यभूताः ॥ ८ ॥

सवत् १७६६ वर्षे कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदा शशिवासरे लिपिकृतं विंदरावति नगरे पं० विहादारीसेन

प्रति नं० २. पत्र सख्या ६६. साइज १०×४।। इञ्च । लिपि संवत् १७३०.

प्रति नं० ३. पत्र सख्या ३३ साइज १३×४॥ इञ्च। प्रारम्भ के १२ पृष्ठ नहीं है। लिपि सवत् १६२५.

सवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्त्तमाने दक्षिणायेन मार्गशीर्षशुक्लपक्षे अष्टम्या दिवसे श्री कुभमेरुदुर्गे श्री उदयसिंहराज्ये श्रीखरतरगच्छे श्री गुणलाभमहोपाध्यायैः स्वत्राचार्थं लिखापितासौ वाच्यमाना चिर नदतात्।

५०. सम्यक्त्व कौमुदी।

रचयिता श्री गुणाकर सूरि भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ३५. साइज ११॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १५०४. लिपि सवत् १६११.

मगलाचरण—

तस्मै नित्य चिदानद स्वरूपायार्हते नमः।
यदागमरसास्वद तत्त्व विज्ञायते नरः॥ १॥
युगादौ जगदे येन श्रेयः श्रेयस्करान्नृणा।
स भूयाद्भविना भूत्यैनाभिजन्मा जिनेश्वरः॥ २॥

अन्तिम—

पूर्वर्षिभि र्या रचिता कथेयमत्रेऽपि काव्यै सुभाषितैश्च।
श्लोकै मया सा ग्रथिता प्रमोदाद्वोदाभ्रबाणेदुमितेत्रवर्षे॥ १॥
इति चैत्रगच्छीयैः श्री गुणाकरसूरिभिः।
चक्रे श्लोकै नवारम्या कथा सम्यक्त्वकौमुदी॥ २॥
पुष्पदंतौ स्थिरौ यावद्यावच्च ध्रुव मडल।
वाच्यमाना बुधै स्तावज्जीयात सम्यक्त्व कौमुदी॥ ३॥

इति सम्यक्त्व कौमुदी समाप्ता।

सवत् १६११ वर्षे भादवा सुदी ४ दिने मेडता मध्ये उपाध्याय श्री कर्मतिलक तत् शिष्य वा० श्री ज्ञानतिलक लिखावत सम्यक्त्व कौमुदी आत्मार्थे।

५१. सारस्वत चन्द्रिका सटीक।

टीकाकार श्री चन्द्रकीर्त्ति। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या १६६ साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ४०–४२ अक्षर। लिपि सवत् १७४६.

मगलाचर—

नमोस्तु सर्व्वकल्याणपद्मकाननभास्वते।
जगच्छितमनाथाय पराय परमात्मने।

५२. सिद्धान्तसार संग्रह ।

रचयिता आचार्य श्री नरेन्द्रसेन। भाषा संस्कृत। पत्र संख्या ६३ साइज १२×५ इञ्च। लिपि सवत १८०३. लिपि स्थान जयपुर। प्रति जीर्ण शीर्ण हो चुकी है।

प्रारम्भ—

भूर्भुवः स्वस्त्रयीनाथं त्रिगुणात्मत्रयात्मकं।
त्रिभिः प्राप्तपरंधाम वंदे विध्वस्तकल्मषं॥ १॥

प्रशस्ति—

श्रीवीरसेनस्य गुणादिसेनो जातः सुशिष्यो गुणिनां विशेष्यः।
शिष्यस्तदीयोऽजनि चारुचित्तः सद्दृष्टिचित्तोऽत्र नरेंद्रसेनः॥ १॥
गुणसेनोदयसेनाऽजयसेना संबभूवुरतिवर्याः।
तेषां श्री गुणसेनः सूरिर्जातः कलाभूरिः॥ २॥
अतिदुःखमानिकटवर्त्तिनिकालयोगे,
नष्टे जिनेंद्र शिव वर्त्मनि यो बभूव।
आचार्य नाम विरतोऽत्र नरेंद्रसेन—
स्तेनेदमागमवचो विशदं निवद्धं॥ ३॥

इति सिद्धांतसारसग्रहे आचार्यश्रीनरेंद्रसेन विरचिते द्वादशमः परिच्छेदः समाप्तः।

५३. सिन्दूर प्रकरण ।

रचयिता श्री सोमप्रभसूरि। भाषा सस्कृत। पत्र सख्या ११. साइज १२×५ इञ्च। पद्य संख्या ६६. लिपि सवत् १८८६.

प्रारम्भ—

सिंदूरप्रकरस्तपःकरशिरः क्रोडे कषायाटवी,
दावार्चिनिचयः प्रबोध दिवस प्रारंभसूर्योदयः।
मुक्तिस्त्रीकुचकुंभकुंकुमरसः श्रेयस्तरोपल्लवः,
प्रोल्लासः क्रमयोर्नखद्युतिभरः पार्श्वप्रभोः पातु वः॥

प्रशस्ति—

सोमप्रभाचार्यमभाम्रयन्नपुंसां तमः पंकमपाकरोति।
तदप्यमुष्मिन् सुपदेशलेशे निशम्य माने निशमेतिनाशं॥ १॥

गुरूणामुपदेशेन सच्चरित्रमिदं शुभं ।
नेमिदत्तो व्रती भक्त्या भावयामाश शर्म्मदं ॥ ६ ॥

इति श्री सुदर्शनचरित्रे पंचनमस्कारमहात्म्यप्रदर्शके ब्रह्म श्री नेमिदत्तविरचिते सुदर्शनमहामुनि मोक्षलक्ष्मी संप्राप्ति व्यावर्णनो नाम द्वादशमोऽधिकारः ॥ इति सुदर्शन चरित्रं संपूर्ण ॥

५५. स्वामीकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा सटीक ।

मूलकर्त्ता स्वामी कार्त्तिकेय । टीकाकार आचार्य शुभचन्द्र । भाषा प्राकृत संस्कृत । टीका संवत् १६०१. लिपि सवत् १७२१. प्रारम्भ के ७३ पृष्ठ नहा है । ग्रन्थ प्रकाशित हो चुका है ।

प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेऽजनि नंदिसंघः, वराबलात्कारगणः प्रसिद्धः ।
श्री कुन्दकुन्दोवरसूरिवर्यः, विभातिभाभूषणभूषितांगः ॥ १ ॥
तदन्वये श्रीमुनिपद्मनंदी, ततोऽभवच्छ्रीसकलादिकीर्त्तिः ।
तदन्वये श्री भुवनादिकीर्त्तिः श्रीज्ञानभूषोवरवित्तिभूषः ॥ २ ॥
तदन्वये श्री विजयादिकीर्त्तिः, तत्पट्टधारी शुभचंद्रदेवः ।
तेनेयमाकारि विशुद्धटीका श्रीमत्सुमत्यादि सुकीर्त्तिकीर्त्तेः ॥ ३ ॥
सूरिश्रीशुभचन्द्रेण वादिपर्वतवज्रिणा ।
त्रिविद्येनाऽनुप्रेक्षायावृत्ति विरचितावरा ॥ ४ ॥
श्रीमत विक्रमभूपतेः परमिते वर्षे शते षोडशे,
माघे मासिदशाग्रवह्निमहिते ख्याते दशम्या तिथौ ।
श्रीमच्छ्रीमहीसार सारनगरे चैत्यालये श्रीपुरोः,
श्रीमच्छ्रीशुभचन्द्र देवविहिता टीका सदा नन्दतु ॥ ५ ॥
वर्णी श्रीक्षेमचन्द्रेण विनेयेन कृतप्रार्थना ।
शुभचंद्र-गुरो स्वामिन कुरु टीकां मनोहरां ॥ ६ ॥
तेन श्रीशुभचन्द्रेण त्रैवेद्येन गणेशिना ।
कार्त्तिकेयानुप्रेक्षाया वृत्तिविरचितावरा ॥ ७ ॥
तथा साधु सुमत्यादिना कृतप्रार्थना ।
सार्थीकृतीसार्थेन शुभचन्द्रेण सूरिणा ॥ ८ ॥
लक्ष्मीचन्द्रगुरु स्वामीशिष्यास्तस्यसुधीयशा ।
वृत्तिर्विस्तरितातेन श्री शुभेंदुप्रसादतः ॥ ६ ॥

विशदशीलस्वधुंनीसिलातलैकराजहसोत्सवायक्रीडनः प्रियः,
स्वमतसिंधुवर्द्धनप्रकृष्टयामिनी न पीनतेजसोद्भुत प्रभामितः।
सुरेंद्रकीर्त्तिशिष्य विद्यादिनयनगमदनैकपंडितः कलाधर
स्तदीप देशनामवाप्यशुद्धबोधमाश्रितो जितेंद्रियस्य भक्तितः ॥
गोलशृगारवशे नभसि दिनमणि वीरसिंहोविपश्चित्,
भार्या पीथा प्रीतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोऽभूत।
तेनोच्चैरेष ग्रंथ कृत इति सुतरा शैलराजस्य सूरेः,
श्री विद्यानंदिदेशात्सुकृतविधिवशात्सर्वसिद्धिप्रसिद्धयै ॥
इद श्री शैलराजस्य चरितं दुरितापहं।
रचितं भृगु कच्छे च श्री नेमिजिनमन्दिरं॥
धर्म्मार्थी लभते भृषं धनुयुतो वृद्धि च निःस्वाधनं,
पुत्रार्थी सुकुलोचितं च तनयं कामांश्च कामी लभेत्।
मोक्षार्थी वरमोक्षमाश्चलभते प्राक्तेन सांद्रेण किं,
ह्येतत् शैलमुनींद्रराजचरित सर्वार्थसिद्धिप्रदं॥
पठकः पाठकश्चैव वक्ता श्रोता च भावकः।
चिरं नंद्यादयं ग्रंथस्तेन सार्द्धं युगावधि॥
प्रमाणमस्य ग्रथस्य त्रिसहस्रमित बुधैः।
श्लोकानामिह मंतव्यं हनूमच्चरिते शुभे॥

इति श्री हनूच्चरिते ब्रह्मजितविरचिते द्वादशः सर्गः॥
सवत् १६८० वर्षे मार्गसिर सुदी पचमी दीतवार पुस्तक लिखापित जैसी श्रीपति।

५८. हरिवंशपुराण।

रचयिता भट्टारक श्री सकलकीर्त्ति के शिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास। भाषा सस्कृत। पत्र संख्य २२३. साइज १२॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ४६–५० अक्षर। प्रति लि सवत् १८०३ प्रति शुद्ध तथा सुन्दर है।

मगलाचरण—

सिद्धं संपूर्णभव्यार्थं सिद्धेः कारणमुत्तमं।
प्रशस्तदर्शनज्ञानचारित्रप्रतिपादन॥ १॥
सुरेन्द्रमुकटाश्लिष्टपादपद्मांशुकेशर।
प्रणमामि महावीर लोकत्रितयमगल॥ २॥

कर्म्मक्षयं बोधिचरित्रलाभं,
शुभां गतिं चेह न चान्यदेवः ॥ ११ ॥
यद्किंचिदत्र स्वरसंधिजात,
पदादिकिंचद्स्खलित प्रमादात् ।
क्षमस्व तद्भारतितुच्छबुद्धे,
ममाशुनो मुह्यति कः श्रुताब्धौ ॥ १२ ॥
तथा च धीमद्भिरिदं विशोध्यं,
मुनीश्वरैः निर्म्मलचित्तयुक्तैः ।
कृत्वानुकंपां मयि जैन शास्त्र-
विशारदैः सर्वकषायमुक्तैः ॥ १३ ॥
यावन्महीमेरु नगः पृथिव्या शशी च सूर्यः परमाणवश्च ।
श्रीमज्जिनेन्द्रय गिरश्च तावन्नदत्विदं नेमिचरित्र मार्यं ॥ १४ ॥
रक्षां सघस्य कुर्वंतु जिनशासनदेवताः ।
पालयतोऽखिल लोकं भव्यसज्जनवत्सलः ॥ १५ ॥

इति श्री हरिवंशे भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिशिष्य ब्रह्मचारि श्री जिनदास विरचिते श्री नेमिनाथ-निर्वाण वर्णनो नामैकोनचत्वारिंशत्तमः सर्गः ॥ ३६ ॥

संवत् १८२७ वर्षे मितो ज्येष्ठ वुदि ५ चंद्रवासरे सवाई जयपुरमध्ये चंद्रप्रभुचैत्यालये पंडितोत्तमपंडित श्री चोखचंदजी तत् शिष्य पंडितोत्तमपंडित श्री रायचंदजी तत् शिष्येण सेवक सवाई रामेण इदं त्रुटित ग्रंथ पूर्ण कृत ।

प्रति नं० २. पत्र सख्या ३५५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-४० अक्षर । प्रति मे दो तरह की लिखावट है । प्रति सुन्दर तथा शुद्ध है ।

शुभ संवत् १६६१ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी दिने राजमहलनगरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये महाराजाधिराज श्री मानसिंहजी राज्य प्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्र-देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधा गोत्रे याचकजनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरणनिरतचित्त साह श्री धनराज तद्भार्या शीलातोयतरंगिणी विनय-वागेश्वरी धनसिरि तयो पुत्रः त्रयः प्रथम पुत्र धर्म्मधुरा धरणधीर साह श्री रुपा तद्भार्या दानशीलगुण-भूषणभूषितगात्रा नाम्ना गूजरि तयो- पुत्र राजसभाशृंगारहार स्वप्रतापदिनकर मुकुलिकृत शत्रुमुखकुमुदाकर स्वसनिसाकारआह्लादित कुवलय दान गुण ... . ।

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

ततस्त्रिलोकः प्रतिवर्षमादरात् प्रसिद्धदीपालिककयात्र भारते ।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं जिनेन्द्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक् ॥ १ ॥
त्रयः क्रमात्केवलिनो जिनात्परे द्विषष्टिवर्षान्तरभाविनोऽभवत् ।
ततः परे पंचसमस्तपूर्व्विणस्तपोधना वर्षशतान्तरे गताः ॥ २ ॥
त्र्यशीतिके वर्षशते तु रूप्ययुक् दशैव गीता दशपूर्व्विणः शते ।
द्वये च त्रिंशेगभृतोपि पच ते शते च साष्टदश क चतुर्मुनिः ॥ ३ ॥
गुरु सुभद्रो जय भद्रनामा परो यशो बाहुरनंततरस्ततः ।
महार्हलोहार्य गुरुश्च ये दधुः प्रसिद्धमाचारमहागमत्र ते ॥ ४ ॥
महातनो धृव्विनय वरश्रतामृषिश्रति गुप्तपदाधि कदधत् ।
मुनीश्वरोऽन्य. शिवगुप्त सञ्ज्ञको गुणैः स्वमर्हद्वलिरप्यधात्पदं ॥ ५ ॥
समदराजोऽपि च मित्रवीरविंगुरु तथान्यौ वलदेव मित्रकौ ।
विवर्द्धमानाय त्रिरत्न सयुतः श्रियान्वितः सिंहवलश्चवीरवित् ॥ ६ ॥
सपद्मसेनो गुणपद्मखंडभृत गुणाग्रणीव्यघ्रपदादिहस्तकः ।
स न गहस्तोजित दड नामभृत्सनंदिषेणः प्रभुदायसेनकः ॥ ७ ॥
तपोधन श्रीधरसेननामकः सुधर्मसेनोऽपि च सिंहसेनक ।
सुनन्दिषेणेश्वरसेनकौप्रभु सुनदिषेणाभयसेन नामकौ ॥ ८ ॥
स सिद्धसनोऽभयभीमसनकौ गुरुपरौ तौ जिनशांतिषेणकौ ।
अखड पटखड मखडितास्थति. समस्तसिद्धातमधत्तयोर्थतः ॥ ९ ॥
दधार कर्म्मप्रकृतिंश्रुतिंच यो जितात्मवृत्तिजयसेनसद्गुरु. ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभानवानशेषराद्धातसमुद्रपारगः ॥ १० ॥
तदीयशिष्यो मितसेनसद्गुरुः पवित्रपुन्नाटगणाग्रणी गुणी ।
जिनेंद्र सच्छाशनवत्सलात्मना तपोभृता वर्ष शताधिज त्रिना ॥ ११ ॥
सुशास्त्रदानेन वदान्यत मुना वदान्यमुख्येन भुविप्रकाशिता ।
तदग्रजो धर्म्मसहोदर· समो समग्रधीर्द्धर्म्म इवात्तविग्रह· ॥ १२ ॥
तपोमयी काति मशेषदिक्षु य. क्षिपन्वभौ कीर्त्तितकीर्त्तिषेणमा. ।
तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरिष्ट नेमीश्वर भक्तिभारिणा ॥ १३ ॥
स्वशक्तिभाजा जिनसेन सूरिणा धिय ल्पयोक्ता हरिवंशपद्धति. ।
यदत्र किंचद्रचित प्रमादतः परस्यव्याहतिदोषदूषित ॥ १४ ॥
तदप्रमादास्तु पुराणकोविदा. सृजतु जतुस्थितिं शक्तिवेदिनः ।
प्रशास्तवशो हरिवंशपर्व्वत. क्व मे मति क्वाल्पतराल्पशक्तिका ॥ १५ ॥

जयन्ति देवासुर संघसेविताः प्रजातिशांतिप्रदशातिशासनाः।
विशुद्धकैवल्यविनिद्रदृष्टय. सुदृष्टतन्वा भुवनेजिनेश्वराः॥ ३१॥
जयन्त्वजय्याजिनधर्मसततिः प्रजास्विह क्षेममुभिद्धमस्त्वत:।
सुखाय भूयात्प्रतिवर्षवर्षणैः सुजात सस्या वसुधा सुधारिणां॥ ३२॥
शाके ऽव्वदशतेषुसप्तसुदिशं पंचोत्तरेपूत्तरा,
पातीद्रायुध नाम्नि कृष्णनृपजे श्री बल्लभेदक्षिणां।
पूर्व्वां श्रीमदवंति भूभृतिनृपे वत्सादि राज्ये परा,
सूर्याणामधि मडल जययुते वीरे वराहेवनि॥ ३३॥
कल्याणैः परिवर्द्धमानविपुल श्री वर्द्धमाने पुरे,
श्री पार्श्वालयनन्नराजवशतौपर्याप्तशेपःपुरा।
पश्चाद्दौस्तटिका प्रजाप्रजनित प्राज्यार्चना चचने,
शांतेः शातिगृहे जिनेसुरचिते वशोहरीणामयं॥ ३४॥
व्युत्सृष्टापरसघसंततिवृहत्पुन्नाटसघान्वये,
प्राप्तं श्री जिनसेनसूरिकविना लाभाय बोधे पुनः।
दृष्टोऽयं हरिवशपुण्यचरितः श्री पर्वतो सर्व्वतो,
व्याप्ताशा मुखमंडलस्थिरतरस्थेयात् पृथिव्या चिरं॥ ३५॥

इत्यरिष्टनेमिपुराणसग्रहे हरिवंशे जिनसेनाचार्यस्य कृतौ गुरुपर्व्वकमल वर्णनो नाम षट् षष्टितमः सगः।

इति श्री हरिवशपुराणसमाप्तमिद।

सवत् १६६२ वर्षे पौष सितपचम्या तिथौ सग्रामपुरवास्तव्ये महाराजाश्रीमानसिह राज्यप्रवतमाने श्रीधर्मनाथचत्यालये श्रीमूलसघे नद्याम्न ये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदंकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रकीत्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीत्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये चांदवाडगोत्रे सा० श्री जाटू तद् भार्या जौणादे स्तयो. पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० लालू तद्भार्या ललतादे स्तयोः पुत्राः सप्त। प्रथम सा० गढमल तद्भार्या गौरादे द्वि० चि० भरथा तृतीय चि० वेणा भार्या बहुरगदे, चतुर्थ चि० मनोहर, षष्ट चि० दयाल सप्तम धीनड। प्रथम देवदत्त, द्वि० सा० कुभा तद्भार्या कोडमदे स्तयो पुत्र चि० दासा तृतीय सा० मानू तद्भार्या लाडमदे स्तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० वीठल द्वि० चि० गोइद। चतुर्थ सा० कल्याण तद्भाया कल्याणदे एतेषा मध्ये चतुर्विधदानवितरणसमर्थः सा० कल्याण तद्भार्या कल्याणदे तया इद हरिवश पुराणाख्य शास्त्र पल्यव्रतउद्योतनार्थं भट्टारक श्रीदेवेन्द्रकीर्त्तये घटापित।

महिवीढिपहाणउ गुणवरिट्ठ , सुरहविमणु विभउजणइसुट्ठु ।
वरतिणिसालमंडिउपवित्तु , णं इह पंडिउ सुरपारपत्तु ।
रुहियासुविणामे चणिउइट्टु , अरियणजणाह हियसल्लुकट्ठु ।
जहि सहहिणिरतर जणणिकेय , पंडुरसुवण्णधयसुहसमे ... ।
सट्टालसतोरणजत्थहम्म, , मणसुहसदायण ण सुकम्म ।
चउहट्टयचच्चरदामजत्थ , वणिवर ववहरहिविजहिं पयत्थ ।
मग्गणगणकोलाहलसमत्थ , जहिजणणिवसहि संपुण्ण अत्थ ।
जहि आवणम्मिथियविविहभंड , कसवट्टिहिं व सियहिं भम्मखंड ।
जहिं विसहि महायणसुद्धवोह , णिच्चचियपूयादाणसोह ।
जहिं वियरहिंवरचउ वण्णलोय , पुण्णेणपयासियदिव्वभोय ।
ववहारवार सपुण्णसव्व , जहिंसत्तवसणामयहणीभव्व ।
सोहग्गणिलयजिणधम्मसील , जहिं माणिणिमाण महग्घलील ।
जहिं चोरचाडकुसुमालदुट्ठ , दुज्जणसखुद्दखलपिसुणधिट्ठ ।
णविदीसहिकहिमहिदुहियहीण , पेम्माणुरत्तसव्वजिपवीण ।
जहिं रेहहिहयपयदलिलमग्गु , तं वोलरंगरगियधरग्गु ।

घत्ता

सुहलच्छिजसायरु णं रयणायरु, वुहयणजुउणइदउरु ।
सत्थत्थहिसोहिउ जणमणमोहिउ, णं वरणयरहएहुगुरु ।

तहि साहिसिन्कदरुमामिसालु , णियपइपालइ अरियणभयालु ।
तं रज्जिवसइ वणिवरुपहाणु , दुत्थियजणपोसणु गुणणिहाणु ।
जो अइरवालु कुलकमलभाणु , सिंघलकुलजयहुविसेयभाणु ।
मिच्छत्तवसणावासणविरत्तु , जिणसासणिगंथहपायभत्तु ।
चउवरियणामचीमासतोसु , जो वसहमडणु सुयणपोसु ।
तं भामिणि गुणगणसीलखाणि, माल्हाहीणामे महुरवाणि ।
तं णदणुणिरुवमगुणणिवासु , चउधरिय करमचदु अरुहदासु ।
जिणधम्मोवरिजिव द्धणाहु , णिवहियइट्टु पुरयणाहणाहु ।
जिणचरणोदएणविजोपवित्तु , आयमरसरत्तउजासुचित्तु ।
उद्धरिउ चउव्विहसंघभारु , आयरिउविसावयचरिउचारु ।
चउदाणवतु णं गंवहत्थि , वियरेइणिच्चजोधम्मपथि ।

अन्तिम पाठ तथा ग्रन्थकार की प्रशस्ति—

णंदउ जिणवरसासणसारउ जिणवाणीविक्कुमग्गवियारउ।
णंदउ वुहयणसमयपरिट्ठिय णंदउ सज्जणजेविसविट्ठिय।
णंदउ णरवइपयरखंतउ णायमग्गुजोयह दरिसंतउ।
संतिवियंभउ पुट्ठिवियंभउ तुट्ठिवियंभउ दुरिउणिसुंभउ।
सेणिउणिग्गउ णरयणिवासहु जिणधम्मुविपयडउ भवियासहु।
जिं मच्छरु मोहविपरिहरियउ सुहयज्झाणे णिय मणुधरियउ
हेमचंदु आयरिउ वरिट्ठउ तहु सीसु वितवतेयगरिट्ठउ।
पोमणंधर णंदउ मुणिवरु देवणंदि तहु सीसु महीवरु।
एयारह पडिमउ धारंतउ रायरोसमयमोहहणंतउ।
सुहज्झाणें उवसमुभावंतउ णंदउ वभलोलु समवंतउ।
तहं पासजिणेंदहगिहर वणणु वेपडिमणिवसंसिह रणायवणणु।
गरुवउ जसमलु गुणगणणिहाणु वीयउ तहु वंधउ भव्वजाणु।
सिरि संतिदास गुणत्थजाणु चव्वइ सिरि पारसुविणयमाणु।
णंदउ पुणु दिवराउ जसाहिउ पुत्तकलत्तपउरविसाहिउ।

घत्ता

रोहियासिपुरिवासि सयलुलोउसहणंदउ।
पासजिणहुपयसरय णाणाथोत्तहिंवदिउ।
पुणु णामावलि भणउं विसारी दायहु केरी वरणाविसारी
अइरवालु सुपसिद्ध विभासिउ सिंघल गोत्तिउ सुपणसमासिउ।
वूल्हाणिवि अहिहाणे भणिउ जे णियतेण कुलु संताणिउ।
करमचन्दु चउधरिय गुणावरु दिवचंदहो भज्जहि विमणहरु।
तस्स तणुरुह तिण्णिविजाया ण पंडवउण तिण्णिसमाया।
पढमउ सत्थअत्थरसभायणु महणाचंदुणाउइयउधरइणु।
तहवणियापेमाहीसारी पुत्तचउक्किजुवमणहारी।
अग्गिमुचाणेंसेयसिउ उज्जलजसचरिओ विजयसिउ।
असुवरुपहरतियहिविरत्तउ जं असव्वुकइयाणउ उत्तउ।
दिउराजुजिणमहहिमल्लउ णीणाहीतियरमणुविमल्लउ।
तहुकुखिमिघिमुत्ताहलाहलाइ इंपणाउवेसुपरिउसलाइ।
पहिलारउणियकुलहंविदीउ हरिचंदुणामु गुणगणविदीउ।

दोदाहीकामिणी अणुरजइ   ज सुहिमरणे सग्गिगमिज्जइ ।
जोजाअवरु वि णंदणुसारउ   लखमणुणामे पडिय हारउ ।
मल्लाहीकामिणी तहु णंदणु   हीरुणामे जणमणणंदणु ।

घत्ता

अवरु वि णंदणुतीयउ, ताल्हूणामें भसिउ ।
वाल्हाही मणहारु वेसुयताहसमासिउ ।

पढमउ पोमकंतिदामूसुहो   इच्छाही भामिणी दिण्णउसुहो ।
महदासुवि तहु पुत्तपियारउ   पुणु दिवदासु वीरमणहारउ ।
साधारणही भज्जमणोहरु   घणमलु णंदणु तहुपुणुसुहयरु ।
जगमलही कामिणी तहुसारी   चायमल्लु सुयपोसणयारी ।
इय दिवराजह वसुपयासिउ   काराविउ सत्तुजि रससारउ ।
कोहमोहमय माणवियारउ   जं अक्खरुण किंपि विणासिउ ।
सुपसाए विविरुद्ध उभासिउ   त सरसइ महु खमउभडारी ।
वीरजिणहो मुह णिग्गयसारी   .... ।
हेम पोमआयरियवसंसि   वभज्जुणगुणगणिणणिहीसें ।
मइकसवट्टियवंसणवरेप्पिणु   कण्णसुवणहु लोहविदेप्पिणु ।
मत्त अत्थ सोहग्गुखिवेविणु   अत्थविरुद्धकिट्टिकट्टेविणु ।
सोहिउ एहु विमणुणाएविणु   होउ चिराउ सुकव्वुरसायणु ।
विक्कमरायहु ववगयकालइ   लेसुमुणीविसरअंकालइ ।
धरणि अकम्महुचइभविमासे   सणिवारे सुयपचामिदिवस ।
कित्तियणरकत्तसुहजोय   हुउ पुराणउसुविसुत्तहजोय ।

घत्ता

हो वीरजिणेसर जगपरमेसर   एत्तिउ लहुमहुदिज्जउ ।
जहिं कोकुणामाणु आवणजाणु सासयपउमहुदिज्जइ ।

इस महाराय सिरि अमरमण चरिए चउवग्ग सुकहकहामयरसेणसभरिए सिरि पंडिय मणि माणिक्कविरइण साधु महणासु चउवरी देवराज णामंकिए सिरि अमरसेण...... .. .. गमणवण्ण णाम सत्तमइमपरिच्छेय सम्मत्ता ।

प्रतिलिपि कार की प्रशस्तिअथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिः विक्रमादित्यगताब्दः सवत् १५७७

तस्य शिष्य श्री प्रचण्डकीर्त्ति देवाःतस्य शिष्यमंडलाचार्य श्री सिहनन्दि इद आत्मसबोधग्रन्थ लिख्यत ?म शयनिमित्त'। प्रति न० २। पत्र सख्या ४० साइज ६½×४½ इञ्च। लिपि सवत् १६०७।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६०७ वर्षे अषाढ वुदि ८ शनिवारे रेवती नक्षत्रे श्री सलीमसाहराज्ये रावणपार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तपट्टे भट्टारक श्री धर्मकीर्तिदेवास्तत् शिष्य निवाःसपूरि श्रावक., गोधा गोत्रे सगहो भीष अर्जुन। सजनपुत्र सोनपाल पुत्र ३ वस्तु, पूरू, राउ। भतिजा वहुडु जिणदास श्रावकाः ···· · · वाइसपुर निमित्यर्थं घटापित:।

४. आदि पुराण।

रचयिता महाकवि पुष्पदन्त। भाषा अपभ्रश। पत्र संख्या २१८। साइज १२×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ५०-५६ अक्षर। लिपि सवत् १६६२। विषय—पुराण।

मगलाचरण—

सिद्धि वहूमणरंजणु परमणिरजणु भुवणकमलसरणेसरु।
पणविवि विग्घविणासणु णिरूवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु।

अन्तिम पाठ—

गउभरहु वि मोक्खवि शुद्धमइ विविहकम्मबधेहि चुओ।
फणिखेयरकिन्नरपवरनर पुप्फदत गणसथओ॥

इय महापुराणेति सट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाकइपुप्फदंत विरइए महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहररिसहनाहभरह णिव्वाणगमणं नाम सत्ततीसमोपरिछेउ सम्मत्तो।

लिपिकार की प्रशस्ति—

सवत् १६६२ वर्षे विक्रमादित्य राज्ये·· ···· ··· ···· ····· ···· · · सा नरसिंह तद्भार्या बाउ द्वितीया भाउ। नरसिंह प्रथम पुत्र सा० गुणिया भार्या विल्हो तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम पुत्र देवगुरुशास्त्र-भक्त सा० नरपति भार्या ठकुरी तत्पुत्र सा० ज्ञानचन्द। गुणिया द्वितीय पुत्र सा० मोल्ह भार्या चदणी। तृतीय पुत्र सा० दिउचन्द। चतुर्थ पुत्र सा० दुल्ह। सा० नरसिंह द्वितीय पुत्र सा० ताल्हू भार्या जिणो। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० रावण तद्भार्या वीधो तत्पुत्र सा० विमल्हू। तील्हा द्वितीय पुत्र सा० भोला तद्भार्या दीपो तत्पुत्र सा० दोचा। सा नरसिंह तृतीय पुत्र सा० हेमा तद्भार्या ऊलो। सा० नरसिंह चतुर्थ पुत्र सा० तिहुण तद्भार्या जीवो तत्पुत्र सा० उदा सा० नरसिंह पचमपुत्र तेजू भार्या सोभी। सा० नरसिंह षष्ठम पुत्र सा० वस्तू भार्या कुसूरी। सा० सीधर द्वितीय पुत्र सा० देवीदास भार्या गल्हा तत्पुत्र सा० छाजू सा० पल्हो। सा० सीधर तृतीय पुत्र सा० लोल्ह तद्भार्या जलपही तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र सा० डूंगा द्वितीय गूजर

तत्पुत्रौ भुवि विख्याते नाथू काल्हू च धीधनौ।
लाडी धवेन्द्र राज्याख्यो धणराजपितात्रभौ ॥ १४ ॥
पंचमोऽभयराजाह्वो भार्या दुरगादे पतिः ।
चूहड कुसलाभिख्यो तत्पुत्रौ च वभूवतुः ॥ १५ ॥
अजौ राजो राइसिंहपिताऽजाइवदेप्रभुः ।
धीनड पिता अखैराजः प्रियाऽहीकारदेधनः ॥ १६ ॥
छीतर धीनड तात प्रिया कल्याणदे प्रियः ।
कल्याणाह्वोऽष्टमो रेजे नवमो मनराजकः ॥ १७ ॥
तस्य प्रिये द्वे ज्ञाते लाडी च मन्न सौख्यदे ।
जिनवेश्म कृत येन सूप्रदुर्गे मनोरम ॥ १८ ॥
द्वितीयो गढमल्लाख्य स्त्रिभार्यस्त्रिपुत्रकः ।
दयालऋषभाह्व सुदरैश्च विराजते ॥ १९ ॥
तृतीय पद्मसी नामा झ्यागदे पारदे पतिः ।
टोडरस्यापितरिजे जगरूपपितामहः ॥ २० ॥
तुर्यो जटमल्लाख्योऽभूतजौणादे भर्तृकः पर ।
पंचम साहिमल्लश्च दुरगादे रमणः सुधी. ॥ २१ ॥
वल्हू विराजते षष्ट. भर्त्ता बहुरगदे स्त्रियः।
मत्रीशः पेमराजख्य. उग्रसिंहमहीपते. ॥ २२ ॥
सघेश पेमराजस्य चोग्रसिंह महीपते. ।
मत्रीशस्य वभौ कान्ता सुघारदे च नामतः ॥ २३ ॥
सीतेव रामराजस्य पाडो. कुतीव सुदारी ।
दानत कल्याणवल्लीव रेजे भीव सुता शुभा ॥ २४ ॥
तेनेद शास्त्र लिखाप्य नरेशाय मुनये च दत्त ।
कर्म्मक्षयार्थं वै चिर नदतु भूतले ॥ २५ ॥

प्रति नं० २ पत्र संख्या २७१ साइज ११×५ इञ्च। प्रति मे तीन प्रतियो के पत्र मिलाये गये है। लिपि सवत् १५६४।

लिपिकार की प्रशस्ति —

सवत् १५६४ वर्षे श्रावण सुदी ३ मगलवारे राणापुर नाम नगरे रायश्री हेमकरणराज्ये श्री मूलसघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये टोंग्या गोत्रे ।

५. उत्तरपुराण

उत्तरपुराण । रचयिता महाकवि पुष्पदंत । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ३६८ । साइज १४×४ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४० । ४८ अक्षर । प्रति बहुत प्राचीन है । उक्त ग्रन्थ अपभ्रंश भाषा का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ माना जाता है । इसमें ६३ शलाकाओं के महापुरुषों का जीवन चरित्र वर्णित है। ग्रन्थ के अन्त में महाकवि ने अपना विस्तृत परिचय लिखा है ।

मंगलाचरण—

णमहो णंभालियसमियहो, ईसहो ईसरवंदहो ।
अजियहो जियकामहो कामयहा पणवेवि परमजिणिंदहो ॥

प्रशस्ति तथा ग्रंथ का अन्तिम भाग—

कयतिजोएसुणिरोहु अणिट्ठिउ । किरियाछिण्णाई झाणि परिट्ठिउ ।
णिहिय अघाइचउक्कु अदेहउ । वसुसमगुणसंगेरुणिण्णेहउ ।
रिसिसहसेण समउ अरिछिंदणु । सिद्धउ जिणुसिद्धत्थहो णंदणु ।
अगिंदहि अचिउ सिहिजालहि । अमरिंदहि णवकुवलयमालहि ।
णिव्वुए वीरेणियमयणायउ । इंदभूइ गणि केवलि जायउ ।
सो विउलइरिहे गउ णिव्वाणहो । कम्मविमुक्कउ सासयठाणहो ।
तहिं वासरे उप्पण्णउ केवलु । मुणिहे सुधम्महो पक्खालियमलु ।
तं णिव्वाणहो जंबूणामहो । पचमु दिव्वु णाणु हयकामहो ।
णंदि सु णंदिमित्तु अवरु वि मुणि । गोवद्धणु चउत्थु जलहरझुणि ।
ए पंचइए समत्थ सुअपारय । णिरसियमिच्छामनयभय णीरय ।
पुणु वि साहुजय पोट्ठिलु खत्तिउ । जउ णाउ वि सिद्धत्थु हयत्तिउ ।
दिहिसेणक्कु विजउ बुद्धिल्लउ । गगु धम्मसेणु वि णीसल्लउ ।
पुणु णक्खत्तउ पुणु जसवालउ । पडु णामउ धुअसेणु गुणालउ ।

घत्ता—

अणुकपउ अप्पउ जिणवि थिउ । पुणु सुहछु जिणसुअहरु ।
जसु भहु असवलु अमदमइ । णाणि णावइगणहरू ॥ १ ॥
भद्दबाहु लोहक्कु भडारउ । आयारंगधारि जगसारउ ॥
एयहिं सव्वु सत्थु मणि माणिउ । सेसहिं एक्कु देसु परियाणिउ ॥
जिणसेणु वीरसेणु वि । जिणसासणु सेविउ मयगिरिपवि ॥
पुव्वयालि णिसुणिय सुइभगहे । राएं बहुरिउ दीवियविरहें ॥
पुणु सयरेण सव्ववीरके । पुहईसेण सगुत्तसत्तके ॥

जिणपयणमणविचलियगव्वह । होउ संति णीसेसह भव्वह ॥

घत्ता

इय दिव्वहो कव्वहो तणउ फलु, लहु जिणणाहु पयच्छउ ।
सिरि भरहहो अरुहहो जहिं गमणु, पुप्फयंतु तहिं गच्छउ ॥

सिद्धिविलासिणिमणहरदूय । मुद्धाएवीतणुसंभूए ॥
णिद्धणसधणलोपसमचित्ते । सव्वजीवणिक्कारणमित्ते ॥
सद्दसलिल परिवड्ढियसोत्ते । केसवपुत्ते कासवगोत्ते ॥
वमलसरासइजणियविलासे । सुण्णभवणदेवउलणिवासे ॥
कालमलपावपडलपरिभत्ते । णिग्घरेण णिपुत्तकलत्ते ॥
णयवावीतलायकयण्हाणे । जरचीवरवक्कलपरिहाणे ॥
धीरे धूलीधूसरियंगे । दूरज्झिय दुज्जणससग्गे ॥
महिसयणयलेकरपंगुरणें । मग्गिय पंडियपंडिय मरणें ॥
मल्लखेडपुरवरे निवसंते । मणे अरहंतधम्मु झायंते ॥
भरहमणंज्जे णयणिलएं । कव्वपबंधजणियजणपुलए ॥
कोहणसंवच्छरे आसाढए । दहमइ दियहे चंद रुइरूढइ ॥

घत्ता

सिरि णिरहहो भरहहो वहु गुणहो, कइकुलतिलएं भासिउ ।
सुपहाणु पुराणु तिसिट्ठिहिं मि पुरिसहं चरिउं समासिउ ॥

इस महापुराणे तिसिट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरणाह णिव्वाणगमणं भावितिसट्ठिपुरिस वण्णणा णाम दिउत्तरसय संधी समत्तो।

संवत्सरेऽस्मिन् श्री विक्रमादित्यगताब्दाः संवत् १३९१ वर्षे ज्येष्ठ बुदि ९ गुरुवासरे अद्येह श्री योगिनीपुरे समस्तराजावलि शिरोमुकुटमाणिक्यखचित नखरश्मौ सुरत्राण श्री मम्मदसाहि नाम्नि मही विभ्रति सति अस्मिन् राज्ये योगिनीपुरस्थिता अग्रोतकान्वय नभः शशांक सा० महिपाल पुत्रः जिनचरणकमलचंचरीकैः सा खेतू फेरा साढा महाराजा तूपा एतैः सा० खेतू पुत्र गल्हा आजा एतौ सा० फेरा पुत्र बीधा हेमराज एतैः धर्म्म कर्म्मणि सदोद्यमपरैः ज्ञानावरणीयकर्मक्षयाय भव्यजनाना पठनाय उत्तरपुराण पुस्तक लिखापितं। लिखितं गौडान्वय कायस्थ पंडित गधर्व पुत्र बाहड राजदेवेन।

संवत् १६२३ वर्षे पोष बुदी २ शुक्रवासरे श्री पार्श्वनाथचैत्यालये गढचपावतीमध्ये महाराजाधिराज श्री भारमलकछवाहा राज्ये श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्द देवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा त.त शिष्यमडलाचार्य धर्म्म चन्द्रः तत् शिष्य मडलाचार्य श्री ललित कीर्तिस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साहा चापा तद् भार्या सोना तत् पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सघभारधुरंधर जिनपूजापुरदर साह जाटा द्वितीय साह दामा। सा० जाटा भार्या जैसिरी तत्पुत्र ३ साह नेता भार्या नारिंगदे तत्पुत्र चि० नाथू. सा० खेता भार्या खेतलदे। तत्पुत्र २ चि० नेणा गोपालसाह। चैहथ भार्या चादणदे तत्पुत्र धर्मदास। साह दासा भार्या दौडदे तत्पुत्र चि० पदारथ भार्या पाटमदे तत्पुत्रौ द्वौ पीथाग्रिथा दुतिय पुत्र बरहथ भार्या सरदे एतेषां मध्ये इद शास्त्र लिखापित शील शालिनी देवगुरुभक्ति बहू श्री जैसिरी। अर्जिका श्री मुक्ति दत्त।

प्रति न० २। पत्र सख्या २६। साइज १०½×४½ इञ्च।

संवत् १६१२ वर्षे भाद्रपदमासे शुभशुक्लपक्षे अष्टमीदिवसे प्रीतयोगे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज श्रीरामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री आदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा। तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचद्रदेवा तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवा स्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह लोहट तद्भार्या शीला तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० गोइद द्वितीय सा० दामा तृतीय सा० गोकल। सा० गोइद भार्या सोढी तत्पुत्राश्चत्वारः। प्रथम सा० पासा दु० सा० आसा तृ० सा० आल्हा चतुर्थ सा० पचाइण। सा० पासा भार्या पाटमदे तत्पुत्रास्त्रयः। प्रथम सा० कवरा भार्या कवलश्री द्वि० विगेह तृ० चिरजी हरा। सा० आसा० भार्या आसलदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम श्रीपाल भार्या श्रियादे द्वि० वाछा, तृतीय सा० आल्हा भार्या सुहागदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सोहा भार्या शृगारदे, द्वि० चि० हेमा। चतुर्थ सा० पचाइण भार्या पोसीर तत्पुत्रौ द्वौ। प्रथम चि० वीरदास द्वि० धनेड। द्वि० सा० भार्या चांदी तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० वोहिथ, द्वि० सा० वाला, सा० वोहिथ भार्या वालहदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह सुरत्राण द्वि० साह साधु। सुरत्राण भार्ये द्वे प्र० सिंगारदे द्वि० सुरत्राणदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० गोपाल चि० गढमल द्वि० सा० साधु भार्या साहिबदे। द्वि० सा० वाला भार्या बहुरगदे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० सारग द्वि० माधो। तृतीय सा० गोकल भार्ये द्वे प्रथम उदी द्वि० नोलादे। तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० कुंभा द्वि० सहमा। प्रथम सा० कुभा भार्या कुभलदे तत्पुत्रौ द्वौ० प्रथम चित्राण द्वि० चि० पदमा। द्वि० सा० सहमल भार्या सिंगारदे एतेषा मध्ये साह वोहिथ भार्या वालहदे इद शास्त्र कल्याणकव्रतउद्यापनार्थं आर्यनरसिंघाय दत्त।

८. करकण्डुचरित्र।

रचयिता श्री मुनि कनकामर। भाषा अपभ्रश। पत्र सख्या ६२। साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ४०-४६ अक्षर। प्रति स्पष्ट तथा सुन्दर है विषय—महाराजा करकण्डु का जीवन।

किंत्तिममतियकहवणथकइ , जसुगुण लिंती सरमइ सकइ ।
तहो सुय आहुलग्ल्हेणाहुल , मुणिकणायामर पयउव्वाहुल ।

घत्ता

तहु अणुणएयउ चरिउ , मइजणावए पयडिउ मणाहरउ ।
ते वधवपुत्त कलत्तसहु , चिरु णादउ जार विसिसिहरउ ॥

इय करकंडुमहरायचरिए मुणि कणयामर विरइए भव्वायण कण्णावयसो पचकल्लाणविहाणकप्प तरुफलसपत्तो करकडु सव्वत्थसिद्धिलाहो णाम दहमो परिछेउ समत्तो ।

सवत् १५८१ वर्षे चैत्र बुदि ६ गुरुवासरे घठ्याली नाम नगरे राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये कासलीवाल गोत्रे चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्ष साह काविज तद्भार्या कावलदे तयो पुत्रास्त्रय प्रथम साह गूजर द्वितीय साह रावौ जिनचरणकमलचचरीकान् दानपूजा समुद्यतान् परोपकारनिरतान् प्रस्वस्तिचित्तान् सम्यक्त्वमतिपालकान् श्री सर्वज्ञोक्तधर्म्मानु रजितचेतसान् कुटुबसाधारकान् रत्नत्रयालकृतदिव्यदेहान् आहारौपधा भयशास्त्रदानसमुन्नितान् त्रयो सह बछराज तद्भार्या प्रतिप्रतापदे तस्य पुत्र परमश्रावक साह पचाइण तद्भार्या सीलवती प्रतापदे तत्पुत्रा सा० दूलह एतेपा मध्ये साह बछराज इद श स्त्र लि खाप्य [illegible] भोजा जोगी दत्तं ज्ञानावरणक्षयार्थं ।

९. कर्म्मप्रकृति

मूलकर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्र । टीकाकार अज्ञात । भाषा प्राकृत । सस्कृत । लिपि संवत् १७७७ विषय-सिद्धान्त । मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र के शासनकाल मे नागपुर मे ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी ।

ग्रन्थ समाप्ति

इति प्राय: श्री गोम्मटसारमूलात् टीका च निकाश्य क्रमेण एकीकृत्य लिखिता । श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती विरचित कर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ता ।

संवत् १५७७ वर्षे आषाढ सुदी ३ श्रीमूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य धर्मचंद्रस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये डेह वास्तव्ये पहाड्या गोत्रे सा० ऊधा तद् भार्या लाडी तत्पुत्र सा० फलहु भार्या गुणसिरि तत्पुत्र पचाइण इद शास्त्र नागपुर मध्ये लिखाप्य प्रदत्त ।

प्रत्येक पृष्ठ पर ९ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३३-३६ अक्षर। टीकाकार श्री पंडित प्रभाचन्द्र। प्रति में मूलभाग कम है और टीका भाग अधिक है। प्रति सुन्दर तथा स्पष्ट नहीं है।

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख बुदी ४ शुक्रवासरे भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खटर्काडपुरे राव श्री राव नरवददेवराज्ये बघेरवालान्वये कोटूवागोत्रे सा० गणा तद् भार्या वाल्हू तत्पुत्रौ साह भीखू साह माधौ भीखू भार्या सीलव्रतसयमगुणादिसयुक्ता आल्ही तत्पुत्राः तोलू साह वोहिथ साह खेता नामानस्त्रयः। भोलू भार्या मदना वोहिथ भार्या राजो प्रथमा न्यासंगू तत्पुत्राः साह लाला जीणा चापा, लाखा,। लाला भार्या कान्हू तत्पुत्र ऊधरणा। जीणा भार्या देउ तत्पुत्र नरसिंह। खेता भार्या करमैती एतैः शास्त्र लिखाप्य सत्पात्राय मुनि माघन दिने दत्तं।

१३ चन्द्रप्रभचरित्र।

रचयिता महाकवि यशःकीर्ति। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १२०। साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३०-३४ अक्षर। विषय--चरित्र।

मगलाचरण—

नमिऊण विमलकेवलच्छी सव्वगदिणपरिरंभ।
लोयालोयपयास चदप्पसामियं सिरसा ॥ १ ॥
तिकालवट्टमाणं पचवि परमेट्ठिए ति सुद्धोह ।
तह नमिऊण भणिस्स चदप्पह सामिणो चरियं ॥२॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय सयलवि सुरवइ जिणसथुइ परभत्तिभेयभरसज्जा ।
पंचमकल्लाणहो सुक्ख णिहाणहो करिवि ठाणिसपत्ता ॥
ज सुद्धु असुद्धउ गथचारु ज सारु असारउ वहुपयारु ।
न जिणआणी खमउ सव्वु महुकविगहिल्लहो विलमउ अगव्वु ।
जे परमेसर जाणहि अपारु ते सोहिवि सोहिवि कुणहु सारु ।
मुणिजणपडिय मेल्लिवि कसाउ मोहतु मुणि व इह मुहपसाउ ।
गुज्ज देसहं उमत्तगामु तहिं छदासुउहुउ दोणणामु ।
सिद्धउ तहो णंदणु भव्ववधु जिणधम्मु भारि ज दिण्णु खधु ।
तहु सुउ जिट्ठउ वहुदेवुभव्वु जिं धम्मकज्जि विवकलिउ दव्वु ।
तहु लहु जायउ सिरिकुमरसिंहु कलिकाल करिंदहो हणणसीहु ।

१४ जम्बूस्वामि चरित्र।

रचयिता श्री वीर। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ७६। साइज ११×४॥ इञ्च प्रत्येक पृष्ठ पर १४ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३६-३६ अक्षर। ६२ वां पृष्ठ नहीं है। रचना संवत् १०७६ लिपि संवत् १५१६। विषय—अन्तिम केवली श्री जम्बू स्वामी के जीवन चरित्र का वर्णन।

मंगलाचरण—

विजयतु वीरचरणाग्गि चंपि मंदिरंमि थरहरिए।
कम्मसु छलंततो ए सुनरणि लगत विंदु छकारा॥ १॥

ग्रन्थ समाप्ति

इय जंबूसामिचरिए सिंगारवीरे महाकव्वे महाकइदेवयत्तसुय वीर विरइय बारहअणुपेहाउ भावणाए विज्जुच्चरस्स सव्वह सिद्धिगमणो नाम एयारसमोसंधी परिछेउ सम्मतो।

प्रशस्ति—

वीरसाणसयचउक्के सत्तरिजुत्त जिणंदवीरस्स।
णिव्वाणा उववरणो विक्कमकालस्स उप्पत्ती॥ १॥
विक्कमणिवकालाउ छाहत्तरदससए सु वरिसाण।
माहम्मि सुद्धपक्खे दसम्मी दिवसम्मी संतम्मि॥ २॥
सुणिय आयरियपर पाराए वीरेण वीरणिदिट्ठं।
बहुलत्थपसत्थपय पवरमिणं चरिय मुद्धरियं॥ ३॥
इत्थेवदिणेमेहवणपट्टणे वड्ढमाणजिण पडिमा।
तेणावि महाकइणा वीरेण पयट्ठिया पवरा॥ ४॥
बहुरायकज्जधम्मत्थ कामगोट्ठीविहत्तसमयस्स।
वीरस्स चरियकरणे इक्को संवच्छरो लग्गो॥ ५॥
जस्स कयदेवयत्तो जणणोसच्चरियलद्धमाहप्पो।
सुहसीलसुद्धवंसो जणणी सिरिसंतुआभणिया॥ ६॥
जस्सय पसण्णवयणा लहुणो सुमइससहोयरातिण्णि।
सोहल्ल लखणंका जसइणामेत्तिविक्खाया॥ ७॥
जाया जस्स मणिट्ठा जिणचइ पोमावइ पुणोबीया।
लीलावइ तितईया पच्छिमभज्जा जयादेवी॥ ८॥
पढमकलत्त गरुहो सत्ताण कयत्तविउविपारो हो।
विणयगुणमणिणिहाणो तणाउ तह णेमिचंदोत्ति॥ ९॥
सो जयउ कयवीरो, वीरजिणिंदस्स करियं जेण।
पाहाणमयं भवण पियरुद्दे सेण मेहवणे॥ १०॥

पवयणवयणामय पाणपोट्ठ, अवमयमहामइदलियदुट्ठु ।
जिणणहवणच्चण पूयणमयत्तु, अहिणणियणिहि लविणणायवित्तु ।
मेच्छत्तछत्तछेयणछइल्लु गभोरपरमणिमयमइल्लु ।
जिणपरिभावणउच्छल्लमल्लु सम्मत्त हरणामणमहल्लु ॥
किल्लिल्लवेल्लिणिल्लूरणिल्लु, भायरसुवलक्खणगेह गिल्लु ।
परिवारभारवद्धरणधीरु, जिणगन्धवारिपावणसरीरु ॥
पविहियतियालवेदणविसुद्धि, सुवमत्थभावभावणअसुद्धि ।
बहुसेवयणारसिरघट्टपाय, वदीणहदीणहदियणचाय ॥
भोयणिहियपोसियसूरिविंदु, सउलामरवहकयचदुवदु ।

घत्ता

तहो सोहणहो रसालहो भोयपरालहो—
कलकणिट्ठच्छसहोयर ।
च्छहविमहामइ सोहणरिउवल सोहण—
गुणारोहणविहियायर ॥ १ ॥

गाहुलु साहुलु सोहणमइल्लु, तह रयणु गयणु सतणु जिच्छइल्लु ।
च्छहमहिभायर अल्हणहोभत्त, च्छहमविहो माणासत्तचित्त ।
च्छहमवितहो पयपयरुहदुरेह, च्छहमयणोवयवामदेह ।
साहु लहु सुपियपियममणुज्ज, णामे जयताकयणिलयकज्ज ।
ताह जिणंदणु लक्खणु सलक्खु, लक्खण लक्खिउ सयदलदलक्खु ।
विलसियविलासरसगलियगव्व, ते तिहुअण गरि णिवसतिसव्व ।
सो तिहुवणगिरिभग्गउ जलेण, घित्तउ वलेण मिच्छहि वेण ।
लक्खणु सव्वाउसमाणुसाउ, विच्छोयउ विहिणा जणियराउ ।
सोइत्थ तत्थहिंडतु पत्त, पुरे विल्लरामि लक्खणु सुपत्तु ।
लोक्खणहो समउ सो करइ पणउ, विग्दा णंदणु सम्माणघणउ ।
दिणि दिणि त अइसय वुच्छिजंतु, तहि जिसरोहु णिप्भरुमहतु ।
असरालवारिपोसियसरीरु, भद्दवए पवुट्ठए मेहुणीरु ।
तइ णहाउ णिप्भरु तुसारु, ज एयारहमए मासिफारु ।
ज जिट्ठइ णिट्ठरु तवइ सूरु, खर कर पयंडवम्हडपूरु ।
चिरु वट्ठइ भोकह चित्तु तं जि, सुवणहो सुवणेसहु णेहुजजि ।

अणुहु जिवि संसारिय सुहाइ, सव्वइ दिव्वइ पयलिय दुहाइ।
उव्वहि याहिल सुह रस पयासि, पत्थइ गत्थइ णिव्वुइ णिवासि।

घत्ता

बारहसय सत्तरय पचोयत्तरं, विक्कम कालि विइत्ताउ।
पढम पाक्खि रवि वारइ छट्ठि सहारइ, पूसमासे सम्मत्तिउ॥ ३॥
जो भुवणसरणा समसरणसामिणि, सामि सालसुविसाल।
सिरिहरहोतेमहता अरहंतादि तु कुल्लाणा॥ १॥
जे सुपसिद्ध सुद्धिरिद्धि या बुद्धिवद्धणुद्धारा।
धर धीरधम्मधत्थाते सिद्धासिद्धिनहोदिंतु॥ २॥
जसरममंडकोंवडदडउव्वडकंडखंडणाया।
णिच्चउ गुणाकरडातिसूरिदिंतुस्ससुहं॥ ३॥
णिस्सारसारसंसारसायरेतरणताणतरडा।
ते तस्स मद्दियमोहावोहद्धीदितुउज्झाया॥ ४॥
णट्ठट्ठदुट्ठमयकट्ठभट्ठायातिट्ठगठिणिट्ठवणा।
णिट्ठाएणिट्ठियगा ते साहू दिंतु मंगलयं॥ ५॥
डुक्कमिंदियकम्मह्यिसम्मसामयमयणिम्महणाहरिणाराउसिवमग्गदावतु।
ससागडइणिविडविडवियडतोडणसपावउ।
सम्मछसयणाणाणिरु सम्मच्चरिदविसालु।
तरयणत्तउ सिरिहरहो अहिरक्खउ चिरुकालु॥ ६॥
इति पंडित लाखू विरचित जिनदत्तशास्त्र समाप्त।

संवत् १६११ चैत्र वुदि ११ सोमवासरे श्रवणनक्षत्रे सिद्धि नामा योगे आम्रगढमहादुर्गे श्री नेमीश्वर चैत्यालये राज श्री भारमल्ल राज्य प्रवर्त्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नंद्याम्नाये श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये ....शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्य ब्रह्म वेगो इद शास्त्रं भीवीलाय पठपार्थं दत्तं।

१६. धनकुमारचरित्र।

रचिता श्री पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या ५१ साइज ६॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रत्येक पक्ति मे २८-३२ अक्षर। प्रति अस्पष्ट है। लिपि संवत् १६३६. ग्रन्थ कर्त्ता ने प्रारम्भ और अन्त दोनों स्थान पर प्रशस्ति लिखी है।

तहु भज्जा सील गुणस्स खाणि, सव्वहियणाइ तिथयरवाणि ।
तिहुवण सिरि मुणियण पयविणीय, सिरि हरसिरि जिमराहब्रहु णीय ।
एयहिँ सुजणिश्र चारिपुत्त, लक्खण लक्खकय विणयजुत्त ।
णियकुलमयकु पुणु पढमु ताहु, भुल्लणुजिमहु पयडउ जखाहु ।
वीयउ पुणु कुहयणजणनिव सु, सिरि सूले णामे जसपयासु ।
तइयउ णंदणु सुयणावय रु, सिरि कामराजु णामेण साहु ।
चउथउ णंदणु आसुणिणवासु, आसलु णामे सो कुल पयासु ।
पयहिं जो पढमउ गुणगरिट्ठु, सिरि भुल्लणुणामे साहु सिट्ठु ।

घत्ता

आरउणपुरवरे सुहलद्धीघरे, तहि पहुवइरिणिकंदणु ।
तोमर कुलमंडणु अरि सिरिखंडणु, सिरि गणेस णिवणंदणु ॥ ३ ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

णंदउ जिणसासणु दुरियविणासणु सुहसयसासणु गुणभरिउ ।
भरु सत्थसमिधउ बुहयणहिसुघउ णंदउ महियलि इहु चरिउ ॥ ४ ॥

णंदउ महिवइ णायपवीणु, णंदउ सज्जणयणु भरियदीणु ।
णंदउ सुधम्मु सिवसोक्खयारि, णंदहु जइवरवयभारधारि ।
इक्खायवंसमंडणमंयकु, सिरि पुण्णपालसुउ विगयसकु ।
णंदउ भुल्लणु णामेण साहु णिउरादेवल्लहु दीहवाहु ।
महुहोज्जउ विमलसमाहिवोहि, जादुग्गइ गमणहु पाहणिरोहि ।
णियकालें वरसउ मेहमाल, णिहणिहि समुहु मगल वमाल ।
बहु अथसमिद्धउ चरिउ एहु, परिपुण्णकरि-विसवेयगेहु ।
पढियणसमप्पिउ पावणासु, भुल्लणहुहत्थपयडियपयासु ।
तेण जिणिय सीसिचडाविऊण, पुणु पंडिय पुज्जिउ पणमिऊण ॥
लेहाविविवहुपुथयलितेण, महिविथारिउ पुणउ सुवेण ।

घत्ता

गुणमुणिहु पसाएं पयडियराए सिद्धउ कव्वर सायरु ।
सोवाइ जतउ अथ सयतउ, वट्टउ सुहसयभायणु ॥ ४ ॥

संवत् १६३६ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षे सताम्यां तिथौ अर्कवासरे श्री जिनचैत्यालयादि मूलनायक श्री चन्द्रप्रभस्वामी विराजमाने मारुवाड देशे श्री मेदनीपुरवरे अज्ञानांतमरदिनकर विधुरिजिन-शरणमज्जनानंद नृपवर लक्ष्म वल्लभे राज श्री पातिसाह श्री अक्कब्बर जलालदीमहंमदराज्ये। पायदामहमदखानराज्ये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये उभयभाषाप्रवीण भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे सिद्धान्तजलसमुद्रविवेककलाकमलिनीविकाशनमर्त्तण्ड भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे विद्याप्रधानचारुचारित्रोद्वहनभट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे वादीभकुंभविदारणैक केशरा भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा स्तत् द्वितीय शिष्य दुद्धरपंचमहाव्रतधारणैकप्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्ति तत् शिष्य पंचाचारचरणचतुरान् भेदाभेदरत्नत्रय आराधकान् स्मरसारंगविदारणैकमृगेंद्रान् श्रीमत् भुवनकीर्त्ति तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्त्ति भव्यकुमुदविकाशनैक निशाकर द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री विशालकीर्त्तिः तस्य शिष्य दुर्द्धरपंचमहाव्रतधारणैक प्रचंड श्रीमत् मंडलाचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्र स्तदाम्नाये खंडेलवालवंशे पहाड्योगोत्रे पूजापुरन्दर साह फाल्हा भार्या फूलमदे पुत्र चत्वारि प्रथम पुत्र साह वीहड द्वितीय पुत्र साह जोधा तृतीय पुत्र साह मन्ना चतुर्थ पुत्र साह मेहा तस्य तृतीय पुत्रः सीलव्रतावगाढ परिपालान् श्रीमत् सुदर्शनावतार साह श्री लूणा तस्य भार्या लूणादे तस्य पुत्र साह श्रीवंत भार्या सुहलालदे तस्य पुत्र द्वितीय साह चि० वीदा द्वितीयपुत्र चिरजीव धनराजेन साह मन्ना भार्या मयणश्री पुत्र साह श्री लूणाकेन पुण्यार्थेन पुस्तकं लिपि कारायितं बाई श्री करामाई केन घटापितं।

१७. धर्मपरीक्षा।

रचयिता पं० हरिषेण। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ८८ साइज ११×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०–३५ अक्षर। विषय–धार्मिक। प्रथम पृष्ठ नहीं है।

प्रारम्भिक पाठ—

सिद्धि पुरंधिहिं कंतु, सुद्धे तणु मणवयणे।
भत्तिए जिणु पणवेवि, चिंतिउ बुहहरिसेणे॥ १॥
मणुए जम्मि बुद्धिए किं किज्जइ, मणहरजाइ कव्वुण[1]रइज्जइ।
तं करंत अवियाणिय आरिस, हासुलहहि भडरणि गय पोरिस।
चउमुह कव्वु विरयणि सयंभुवि, पुप्फयंतु अण्णाणु णिसुंभिवि।
तिण्णिविजोय जेण तं सीसइ, चउमुह मुहथियतावसरासइ।
ते एव विहहउ जडमाणव, तह च्छंदालंकार विहीणउ।
कव्वुकरंतु केमणविलज्जमि, तह विसेस पियजणकिह रंजामि।
तो वि जिणिंद धम्मअणुरायइ, बुहसिरिसिद्धसेणसुपसाइ।
करमि सइ[2] जिण[3]लिणिदलथियजलु, अणुहरेइ णिरुवमु मुत्ताहलु।

---

१ सुलहहिरेण २ सय ३ जेन

१
ते णदहु जे भत्तियभावहि, तेणंदहु जे लहहि लहात्र्'हि ।
२
ते णिय परदुह दूरि लुढावाहि, जो पुणु केविहु पढहि पढाव'हि ।
ताण णिरतर सोक्खइ सुहडहि, एयहु अत्थुकेविजे पयडहिं ।
३
जे णिसुणेविपरिक्खहि भत्तिए, ते हुं जहिं णिम्मल मइ सत्तिए ।
सयल पाणि वग्गहो दुहुहिज्जउ, सोसमिद्धिए महिसोहिज्जउ ।
परहिय करणि मिहडिय अहहो, होउ जिणत्तणु चउविह संघहो ।
४
पयडिय पहुपयावआरिवारि, णदउ भुवइ सहो परिवारि ।
धम्मपवत्तणेणणंदुहहारें, णंदहु पयवहु अइववहारें ।

घत्ता

५
संखदुसहसुसयाहिउ सदरसयाहिउ, इउकहरयणु अग्गव्वहं ।
जाहरिसेणधराधर ववहि-गयणधर, तामजणउं सुहु भव्वहं ॥

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिट्ठियाए बुह हरिसेण कयाए एयारसमो संधि परिछेद सम्मत्तो ।

१८. नागकुमार चरित्र ।

रचयिता श्री महाकवि पुष्पदत । भाषा अपभ्रंश । पत्र सख्या ७०, साइज ११×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३३-३७ अक्षर । लिपि सवत् १६१२.

मंगलाचरण—

पणवेप्पिणु भावें पचगुरु, कलिमलवज्जिउ गुणभरिउ ।
आहासमि सुयपचमिहि फलु, णायकुमारचारुचरिउ ॥ ध्रुवक ॥

महाकवि ने प्रारम्भ मे अपना परिचय इस प्रकार लिखा है—

घत्ता

सिरिकन्हरायकरयलि णिहियां, असिजलवाहिणि दुग्गयरे ।
धवलहरसिहरहयमेहउले, पविउलं मण्णखेडणयरे ॥ १ ॥

---

१ दावहि २ हरे ३ जे जु ४ आरिवारें ५ संखए दुसहसुसेहिउ इय कयरयणु अगव्वह । जो हरिसेण धराप्परउ वहिगयणिवर तामजणहु सुहु भव्वहं ।

पहु भत्तिए हंसु वसुमाणु दिट्ठु, पर णएणु ण वाणरु णरु विसिट्ठु ।
गंगेउ संचे जणियतुट्ठि, पर णएणु ण वइरिहिं देइ पुट्ठि ।
धम्मेण जु हिट्ठिलु धम्मचत्तु, पर णएणु पत्तासदुहिंण चत्तु ।
चाएण कण्णु जणदिण्णचाउ, पर णएणु न बंधुहु देइ घाउ ।
कतीए मणोहरु छणससंकु, पर णएहु णउ दीसइ कलंकु ।
गरुयत्ति मोहसुविसुद्धचरिउ, पर णएणु ण किडिदाढइ धरिउ ।
सुथिरत्तें मेरु भणंति जोइ, पर णएणु पुरिसु पत्थरु ण होइ ।
सायरु व गहीरु कयायरेहिं, पर णएणु णो मथिउ सुवरेहिं ।

घत्ता

जो वणिणउ वण्णिउ वरकइहिं, आवे णियमणि भावहिं ।
तहु णएणहु केरउ णामु तुहु, सुललियं कवि चडावहिं ॥ ४ ॥
णिच्चेलत्तणु केसालुचणु, णिच्चणिमेज्जादेहाउंचणु ।
ण्हाणविवज्जणु दंताधोवणु, कालइ णीरसु परवसु भोयणु ॥
धरणिसयणु रइरससकोयणु, दूसहदसमयमुहणिवणु ।
पिसुणाकोसणु ताडणु बंधणु, चउयायंवहंलंकपवणइ ॥
धाराहरजल आसारवणइ, सिसिरोसाकणहरमरु वेयइं ।
हिमपडणइ णिदट्ठतणु तेयइं, उन्हइ सोसियंगरसभेयइं ॥
वणतरुणिहसणु सिहि सिहवणइं, गुहगयभीमोयरसहवसणइं ।
कठोलवियविसहरचलणइ, सीहावग्घजीहादलघुलणइं ॥
कोलघोरघोणाणिल्लुणणइं, सवरगयगंडयकंडयकंडुयणइं ।
एव माइदुक्खाइ सहेप्पिणु, रणिणवसेप्पणु भिक्खचरेप्पिणु ।
सत्तु वि मित्तु वि मरिसु गणेप्पिणु, मिउ भु जेप्पिणु णिंदजिणेप्पिणु ।
भोयभुयंगविउ सुमरेप्पिणु, मणिजगभगुरत्तु भावेप्पिणु ।
सुक्कज्झाणु मणि आऊरेप्पिणु, मोहमहारि राउ मिल्लेप्पिणु ॥
कम्मकसायराय तडेप्पिणु, दढकम्मट्ठगंठि मिल्लेप्पिणु ।
जुत्तायारु तिगुत्तिहिं गुत्तउ, चउहु मि तेहिं रिसिहिं सजुत्तउ ॥

घत्ता

कंति अणगु अणगु हुउ, पत्तउ मोक्खु अणंगवियारउ ।
पुप्फयंतसुरणमियपहु, पसियउ णायकुमारु भडारउ ॥

उपएणउ दीवा उरिरवएणु । वुहु माणिकु णामे वुहहि मएणु ।
तत्थतरि सावउ इक्कुपत्तु । वयदाणसीलसियमेणजुत्त ।
वुहयणरजणु गुणगणविसालु । विछिएणवत्थदिप्पतभालु ।
घमत्थ ामसेवतु सतु । तस जीवदयावरु सिरिमहंतु ॥
मेरुव्वधीरु गुणगणगहीरु । जिणगधो वयणिम्मलसरीरु ॥
णरवइ सहमडणु सव्वभासि । गोहाणगोहु सुयसीलरासि ।
चदुव्वभुवणसतावहारि । वररूवमउएणउ ण मुरारि ।
छहअंग वहूसिउ ण महेसु । मदारयपुज्जिउ णमहेसु ।
जिणपयसी संकउ णीलकेसु । रमदंसणपालउ सुयणतोस ।
सिरि ठाकुराणि जिण धम्मधुरधरु । सुरवइ करभुयजुयलेहि विमलु ।
सिरि जइसवाल इक्खाक्कुवस । चउजगसीणदणु सुच्छवंस ।
टोडरुमलुणामे घरपयलु । ज कित्ति तिलोयह पूरिथिरु ॥

घत्ता

ते आइ वि जिणहरि णयणाणंदणि, अइणाहु जिणवदियउ ।
पुणु दिट्ठउ पडिउ भवियणमंडिउ, अइविणय अब्भत्थियउ ॥

अष्टमी सधी परिच्छेद के वाद—

जइसवाल कुलसपन्नो, दानपूयपरायणः ।
जगसी नदनः श्रीमान, टोडरमल्लु चिरजियः ॥
वस्तुपाल इव ख्यातो, मध्यलोके वभूव यः ।
टोडरमल्लु ते साध्वा, वद्धंता कामलोचने ॥

अन्तिम पाठ—

सिरि णायकुमारचरिउ खालु, पभणिउ कइयणपुव्वहि ।
जो भव्वहभासइ लिहइ सुणइ मई ते सिवसुह्न माणिक्क लहहि ॥

इय णायकुमारचारु चरिये विवुहचित्तारजणु पडिय सिरिमणिक्कराज विरइए चउधरी जगसी पुत्त राइरजण टोडरमल्लणामंकिए सिरि णायकुमारु वालि महावालि छेया भेया णिव्वाण गमण णवमो सधि परिछेउ समत्तो ।

प्रशस्ति—

णदउ जिणवरिंद जिणसासणु । दय धम्मु विभव्वह आसासणु ।
णंदउ णरवई पइपालतउ । णदंउ मुणिगणु सुत उतवंतउ ।
णदउ जिण सुहमाग्गीचरतउ । भवियणु दाणपूयविरयतउ ।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १५९२ तत्र पोष मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ भौमवासरे श्री गलत शुभस्थाने श्री पातसाहि हूमायू राज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्कर-गणे श्री भट्टारक श्री मलयकीर्त्तिदेवान् तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्रदेवान् तत्पट्टे मुनि क्षेमकीर्त्तिदेवान् तदाम्नाये मुनि श्री धर्मभूषणदेवान् तदाम्नाये ब्रह्मचारी मुनि छाजू तत् शिष्य श्री मुनि ब्रह्मचारि पदमा एतत् इक्ष्वाकुवंशे श्री गोत्रे भंडारी श्री जयमवाल वंशाम्नाये श्री पंचदशलाक्षणीकव्रतपालकान् पंचमी उद्धरण धोर साधुवरस्थावसे तस्य भार्या शीलतोयतरंगिनी विनय वागेश्वरी तस्य नाम सुनखो। तत्पुत्र तृतीय ज्येष्ठ पुत्र गुण गरिष्ठ साधू दासू——।

२०. पद्मपुराण।

रचयिता श्री पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ६०. साइज १०||×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०–५४ अक्षर। विषय—पुराण। प्रति जीर्ण अवस्था में है। लिपि संवत् १५५१ ग्रन्थ का दूसरा नाम बलभद्र पुराण भी है।

मंगलाचरण—

परणयविद्धंसणु मुणिसुव्वयजिणु, पणविवि बहुगुणगणभरिउ।
सिरि रामहु केरउ सुक्खजणेरउ, सह लक्खण पयडमि चरिउ।

ग्रन्थकर्त्ता की प्रशस्ति—

सिरिआइणाहु भव्वयणइट्ठु, पणवेप्पिणु लोयत्तयवरिट्ठु।
पुणु सन्मिपहु धम्मामयसवंतु, भव्वयणहु भवतवहासमंतु।
तहि संति वि जीवदयापहाणु, जि भासिउ महियलि विमलणाणु।
पुणु वड्ढमाणु चरमिल्लुदेउ, सो सव्वहु जीवहं करउ सेउ।
पुणु ताहु वाणिज्झाए विचित्ति, लोयत्तमगामिणि अण्णदित्ति।
पुणु इंदभूति गणहरु णवेवि, सो धम्मु वि जंबूसामि तेवि।
पुणु ताह अणुक्कमि देवसेणु, इंदियभुयगणिद्दलणवेणु।
पुणु विमलसेणु तह धम्मसेणु, सिरि भावसेणु गयमच्छरेणु।
तह सहसकित्ति आयमपहाणु, तह पट्टिणि सव्वउ गुणनिहाणु।
गच्छहं णाइकु सिद्धि गुण मुणिंदु, सद्दत्थपयासणु विगतंतदु।

घत्ता

तहु पट्टि जईसरु णिहयर ईसरु जसकित्ति वि मुणियणतिलउ।
तहु सिस्सु पहाणउ तवंवयठाणउ, खेमचंदु आयमणिलउ॥ १॥

णरूभउ पाविवि करणीउ एम भवदहिणिवडणुणो होइजेम।
चित्तिव्वउ दसणु णाणु इट्ठु, चरणु वि पुणु लोयत्तय वरिट्ठ।
धम्मु जि दहलक्खणलोयसारू, सेविव्वउ एवु भवण्णसारू।
विणु धम्मे जीउ ण सुक्खि थाई, ति विणु केरचिडिउ विसयलु जाइ।
इह चिंतवि पुणु गउ साहु तत्थ, अच्छइ पिडिउ जिणगेहि तत्थ।
वहु विणएं पुणु विण्णतु तेण, कर आरोप्पेविणु णियसरेण।
भो रइधू पडिव गुणणिहाण, पोमावइ वरवसह पह ण।
सिरिपालह वम्ह आयरियसीस, महुवयणु सुणहि भावुह गरीस।
सोढल णिमित्ति णेमिहि पुराणु, विरयउ जहपइ जण विहियमाणु।
तह रामचरित्तु विमहु भणेहि, लक्खण समेउ इउमाणि मुणेहि।
मुहु साणुराउ कहमिरजेण, विण्णतिमज्भु अवहारि तेण।
मुहु णामु लिहहि चंदहु विमाणि, इय वयणु सुद्ध णियचित्तिठाणु।

घत्ता

इय णिसुणिवि भणियसवणइ, पडियण ताउत्तउ।
हो हो किं वुतउ एहु अजुत्तउ, हउ गह कम्मे गुत्तउ॥ ४॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

भव्वह गुणणंदउ कियसु कम्मु, अरु णदउ जिणवर भणिउ धम्मु।
राउवि णदउ सुह पयसमाणु, णदउ गोवगिरि अचलठाणु।
णदउ पुणु हरसीहसाहु एत्थु, जि भाविउ चेयण गुण पयत्थु।
सह अणिमंतु जसु फुरइ चित्ति, कलिकालधरियजिणाणि सत्ति।
सिरि रामु चरित्त विजेणएहु, कराविउ सव्वहं जणिय णेहु।
तहु णंदणु णामें करमसीहु, मिच्छतमहाउयदलणसीहु।
सो पुणु णंदउ जिणचलणभत्त, जो रायमहायणि माणु पुत्त।
सिरि योमावइ परवालवंसु, णदउ हरसी सघवी जससु।

घत्ता

वालोहमहणसिद्ध चिरुणदउ इह, रइधू कइतीयउविधरा।
मोल्हिक्क सम्माणउ कलगुणजाणउ, णदउ सहियलि सोवियरा।

इय वलहद्द पुराणे वुहयणविंदेहि लद्धसम्माणे सिरि पडिय रइधू विरइय पाइयवधेण अथ विहिसहिए

प्रियछदाणुग मिनी वधू जटो तयो पुत्र दुइ प्रथमपुत्र दयालदास तस्य भार्या सुन्दरी द्वितीय पुत्र रामदास तस्य भार्या सुन्दरी। साह खिउपाल तृतीय पुत्र जिनशासन उद्योतकारी जिनप्रतिष्ठाकरण इद्रस्वरावतार भूपति सभा शृंगारहार चद्रमा इव द्योतकारी विवेकसुन्दर साधुमनोहर तस्य भामणा प्रियछदाणुगामिणी भार्या नगीना तयो पुत्र चतुरभुज तस्य भार्या भागऊंतो एतेषा मध्ये साह खिउपाल तस्यपुत्र चतुर्विधदानदायक साह अगरमल्ल तेनेद शास्त्र बलभद्रपुराण लिखापित। लिखाय करि बाई जिंदो नैदत्तं पठनार्थ। लिखत पाडे केशा। शुभ भवतु।

२१. परमेष्ठि प्रकाशसार।

अपभ्रंश। पत्र सख्या १८८ साइज ६॥×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ८ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ३३ ३६ अक्षर। प्रथम दो तथा १८७ का पृष्ठ नहीं है। विषय धर्म। प्रति प्राचीन है।

तृतीय पृष्ठ का प्रारम्भ—

घत्ता

गयसासयठाणइ सिद्धपहाणइ, कम्मरहिय गुणअट्ठजुवा।
इय पणपरमिट्ठिहिं केवलदिट्ठिहिं, रयणत्तयलहिकम्मचुवा॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय सिद्धिसरुवइ सिवसुहदूवइ, णिसुणि वि जे णिच्छउ करहें।
सुयणाणणिरिक्खिवि, सुमरणिहरि वि धम्मु अहिंसाते धरहें॥ १॥
इय परमिट्ठि पचजगसारइं। भवियह जे भवदुत्तरतारइ॥
तह गुणपयडइ जिणवरवाणी। जा तयलोयपवित्तपहाणी॥
गणहरदेवपमुहमुणिरायइ॥ पयडहिं ते चहुरिद्धिविरायइ॥
इदपमुह जे सुरवरवग्गइ। मुणिहियो तह गुणगणइणि सग्गइ॥
तहं पडिविवतिजयजहजत्थइ॥ सुरणरअक्चहि ते सुपसत्थइ॥
तह अणु मग्गमुणिविदइं। पुज्जणिज्ज ते तिहुयण चंदइ॥
तह गुणपूयरयहि जे भव्वइं। पूयहिं ते हि ण रामरसव्वइं॥
जे तहिं थुत्त पढहि तयक लइ। तह थुइ करहिं अमरअसरालइं॥
ते तह णाम जवहि एकग्गाइ। जे तह धम्मचित्त अणुरायइ॥
हो हि अमरणर सुक्खविरायइ। जे तह धम्मु पसंसहिं चिराइं॥

तेहि लिहाइ णाणागथइ। इय हरिवसपमुहसुपसत्थइ।
विरइय पढमंतमहि वित्थारिय। धम्मपरिक्खपमुहमणहारिय।
पढहिं भव्वजह पडिय लोइयइं। सातहोइ सुणि अत्थमणोयइ।

घत्ता

पुरणयरणरेसह गोमह देसह—
मुणिगणसावयलोयसहें।
धणुकंणु मणिसारइ धम्मद्धारइ
करहि सति परमिट्ठिपहो॥

इय परमिट्ठिपयाससारे अरुहादिगुणेहि वरणणाणलकारो अप्पसुद सुदकित्ति जहासत्ति महाक विरयतो णाम सप्तमो परिछेउ समत्तो इति परमेष्ठिप्रकाशसार ग्रथ समाप्तः।

२१. पाण्डवपुराण।

रचयिता मुनि श्री यशःकीर्त्ति। भ षा अपभ्र श। पत्र सख्या ३४७, साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्ये पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८। ४२ अक्षर। लिपि सवत १६३६ रचना सवत्।

प्रारम्भिक भाग—

वोयसु सरधयरट्ठहो गयधयरट्ठहो सिरिलालमु सोरट्ठहो।
पणवेवि कहमि जिणिट्ठहो णुयवलविट्ठहो कह पंडवधयरट्ठहो।

ग्रन्थ के प्रारम्भ मे दी हुई प्रशस्ति—

× × × × × × ×

सिरिसरवण उववणगिरि बिसालु, गंभीरपरिहउत्तगसालु।
तहि निवसइ जालपु साहु भव्वु, णिउजी भज्जाल किउ अगव्वु।
सिरिअयरवल वसह पहाणु, जो सयहं वच्छलु विगयमाणु।
तहो णदणु वाल्हागयपमाउ, नवगावनयरे सो सइ जिआउ।
आवप्पिणु हितमक्खानु दिट्ठु, तेणवी सम्माणिउ किउ विदिट्ठु।
घेनाही तहो पियणाम सिट्ठ, गुरुदेवभत्तपारयणह इट्ठ।
तहो णदणु णंदणु हेमराउ, जिणधम्मो वरि जसु णिच्चभाउ।
सुरतानसमारखतणइंरज्जे, मतित्तणे थिउ पियभाररुज्जे।

घत्ता

जें अरहंतु देउ मणिभाविउ, जासु पहुत्ते को वि ण ताविउ।

त णिसुणिवि जंपिउ मुणिवरिंदु चणउ पुच्छिउ चुरयणह चंदु ।
पउम चरित्तु अइगहणु जइवि, तुम्हवरोहें हउ कहमि तइवि ।
ता तहो वयणें गुणगणमहंतु, पारंभिउ सद्दत्थह फुरंतु ।
सज्जणदुज्जणभउ परिहरेवि णियणियसहावरत्त विदोवि ।

घत्ता

सज्जणु वि सहावु अकुडिलभावु, ससिमेहु व उवयारमइ ।
परदोस पयासिरू अवगुणभासिरू, दुज्जणुसाधु व कुडिलगइ ।

अन्तिम भाग—

पढमहिं वीरजिणंदे अक्खिउ, पढ़इ गोयमेण णउ रक्खिउ ।
सोहम्मे पुणु जंबूसामें, विण्हुकुमारें णिग्गयणामें ।
णंदिमित्त अवरज्जिय णाहें, गोवद्धणेण सुभद्दसहावें ।
एमपरंपराइ अणुलग्गउ, आयरियाह मुहाउ आगउ ।
सुणसंक्खेवसुत्तु अवहारिउ, मुणिजमकित्तिमहिहि वित्थारिउ,
पद्धडिया छंदो सुमणोहरू, भवियणजणमणसवणसुहकरू ।
करेवि पुण्णु भव्वह वक्खाणिउं, दिट्ठुमिच्छत्तु मोहु अवमाणिउं ।
जं हीणाहीउ किंपिविसाहिउं, तं सुयदेवि खमउ अवराहउं ।
जो इहु चरिउ वि पढइ पढावइ, वक्खाणेप्पिणु भवियणदावइं ।
जो पुणु सद्दहेइ समभावें, सो मुच्चइ पुव्वकियपावें ।
जो आयरइति सुद्धि करेप्पिणु, सो सिउ लहइकम्मछिंदेप्पिणु ।
जो पुणु एय चित्तु णिसुणेसइ, सगु मोक्खु सोसिग्घुलहेसइ ।
एउ पुराणु भवियह आसासइ, अ युविद्धि जसुरिद्धि पयासइ ।
वइरिउ मित्तत्तणु दरिसावइ, रज्जत्थिउ विरज्जु संपावइ ।
पियकलत्त पुत्तत्थिउ त पुणु, रज्जभट्ठु पुणु रज्जु चउग्गुणु ।
इट्ठ समागमु घणु सपावइ, गउ परएसु सिग्घु घरु आवइ ।
लाह सुहत्थिउ लाह सुहाइवि, देव देहिवरू मच्छरू मुचिवि ।
साणुग्गहग्गहसयलपयट्टहि, मिच्छा भावखणद्धें तुट्टहिं ।

घत्ता

आवइं सव्वइं जाहि खउ सपइ सुहचरि पइसहिं ।
पउमचरिउ सुणंताह विवाहविलासइं विलसहि ॥

केसवदासराज्यप्रवर्त्तमाने छावडान्वये स० रेडा तद्भार्या रयणोद तत्पुत्रौ द्वौ । प्र० सा० पदाथ द्वि० सा० जिणदास । सा० पदार्थ भार्या पौसरि तत्पुत्रास्त्रय, प्रथम सा० नाथू द्वि० सा० श्री राणा तृतीय सा० हरदास सा० नाथू भार्या तूनी तत्पुत्र सा० गोपाल भार्या प्रथम गोरादे द्वि० सुहागदे तृतीय लाडी, तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० रामसिंह द्वि० सकरदास तृतीय चि० उदयराज । द्वितीय सा० श्री राणा भार्ये द्वे प्रथम रयणादे द्वितीय लाडमदे तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम सा० रूपसी द्वि० मा० मेखा, सा० रूपसी भा० द्वे प्रथम सुरूपदे द्वि० उछरगदे तत्पुत्रास्त्रय चि० रामसी चि० खीवसी चि० साहमल्ल । द्वि० सा० शेषा भार्ये प्र० सुहलालदे द्वि० कोडिमदे तत्पुत्र चि० दुर्गादास । तृ० सा० हरदास भार्या हषमदे तत्पुत्रास्त्रयः सा० पूरण सा० नेतसी सा० साधू । सा० पूर्ण भार्या कपूरदे तत्पुत्र चि० प्रतापसिंह । सा० नेतसी भार्या नवलादे तत्पुत्रास्त्रय चि० नारायण चि० मानसिंह चि० सुरत्राण साधू भार्या सुजाणदे द्वि०. सा० जिणदास भार्या द्वे० प्रथम मनी सफलादे तत्पुत्र पच सा० कूंजा भार्या कुसुभदे, द्वि० सा० करणा भार्या करणादे तृतीय सा० भाप रभार्या सावलदे चतुर्थ कान्हड एतेषा मध्ये सा० राणा भार्या लाडमदे हरदास भार्या हरषमदे एताभ्या इद पाडव पुराणशास्त्र लिखाप्य आचार्य श्री हेमचन्द्राय घटापित पोडशकारणव्रतोघापनार्थं ।

प्रति न० २ पत्र सख्या ४७१ साइज १०॥×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रत पत्ति अक्षर । प्रति पूर्ण स्पष्ट और सुन्दर है । लिपि सवत् १६१६ ।

सवत् १६१६ वर्षे भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी तिथौ बुद्धवासरे धनिष्ठानक्षत्रे आमेरमहादुर्गे श्री नेमीनाथ जिनचैत्यालये श्री राजधिराज भारमल्ल राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसघे नंघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुदाचार्यान्वये भ० श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० झाझू तद्भार्या होली तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० ठाकुर द्वि० सा० छाहड तृतीय साह थेल्हा चतुर्थ सा० चाचा । सा० ठाकुर भार्ये द्वे प्रथम डीडी द्वि० लाछि तत्पुत्राः सप्त प्रथम चतुर्विधदान वितरण कल्पवृक्ष जिनपूजापुरदर सोलगागेव साह तेजा द्वि० कल्हा तृतीय सा० लूणा, चतुर्थ सा० हर्ष्यौराज पचम साह उदा षष्ट साह वोहिथ सप्तम सा० रेखा। साह श्री तेजा भार्ये द्वे प्रथम त्रिभुवनदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह लोहट द्वि० अगारदे । द्वि० हठू, भर्या हरखमेद । द्वि० साह केल्हा भार्या केवलदे तत्पुत्रा पच प्रथम सा० नारायण द्वि० नरवद तृतीय गोपाल चतुथ चिरजीव सारग पचम साह पदारथ । साह नारायण भाया नारगदे, साह नरव दभार्या नरवददे तत्पुत्र चि० घीनड, सा० गोपाल भार्या गौरादे, तृतीय साह लूणा भार्या ललितादे तत्पुत्रौ द्वौ० प्रथम साह हूलू द्वि० भूणा । साह हूलू भार्या हुलसिरी । प० साह ऊदा भार्ये द्वे० प्रथम उत्पोदे द्वि० लाडी षष्ट साह वोहिथ भार्या वहुरगदे तत्पुत्र चिरजीव देवा द्वि० साह छाहड भार्या छाहडदे तृतीय थेल्हा भार्या थिल्हसिरी तत्पुत्रास्त्रय प्रथम साह हीरा द्वि० साह हेमा तृतीय साह नाथू । साह हीरा भार्ये द्वे प्रथम

सिरि माहवसेणु महाणुभाउ, जिणुसेणुसीसु पुणु तसु जाउ।
तसु पुव्वसिरोहिं पउमकित्ति, उप्पण्णु सीसु जगु जासुचित्ति।
तें जिणवरसासणभाविएण, कह विरइय जिणमणहोमएण।
णा खमयदोमविवज्जिएण, अक्खरपयजोडियलज्जिएण।
त्तकइत्त विजणेसुकइत्तहोइ, जइ सुरणहि भाव्इएत्थु लोइ।
जइ अम्हिहि चुक्किवि किंपि कुत्तु, खामयन्वउ सुयणहि तणिरूत्तु।

घत्ता

रिसिगुरुदेवपसाए कहिउ असेसुविचरिउ मइ।
पउमकित्तिमुणिपुंगणपु गवहो देउ जिणेसरू विमलमइ॥

इति पार्श्वनाथचरित्त समाप्त।

जयउविरुद्ध एयं णियाणवध जिणिंदतुहसमए।
तह वितहयचलणकित्तिण जउ पोमकित्तिस्स॥ १॥
इयं पासपुराणं भमियापुहवीजिणालयादट्ठ।
एवहि जीवियमरणे हरिसविसाउणपउमस्स॥ २॥
सावयकुलम्मिजम्मो जिण चरणाराहण कइ कइत्तं च।
एयाइ तिण्णिजिणवरभवे भवे होतु पउमस्स॥ ३॥
[१]एयसयइ वाणऊरा रत्तियमासे अमावसीदिवसे।
लिहियं पासपुराण कइणा इह [२]पउम णामेण॥ ४॥

सवत् १६११ वर्षे अषाढ वुदि ६ दिने शुक्रवासरे आल्हणपुरथाने श्री मल्लिनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नघाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य वसुधराचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये चौवरी गोत्रे साह गोगा तद्भार्या गारवदे तत्पुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र साह भादा द्वि० साह महाराज। साह भादा भार्या भावलदे तयो. पुत्र चिरंजीव वूचा तद्भार्या बहुरगदे। सा० महाराज तद्भार्या सैणा तयो पुत्र सद्गुरूपदेशनिर्वाहक चतुर्विध दान कल्पवृक्ष साह घेल्हा भार्या हरषमदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम चिरंजीव सुरत्राण द्वि० भीमसी एतेषा मध्ये साह महाराज तेनेदंपार्श्वनाथचरित्र षोडशकारणव्रतोद्यापनार्थं वसुन्धराचार्य श्री धर्मचन्द्राय दत्तं।

प्रति नं० २. पत्र सख्या १०८ संवत् १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति

१ णवसयणउवाणुइए २ णामं पउमस्स

यस्यागजो जनि सुधीरिहराघवाख्यो व्याख्यानमंदमतिरूज्झितसर्वदोषः
अप्रोतकान्वयनभोगणपाव्वणेंदु श्रीमाननेकगुणरंजितचारूचेतः ॥ २ ॥
ततोभवत्सोढलनामधेयः सुतो द्वितीयो द्विषत मजेयः ।
धम्मार्थ मतृतयेविदग्धो जिनाधिपप्रोक्तवृषेन मुग्धः ॥ ३ ॥
पश्चाद्बभूव शशिमंडलभ समानः ख्यातः क्षितीयश्वरजनादपिलब्धमानः ।
सद्दर्शनामृतरसायनपानपुष्टः श्री नट्टल शुभमनाक्षपितारिदुष्टः ॥ ४ ॥
तेनेदमुक्तमधिया प्रविचिन्त्य चित्ते स्वप्नोपमं शेषमसारभूतं ।
श्री पार्श्वनाथचरित दुरितापनोदि म त्तायकारितमितेनमुदा व्यलेखि ॥ ५ ॥

अहो जणणिच्चलु चित्त करेवि, भिसणिसए सुभमतुधरेवि ।
रवणिक्क पयपिउ मज्झु सुणेहु, कुभावइ सव्वई हो तह णेहु ।
इहत्थि पसिद्धउ ढिल्लिहि ढक्क, णरूत्तमु ण अवइण्णउं सक्कु ।
समरक्खमि तुम्हह त सु गुणाई, सुरासुररायमणोहरणाई ।
ससकसुहम्मर्किात्तहे धामु, सुरायले किण्णरगाइयणामु ।
मणोहर माणि णिरंजणकामु, महामहिमालउ लोयह वामु ।
जिणेसरपायसरोयदुरेहु, विसुद्धमणोगइ णित्तइ सुरेहु ।
सयागुरूभत्तु गिरिंदुवधीरू, सुह सुह ओजलहिव्वगहीरू ।
अदुज्जणु सज्जणमुक्खपयासु, वियाणियमागहलोयपयासु ।
असेसहसज्जणमज्झि मणुज्ज, णरिन्दह चित्तपयासिय चोज्जु ।
महामञ्वतह भावइ तेम, सरोयणराह रसायणु जेम ।
सवसणह गणभासणसूरू, सवधव वग्गमणिच्छियपूरू ।
सुहोह पयासणु धम्मुयमुत्तु, वियाणियजिणवर आयमसुत्तु ।
दयालयवट्टणजीवणवाहु, खलाणणचन्दपयासणराहु ।
पिया अइवल्लहवालिहेणाहु, ... ।

घत्ता

बहुगुणगणजुत्तहो जिणपयभत्तहो जो भासइ गुणनट्टलहो ।
सो पयहि णहगणु रमियवरगणु, लवइ सिरिहरहयखलहो ।
पंचाणुव्वयधरणुससयल सुअणह सुहकारणु ।
जिणमयपहसचरणु विसमविसयासावारणु ॥
मूढभावपरिहरणु मोहमहिहरणिद्दारणु ।

शिष्य मुनि धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये पहाड्यागोत्रे साह ऊधा तद्भार्या लाडा तत्पुत्र साह फल्हू द्वि० गूजर । फलहू भार्या सफलादे साह गूजर भार्या गुण सरी तत्पुत्र पचाइण इद शास्त्र नगपुर मध्य लिखाप्य मुनिधर्मचन्द्र य दत्त ।

२४, पचास्तिकायप्राभृत ।

मूलकर्त्ता श्री कुन्दकुन्दाचार्य । टीकाकार श्री अमृतचन्द्राचार्य । भाषा प्राकृत-संस्कृत । पत्र संख्या १४८. साइज ६॥×४ इञ्च प्रति पूर्ण तथा सुन्दर है । विषय-सिद्धांत ।

लेखक पशस्ति—

सवत् १६३७ वर्षे अषाढ बुदि १४ दिवसे शनिवासरे मर्गिसर नक्षत्रे श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खडेलवालान्वये गोधा गोत्रे सा० पचायण तद्भार्या पाढमदे तयो पुत्रौ द्वौ प्रथम जिनपूजापुरदर सघभार धुरधर चतुर्विध दानवितरणकल्पवृक्ष सा० श्री नूना तद्भार्या नुर्नमरि तयोः पुत्रा अष्टाग प्रथम सा० वीरु तद्भार्या ल्हौकन, द्वितीय जिणदास तद्भार्ये द्वे प्रथम मरूपदे द्वि० लहुडो । तृतीय सा० चिमला तद्भार्या बहुरगदे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सा० जीवा तद्भार्या जीवलदे तयोः पुत्र चि० दुरगा । द्वि० सा० डीहा तद्भार्या डिडिसिरि, तृतीय चि० किसनदास चतुथ सा० चौड्य तद्भार्ये द्वे प्रथम चादणदे द्वि० लहुडा तया पुत्रौ द्वौ प्रथम चि० कौजू द्वि० चि० दशरथ । द्वितीय पूना तद्भार्या पुनसिरि । तयो पुत्रास्त्रय प्रथम सा० जाटू तद्भर्या जौणादे, दि० सा० नेता तद्भार्या नेतलदे तृतीय चि० जिणदत्त द्वि० सा० रुवरु तद्भार्या कौतिगदे एतेषा मध्ये सा० जिणदास तद्भार्या स्वरूपदे इद शास्त्र लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्त ।

२५, प्रद्युम्नचरित्र ।

रचियता महाकवि श्री सिंह सिद्ध । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १७५. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३२×३५ अक्षर । प्रति प्राचीन है । पत्रो का रग बदल गया है । अक्षर मोटे हैं ।

मगलाचरण ।

> खमदमयमनिलयहो, तिहुयणतिलोयहो, वियलयिरम्मकलंकहो ।
> घुइ करमि ससत्तिए, अइणिरूभत्तिए हरिकुलगयणससकहो ॥

अन्तिम पाठ—

इय पज्जुण्णकहाए पयडियधम्मत्थकाममोक्खाए बुहरल्हणसुव कइसीह विरइयाए पज्जुण्णसंबु भाणु अणिरुद्धणिव्वाणगमन णाम पण्णारहमो सधी परिच्छेउ सम्मत्तो ।

तेण विहिंणि चिंततु अच्छमि, खुज्जु होवि तालहलु वछमि।
अ धुहोवि णवणट्टपिच्छिरो, गेय सुणंणि वहिरोवि इच्छरो।
त सुणेवि जाजययमहासुई, णिसुणि सिद्ध जंपइ सरासई।

घत्ता

आलसु सकिल्लहिं हियउ म मेल्लहि, मज्झु वयणु एउ दिढुकरहि।
हउ मुणिवरवसे कहमिविसेसे, कव्वु किंपि त तुहु करहिं ॥ २ ॥

ता[१] मलधारिदेव मुणिपुगमु, ण पच्चक्खु धम्मु उवसमु दमु।
माहवचन्दु आसि सुपसिद्धउ, जो खमदमजमणियमसमिद्धउ।
तासु सीसु तवतेयदिवायरू, वयतवणियमसीत्र रयणायरू।
तक्कलहरि झकोलियपरमउ, वरवायरणपवरपसरियपउ।
जासु भुवणो दूर तरू वकिवि, न ठिउ पच्छण्णु मयणु आंसकिवि।
अमयचन्दु णामेण भडारउ, सो विहरंतु पत्तु वुहसारउ।
सरिसरणंदण वणसंछण्णउ, मठविहारजिणभवणरवण्णउ।
वंभणवाडउ णामे पट्टणु, अरिणरणाहसेणदलवट्टणु।
जो भु जइ अरिणरखयकालहो, रणधोरियहो सुयहो वल्लालहो।
जासु भिच्चु दुज्जणमणसल्लणु, खत्तिउ गुहिलपुत्त गहि भुल्लणु।
तहिं सपत्त मुणीसरू जावहि, भव्वलोउ आणदिउतावहिं।

घत्ता

णियगुणअपससेवि मुणिहि णमंसवि, जो लोएहि अदुगुंच्छियउ।
णयविणयसमिद्धें पुणु कइसिद्धे, सो जइवरू आउच्छियउ ॥ ३ ॥

× × × × ×

इय देवय णंदणु अवियण जणमणणयणाणदणु।
वुहयणजणपयपकय छप्पउ भणइ सिद्धु परमप्पउ ॥

अन्तिम प्रशस्ति—

कृत कल्मषवृत्तस्य शास्त्र शास्त्र सुधीमता।
सिंहेन सिंहभूतेन पापसामजभंजनम् ॥ १ ॥
कामस्य काम्य कमनीयवृत्तेः वृत्त कृत्त[२] कीर्तिमता कवीनां।

१ थिउ २ कृतः

जणं वच्छलु सज्जणजाणि हरिसु, सुइ[1] सत्थविविह वंइराय सारसु।
उप्पणु सहोयरू तासु अवरू, णामेण सुहकरू गुणह पवरू ॥
साहारणु लहु वउ तासु जाउ, धम्माणरत्तु अइ दिव्वभाउ।
तइो अणुवउ[2] महं एंउवि सु सारू, सविणोउ विणसरू कुंसुमसारू ॥
जावच्छहि चत्तारि सुभाय, पर-उवयारिय जणजणियराय।
एक्कहिं दिणि गुरूणा भणिउ वच्छ, णिसुणहि च्छप्पय कइरायदच्छ ॥
भोवाल! सरासइ गुणसमीह, कि अविणोवइ दिणगमहि सीह।
चउविह पुसित्थर सोहभरिउ, णिव्वाहहि एउ पज्जुण्ण चरिउ ॥
कइ सिद्धहो विरयतहो विणासु, सम्पणउ कम्म वसेण तासु।
महु वयण करेहि किं तुव गुणेण, संतेण कूव छाया समेण ॥

घत्ता

कि तेण पहूवइ बहुधणई, जं विहडियहण उद्धरइ[3]।
कव्वेण तेण कि कइयणेण, ज णाछइल्लहं मणुहरइ ॥
गुरूणो पुणो पउत्त पवियप्प[4] पुत्त माधरहिचित्ते।
गुणिणा गुण लहे दिणु जइ लोओ दूसण थवइ ॥
की वारइ सविसेस खुद्दो खुद्दत्तणं प वियरंतो।
सुंवणो छुडु मंज्झत्थो अमुणं तोणियंसहावच ॥
सभवइ बहुयविग्घ मणुयाण समय मग्गलग्गाणं।
मा होहि कज्जसिढलो विरयहि कव्व वर तोवि ॥
सुहं असुह ण वियाणवि[5] चित्तं धीरेवि तेजए वएणा।
परकज्ज परकव्व विहडत जेहिं उद्धरिय ॥
अमियमंइदगुरुण आएस लहेवि भत्ति इय कव्व।
णियसइणा णिम्मविय णदउ ससिदिणमणो जाम ॥
को लेक्खइ सत्थम्मे दुज्जणं पिअ सुहयर।
सुयणं सुद्ध सहाव करमउ लिरए वि पत्थामि ॥
ज किंपि हीण अहियं विउसा सोहतु त पि इह कव्वे।
धिट्ठत्तणेण रइय खमंतु सव्वेवि मुह गुरूणो ॥

१ सुइवंतु २ अणुधउ ३ उवयरइ।

संवत १५६५ वर्षे भाद्रपद सुदी १३ दिने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये अजमेर वास्तव्ये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे सा झालाण तस्य भार्या पीथी तयोः पुत्राः साह पट्टिराज द्वितीय सा० सुरजिन तृतीय साह ईसर। साह पट्टिराज भार्या पउसिरी तत्पुत्र साह घणराज साह सुर्जिन भार्या दानशीलवंती सुनखती। साह घणराज भार्या लाडी तत्पुत्र पारस द्वितीय लोहर एतेषा मध्ये साह सुरजन भार्या पतिवृता द्विगुणयुक्ता सुनखत इदं शास्त्रं प्रद्युम्नचरित्र लिखाप्य दशलाक्षणिक व्रतोद्यापनार्थं अर्जिका विनयश्रीयै दत्त।

प्रति नं० ३. पत्र संख्या ६५. साइज ११।।×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ५०×५४ अक्षर। प्रति प्राचीन है तथा पूर्ण है।

संवत्सरे १५१८ वर्षे शाके १३८३ पञ्चाब्दमध्ये सर्व्वधारिनाम्नि संवत्सरे उत्तरायने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे ६ षष्टम्यां तिथौ शुक्रवासरे घटिका ४१ पुष्यनक्षत्रे घटिका ४६ सिद्धनाम्नियोगे घटिका ४५ श्री नैणवाहपत्तने सुरत्राण अलावद्दीन राज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा। भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्शिष्य मुनि मदनकीर्त्तिदेवास्तत् शिष्य मुनि नेत्रानंदिदेवा। तत् शिष्य ब्रह्म गाल्हा खण्डेलवालान्वये साह राऊ तद् भार्या साध्वी रावश्री तयोः पुत्राः साह छाजू कर्म्मसी धर्मसी। साह छाजू तद् भार्या साध्वी छाहिणी तस्य पुत्राः साह धाना गंगा, गजा, एतेषा मध्ये साह कील्हा तद् भार्या साध्वी पतिव्रतानार्थ पुत्रपौत्रकल्याणवृद्धिप्राप्त्यर्थं इदं प्रद्युम्नशास्त्रं लिखाप्य ब्रह्मगाल्हा सुहस्ते प्रदत्तं।

२६. बाहुबलिचरित्र।

रचयिता महाकवि धनपाल। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या २७२, साइज ६।।×३।। इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां और प्रति पंक्ति में ३३×३८ अक्षर। रचना संवत् १४५४ लिपि संवत् १५८६।

प्रारम्भिक पाठ—

सिरिरिसहणाह जिणपयजुयलु पणविवि णासियकलिमलु।
पुणु पढमकामए वहो चरिउ, आहासमि कयमंगलु ॥

प्रारम्भ में दिया हुआ कवि परिचय—

गुज्जरदेसमज्झि णयवट्टणु, वसइ विउलु पल्हण पुरु पट्टणु।
वीसलएउ राउ पयपालउ, कुवलयमंडलु सयलु व मालउ।
तहि पुरवाडवंसजायामल, अगणियपुव्वपुरिसणिम्मलकुल।
पुणु हुउराय सेट्ठि जिणभत्तउ, भोवइ णामे दयगुणजुत्तउ।

तहो सुउ सोमएउ सोमाणणु, कुणयगइंदविंदपंचाणणु।
तहो पेमसिरिभज्ज विक्खाइय, पियमसीलगुणेहि विराइय॥
एयहि सत्त पुत्त सजाया, गंजिणगिरए तव विक्खाया॥
पढमु ताहदय वल्ली सुरतरू, सघाहिउ णामे वासद्धरू।
जो दिवहाडिय चाउ पसिद्धउ, णट्ठभज्जु णिवमतसमिद्धउ।
पुणु वीयउ परवारि सहोयरू, विणयकिउ हरिराउ मणोहरू।
तइयउ सुउ पल्हाउ सलक्खणु, सजायउ आणंदिय सज्जणु।
पुणु तुरियउ महराउ विसुद्धउ, गुणमडिय तणु हुउ जसलुद्धउ॥
पंचमु भामराउ मोहायरू, छट्ठउ तणउ णाम रयणायरू।
सत्तमु सयल बधुजण वल्लहु, सतणु णाम जाउ अइ दुल्लहु॥
एयहिं सत्तहिं सुपहिं पसाहिउ, सोमएउ ण णयहिं जिणाहिउ।
जो पढमउ णदणु वासाहरू, सयलकलाभउ ण छणससहरू॥
पेक्खेवि विणु सारग णरिंदे, चाहुवाणकुल कइरवचन्दे।
रज्जधुराधरू णियमणिजाणिवि, मतिपयम्मिठावउ सम्माणिवि॥
अप्पि विदेसु कोसुवणु परियणु, भुजइ रज्जु सोक्खु णिच्चलमणु॥

घत्ता

सो सुअणु गुणायरू वुहविहियायरू, दुत्थियजणणवकप्पतरू।
जिणपयपकयमहुयरू सिरिवासद्धरू, जा अच्छइ तहिं दुरिय हरू॥ ३॥

ता पेक्खिवि पडिय धणवाले, विहसि वि भणिउ वुद्धिविसाले॥
भो सम्मत्त रयणरयणायर, वासद्धर हरिरायसहोयरू।
विणयगुणालकिय णिम्मछर, पडियजणमण रजणकोछर।
करि वि पइट्ठ भव्वजणु रंजिउ, जे तित्थयरगोत्तु आविज्जिउ॥
धण्णउं तुहु गुरूभत्तिकयायर, मइसुरकित्ति तरंगिणि सायर॥
जिणवरपायपउरहमहुयर, सयल जीव रक्खणसुदयायर।
दुस्समकालपहावगुरुक्करु, जिणवरधम्ममग्गिजणुवंकउ।
दुज्जणपउरल्लोउ अकयायरू, विरलउ सज्जणु गुणिणिवाहियायरू॥
असहायहो जगिकोविणमण्णइं, धम्मपहावे लब्भइ रण्णइं।
धम्महीणु जणु जहिं जहिं गच्छइ, तहिं तहिं सम्मुहु को विण पच्छइ।
ते कज्जें धम्मायरू किज्जइ, धम्महीणु ण कयाविहविज्जइ।
इय धम्महो पहाउ उर घुट्ठउ, णिसुणिवि वासाधर सतुट्ठउ।

सिरि वज्जसूरि गणिगुणणिहाणु, विरइउ महछंदंसणपमाणु।
महसेण महामइ विउसमहिउ, धणणाय सुलोयण चरिउ कहिउ।
रविसेणें पउमचरित्त वुत्तु, जिणसेणें हरिवंसु वि पवित्तु।
मुणि जडिल जडत्तणिवारणत्थु, णवरंग चरिउ खडगु पयत्थु।
दिणयरसेणें कंदप्पचरिउ, वित्थरिउ महिहिं णवरसहं भरिउ।
जिणपासचरिउ अइसयवसेण, विरइउ मुणि पुंगव पउमसेण।
अमियाराहण विरइय विचित्त, गणि अंबसेण भवदोसचत्त।
चंदप्पह चरिउ मणोहिरामु, मुणि विण्हुसेण किउ धम्मु धामु।
धणयत्तचरिउ चउवग्गमारू, अवरेहिं विहिउ णाणापयारू।
मुणि सीहणंदि सद्दत्थवासु, अणुपेहा कय संखेवणासु।
णवयारणेहु णरदेववुत्तु, कइ असगविहिउ वीरहोचरित्त।
सिरिसिद्धसेण पवयणविणोउ, जिणसेणे विरइउ आरिसेउ।
गोविंदु कइ रसणकुमारू, कह रयण सुमुद्दहो लद्धपारू।
जयधवल सिद्धगुणमुणिउं भेउ, सुयसालिहत्थ कइजीव देउ।
वर पउमचरिउ किउ सुकइ सेढि, इय अवर जाय धरवलय वीढ।

घत्ता

चउमुहु दोणु सयंभुकइ, पुप्फयंतु पुणु वीरु भणु।
ते णाणदुमणिउज्जोयकर, हउ दीवोवमुहीणु गुणु॥ ६॥

त णिसुणिवि वासाहरू जंपइ, किं तुह बुहचिंताउलु संपइ।
जइ मयंकु किरणहिं धवलइ भुवि, तो खज्जोउ ण छंडइ णियछवि।
जइ खयराउ गयणे गमु सज्जइ, तो सिहडि किं णियकमु वज्जइ।
जइ कप्पयरू अमियफलकप्पइ, तो किं तरू लज्जइ णिय सपइ।
जसु जेत्तिउ मइ पसरू पवट्टइ, सो तेत्तिउ धरणिय ले पयट्टइ।
इय णिसुणिवि संघाहिव वुत्तउ, कइणाघणवालेण पउत्तउ।
तुम्ह भत्ति भारेण दायवर, विरयमि कामचरिउ गुणसायर।
पर दुज्जण भइ मणुथिउ कायरु, खलहु ण छुट्टइ गयणिणि सायरू।
कुडिलु गमणु परछिद्द णिहालउ, णयणायणु दुज्जीहु विसालउ।
अह वह गामिउ परदुह दरिसउ, णिट्ठुरू पिसुणु भुअगम सेरिसउ।
गयरसु जडवाईव दुरासउ, दोसायरू रक्खसु वपलासउ।

अंतरवेइमज्झि घणरिद्धउ, तहिं कविट्ठविसउ सुपसिद्धउ।
वीरखाणिउप्पत्ति पवित्तउ, सूरीदू जणपरिपालतउ।
सूरसेणु णरवइ तहो णंदणु, अंधयवट्ठिराउ रिउमद्दणु।
तहो पइवयपियपाणपियारी, णाम सुहद्दा देवि भंडारी।
दसदसारतहिं णंदणजाया, वीरवित्तितहु अणविक्खाया।
सायरविजउ पढमु विणीयउ, पुणअक्खोहुणाम हुउ बीयउ।
तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु, पुणु हिमवंतु तुरिउ जणदुल्लहु।
विजउणामु पंचमु सुह वद्धणु, छट्ठउ अचलु रिद्धि सम्मदणु।
सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु, पुणु अट्ठमउ तणुब्भउ पूरणु।
सुउ अहिचंदु णवमु पुणु जाणहु, दहमउ सुउ वसुएउपमाणहु।
एयहं लहुअ कंतिमहीवर, लावणें णिज्जिय अमरच्छर,
समुदविजउ सूरी पुरि थप्पिउ, चंदवाडु वसुदेवहो अप्पिउ
तहो सुउ रोहिणेउ अग्गिजणु, देवइणंदणु अणु जणद्दणु।
तहो संताण कोडिकुल लक्खइं, संजाया केवलि पच्चक्खइं।
पुणु संभरि णरिंद महिमुंजिय, जायधव सुब्भव ते रंजिय।
आसवंसु चहुवाणु पुहइपहु, तहु मंतिउ जदुवंसिउ जसरहु।
पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि, आसाउरि सुरिपय पंकय अलि।
साहुणाम गोकणुसंती तहु, जिणवरचरणं भोरुह महुलिहु।
हुउ संभरि णरिंदु महिपालउ, वणहदेउ णाम पयपालउ।
सोमदेउ तहो मंत मणोहरू, सयलकला लंकिउ णं ससहरू।

घत्ता

पुणु सारगु णरिंदु अभयचन्दु तहो णंदणु।
तहोसुउ हुउ जयंचदु रामचंदु णामे पुणु॥ १॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ, वामाहरुमंतिउ णीसंकिउ।
णियपहुरज्ज भारादढकंधरु, विबुहविंदतरु पोमणाक्खधरु।
एकुजि परमप्पउ जो झावइ, वे ववहार सुद्धणयभावइ।
जो तिकाल रयणत्तउ अंचइ, चउ णिउयरुइ कहवि ण मुंचइ।
जो परमेट्ठि पंच आराहइ, जो पंचगमतंमहिं साहइ।

अं तरवेइमज्झि धणरिद्धउ, तहिं काविट्ठुविसउ सुपसिद्धउ।
वीरखाणिउप्पत्ति पवित्तउ, सूरिंदरू जणपरिपालतउ।
सूरसेणु णरवइ तहो णंदणु, अंधयविट्ठिराउ रिउमद्दणु।
तहो पइवयपियपाणपियारी, णाम सुहद्दा देवि भंडारी।
दसदसारतहिं णंदणजाया, वीरविसत्ति तहु अणविक्खाया।
सायरविजउ पढमुउ विणीयउ, पुणअक्खोहुणाम हुउ बीयउ।
तइयउअमियासउ सिरिवल्लहु, पुणु हिमवंतु तुरिउ जणदुल्लहु।
विजउणामु पंचमु सुइ वद्धणु, छट्ठउ अचलुरिद्धि समद्दणु।
सत्तमु णाम पसिद्ध उधारणु, पुणु अट्ठमउ तणुब्भउ पूरणु।
सुउ अहिचंदुणवमु पुणु जाणहु, दहमउ सुउ वसुएउपमाणहु।
एयह लहुअ कंतिमहीवर, लावण्णे णिज्जिय अमरच्छर,
समुदविजउ सूरी पुरि थप्पिउ, चंदबाहु वसुदेवहो अप्पिउ
तहो सुउ रोहिणेउ अणिगज्जणु, देवइणंदणु अण्णु जणद्दणु।
तहो संताण कोडिकुल लक्खइं, संजाया केवलि पच्चक्खइं।
पुणु संभरि णरिंद महिमु ज्जिय, जायउव सुब्भव ते रंजिय।
आमवंसु चहुवाणु पुहइपहु, तहु मंतिउ जदुवंसिउ जसरहु।
पहु गणपत्ति हुअउ धरणीयलि, आसाउरि सुरिपय पंकय अलि।
साहुणाम गोकणुमंती तहु, जिणवरचरणंभोरुह महुलिहु।
हुउ संभरि णरिंदु महिवालउ, वरहदेउ णाम पयपालउ।
सोमदेउ तहो मंत मणोहरू, सयलकला लंकिउ णं ससहरू।

घत्ता

पुणु सारंगु णरिंदु अभयचन्दु तहो णंदणु।
तहोसुउ हुउ जयचंदु रामचंदु णामे पुणु ॥ १ ॥

णिवसारंगरज्जि समयंकिउ, वासाहरूमंतिउ णीसंकिउ।
णियपहुरज्ज भारधुरधवरू, विवुहविंदतरु पोमणाकरू।
एक्कुजि परमप्पउ जो झावइ, वे ववहार सुद्धणयभावइ।
जो तिकाल रयणत्तउ अंचइ, चउ णिउयरूइ कहवि ण मुंचइ।
जो परमेट्ठि पच आराहइ, जो पंचंगमंतमहि साहइ।

घत्ता

लक्खणमत्ता छंदगणहीणहिउ ज भणिउ मई।
त खमउ सयलु अवराहु वाएसरि सिवहसगई ॥ ३ ॥

विक्कमणरिंद अंकिय समए, चउदहसय संवच्छरह गए।
पंचास वरिस चउअहियगणि, वइसाहहो सियतेरसिसुदिणि।
साईणक्खत्ते परिट्ठियइ, वरसिद्धि जोगणामें थियई।
सासवासरे रासिमयकतुले, गोलग्गे मुत्ति सुक्केसवले।
चउवग्गसहिउ णवरसभरिउ, बाहुवलिदेव सिद्धउ चरिउ।
गुज्जरपुरं वाडवसतिलउ, सिरि सुहडु सेठि गुण गणणिलउ।
तहो मणहर छाया गेहिणिया, सुहडाएवी णामे भणिया।
तहो उवरि जाउ वहुविणयजुई, धणवालु विउसु णामेण हुई।
तहो विण्णि तणुभव विउलगुण, सतोसुतहयहरिराउपुण।
थरुअरुइ धम्मु जा महिवलए, सायरजलु जा सुरसरिभिलिए।
कणयदि जाम वसुहा अचलु, वीसर होछठुव ताम कुलु।
जो पठइ पठावइ गुण भरिउं, जो लिहइ लिहावइ वर चरिउं।
सताणसिद्धि वित्थरइतहो, मणवंछिउ पूरइ सयलु सुहो।
वाहुवलि सामिगुरुगण सभरणु, महुणासउ जम्म जरामरणु।

घत्ता

जो देइ लिहाइ वि पत्तहो वायइ सुणइ सुणावइ।
सो रिद्धिविद्धि संपय लहिवि, पछइ सिवपउ पावइ ॥ ४ ॥
श्र मत्प्रभाचद्रपदप्रसादादवाप्त बुद्धया धनपालदत्तः।
श्रीसाधु वासाधरनामधेय स्वकाव्यसौवेयकलसीकरोति।

इति बाहुबलि चरित्र समाप्तं। शुभं भूयात्। संवत १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने बुधवासरे श्री मूलसघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे नंद्याम्नाये श्री कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा ....। श्री रतनकीर्तिशिष्येण ब्रह्मरतनेन लिखापितम्।

प्रति नं० २. पत्र संख्या २३७. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रारम्भ के १३७. पृष्ठ नहीं है। शेष के पृष्ठ

अणुमोएं ताहें तिहु सपण्णगुणंतरेण ॥

अरि उरि अइरावइ दीहरच्छि धणयत्तहो गेहिणि धणयलच्छि ।
उज्जमिय ताए चिरु सजुएण, भाविय धणमित्ते तहिं सुएण ।
तहिं कित्तिसेण णामुज्जयाइ, अणुमोइय वज्जो अरसुआए ।
तहो फलेण ताइ तिण्णिवि जणाइ, चउथइ भविसिवलोगहो गयाइं ।
पहिलइ धणयत्तहो धणयदित्ति, उयरइ विण्णिवि धणमित्तु क्रित्ति ।
दिज्जइ भवि पकय सिरि सरुव, सुउ भविसयत्तु भविमाणरुव ।
तियलिंगु हणेवि विण्णिवि सुतेय, पहचूल रयण चूलाइ देव ।
नइयएभविमत्तु वि कणय तेउ, हुउ दहमइ तेहे जि वि माणे देउ ।
चोत्थएभवि सुवपचमि फलेण, णिदट्टु कम्मु भाणाणलेण ।

घत्ता

णिसुणत पढतह परिचितंतह अप्पाहिया ।
धणवाले तेण, पंचमि पंचपयार किया ॥

इप धनपालकृत पचमी भविष्यदत्तस्य समाप्नोति ।

लेखक प्रशस्ति —

सवत् १५६५ माघमासे शुक्लपक्षे तिथौ १५ रविवासरे नक्षत्र अश्लेखा राजाधिराज नछत्रा करमचद मोजाबाद मध्ये लिख्यतं रामदास । श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मडलाचार्य श्री धमचन्द्रदेव स्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पटणी गोत्रे सागानेर वास्तव्ये साह हेमा भार्या केलू पुत्रास्त्रय. प्रथम साह सवण भार्या लाडो तयोः पुत्रा स ह डा भार्या ऊदी तयोः पुत्रौ राणौ द्वितीय रामदास । द्वितीय गोविंद भार्या गौरी तृतीय टेहू भार्या टिहुसिर द्वितीय साह हीरा भार्या चपरू तयोः पुत्राः त्रयः प्रथम डुग द्वितीय पवत तृतीय गोना डूगर भार्या धरम पुत्रौ द्वौ म० सा० चाचा द्वि० घोराज पवत भार्या पूना तयो. पुत्रो द्वो प्रथम सोढा द्वि० छाजू । गोना भार्या गगा तयोः पुत्र माधव । तृतीय सा० तेजा भार्या दामा । हीरा नाम्ना इद शास्त्र लिखाप्य ज्ञानपालाय ब्रा कोल्हाय दत्त ।

प्रति न० २ । पत्र संख्या १४ । साइज १० × ४॥ इञ्च । प्रत्येत पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३६।४० अक्षर । अन्तिम पृष्ठ नहीं होने से प्रशस्ति अधूरी है ।

---

३ तिगिणम ।

मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री सकलकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्त्तिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषण गुरूपदेशात मुनि श्री रत्नकीर्त्ति पठानार्थं खंडेलवालजातीय सा: लाला भार्या ललतादे सुत साह वीरम भार्या वील्हणदे भातृ परवत भार्या पुहसिरि तत्पुत्रवलराजेन ज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं लेखायित्वा दत्तं ।

२७. भविष्यदत्त चरित्र ।

रचियता प० श्रीधर । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या ६४. साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तिया तथा तथा प्रति पंक्ति मे ३०×३७ अक्षर । रचना संवत १२३०

मंगलाचरण—

ससिपहजिणचरणइं सिवसुहकरणइं पणविवि णिम्मलगुणभरिउ ।
आहासमि पविमलु सुअपंचमिफलु भविसयत्तकुमरहो चरिउ ॥

प्रारम्भ मे दी हुई प्रशस्ति—

सिरि चन्दवारणयर ट्ठिएण, जिणधम्मकरण उक्कंठिएण ।
माहुरकुल गयण तमीहरेण, विबुहयण सुयण मणवणहरेण ।
णारायण देह समुब्भवेण, मणवयणकायणिदियभवेण ।
सिरिवासुएव गुरूभायरेण, भवजलणिहि णिवडणकायरेण ।
णीसेसवलक्खगुणालयएण, मइवर सुपट्टा णामालएण ।
विणएण भणिउं जोडेवि पाणी, भत्तिए कइसिरिहरू भव्वप्पाणि ।
इह दुलहु होइ जीवहं णरत्तु, णीसेस सहं संसाहिय परत्तु ।
जइ कहव लहइ दइयहो वसेण, चउगइ भमंतु जिउ सहसरेण ।
ता विलउ जाइ गब्भेवि तेम, वायाहय णहे सरयब्भु जेम ।
अहलहइ जम्मु ता बहु विहेहिं, रोयहिं पीडिज्जइ दुहणिहेहिं ।

घत्ता

जइ णिहय मायरि अय खामोयरि अवहरेइ णियमणि अणिसु ।
पयपाण विहीणउ जायइ दीणउ ता सो णवि जीवेइ सिसु ॥ २ ॥

हउ आयइ मायइ महमइएमइं, सइं परिपालिउ मंथरगइए ।
कप्पयरूव वउलासए सयावि, दुल्लहु रयणु व पुण्णेण पावि ।
जइ एवहि विरयमि णोवयारू, उग्घाडिय सिवसउ हलयवारू ।

तहो माढी णामे धरिणि जाय, णावइ लच्छी सयमेव आय।
कोयल इव सुहयर ललियवाणि, पविरइय कज्ज जाणे वि जाणि।
तहो गब्भे समुप्पण्णउ रवण्णु, साहारणु सुउ णवकणयवण्णु।
पढमउ परियाणिय णाय मग्गु, जिणधम्मकम्मसाहिय सुमग्गु।
वीयउ णारायणु णयणिउत्त, मणे परियाणिय जिणभणिय सुत्त।
णिम्मलयर जसलच्छी णिहणु, माहुरगयणहयलसेय भाणु।
मइवंत संतु पाविय पसंसु, जिणवर कह कय कण्णावतंसु।
करूणालउ किरियावंतु साहु, सुद्धासउ मयरहरूव अगाहु।
तह रूप्पिणि णामे जाय भज्ज, सिरिहरहो सिरिवजाणियसकज्ज।

घत्ता

सज्जणसुहयारिणि पावणिवारिणि पविमलसीलालंकारिया।
वधवहं पियारी थीयणसारी विणयाइय गुणगणभरिया॥ २॥

तहो पढमु सुउ पटुणामे, हुउ णं अप्पउ दरसिउ कामे।
माणवरूउ लएप्पिणु लोयहो, धम्मपहं वें माणिय भोयहो।
वीयउ वासुएउ संजायउ, वासुएउ जिह तिह विक्खायउ।
तज्जउ पुणु जसएव पवुच्चइ, जो णीसेसह वधुहु रूच्चइ।
वोहहु तुरिउ समासहि पियरहिं, आवज्जिय णिम्मलगुण णियरहि।
पचमु लक्खण कलिउ सलक्खयणु, कमलवयणु कज्जेसु थियक्खणु।
पंचवि णं मणसिय हो सिलीमुह, पचवि वघवयण विरइयसुह।
पंचवि मय मयगण पचाणण, पचवि पिसुण जणोह भयाणण।
ताह मज्झे जो सुप्पडु भायरू, वर वछल्ला णंदिय णहयरू।
जिणपय पुज्जकरण उच्छुल्लउ, परियाणिय सत्थत्थर सुल्लउ।
जिणवरभासिय धम्मगहिल्लउ, लीलागइ जिय पोंडल पिल्लउ।

घत्ता

तेणेहु मणोहरू तिमिरतमीहरू णियजणणी णामंकियउ।
अब्भत्थेवि सिरिहरू कइगुणसिरिहरू पचमि सत्थुकराविउ॥ ३॥

सुप्पट तणय जाणणि जासुहमइ, तियरण विणिवारय कुसमयरइ।
धम्मपसत्त हें मज्झखामहो, गुरुयण भत्तहें रुप्पिणि णामहो।
होउ समाहि वोहि रयहारिणी, अट्ठम महि लच्छी सुहकारिणी।

भवियणपियारी हरिसजणेरी नंदउ चउविहसंघह ॥

इय मयणपराजयचरिए हरिएवकइ विरइए मयणपायपराजय नामहु दुज्जउ परिच्छेउ सम्मत्तो।

लेखक प्रशस्ति—

संवत् १५७६ वर्षे कार्त्तिक सुदी १३ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे नद्याम्नाये कुदकुद चार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गगवाले गोत्रे सा डावर तस्य भार्या माल्ही तयोः पु स्त्रयः सा दूदा, सा भोल्हु सां डुंगर। सां दूदा भार्या चाहू तयोः पुत्रौ सा० रणमल द्वितीय सा० चोखा स रणमल भार्या जिणसी। सां चोखा भार्या ऊदा। सा दूदाख्येन लिखापित कर्म्मक्षयार्निमित्त ।

२६. मृगांकलेखाचरित्र ।

रचयिता श्री पंडित भगवतीदास। भाषा अभ्रंश। पत्र संख्या ७४. साइज १०॥ x ५ इञ्च। प्रत्ये पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३६ अक्षर। प्रति स्पष्ट है। मंगलाचरण करने के पहिले लिपिका ने भट्टारक माहेन्द्रसेन को नमस्कार किया है। बीच २ हिन्दी भाषा के पद्य भी लिखे हुये है। रचन संवत् एवं लिपि संवत् १७०० ग्रन्थ का दूसरा नाम चन्द्रलेखा कथा भी है।

प्रारम्भिक पाठ—

पणविवि जिणवीरं णाणगहीरं तिहुवणवइरिसिगइजई।
णिरुवमविसअत्थ सीलपसत्थ भणमिकहासमिलेहसई ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

दोहा

ससिलेहा णियकंत सम धारइ संमजमु सारु।
जम्मणमरण जलजलो दाण सुयणुं भवतार ॥१॥
करितणि तपु सिवपुर गयउ, सोवणि सागर चन्द।
ससिलेहा सुरवरू भई तजि तिय तणु अतिणिंदु ॥२॥
लहि णरभउ णिरवाण पद, पावसि सुंदर सोइ।
कवि सु भगौतीदास कहि पुणु भव भमणु ण होई ॥३॥
सील वडा संसार महि सोलि सरहिं सव काज।
इह भवि परभवि सुह लहइं आसि भणहिं मुणिराज ॥४॥

कट्ठासंघसु माहुरगच्छए, पुष्करगणि णिम्मल वयसच्छए।
जिणवाणी पुवंग संयांधरू, अवइण्णउ णावइ जणिगणहरू।

महुरी भासउ देस करि भणिउ भगौतीदासि ॥
जावगयणि रवि ससि मंह जाव लरह थिरू खित्तु ।
ससिलेहा सुंदिर भई णंदउ ताउ चरित्त ॥

इयसिरिचन्द्रलेहाकहाए रंजियवुचित्तमहाए भट्टारगमिरिमुणिमहेंदसेण सीसंहि बुहभगवइदास विरइए। ससिलेहा मग्गिमणु इत्थियलिंगछेउ इंदपयगोपयरण सायरचन्द णिव्वाणगमण तवदीखासाहण णाम चउत्थो संधि परिछेउ समतो। इति श्री भगवतीदास कृत मृगांकलेखाचरित्रं संपूर्ण।

अथ संवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्ये संवतु सत्रहसतसपूर्ण १७०० फाल्गुणमासे शुक्ला पक्षे सप्तम्या रविवासरे श्री साहिजहाराज्यप्रवर्त्तमाने श्री काष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे श्री लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्री यशःकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणचन्द्रदेवास्तत्तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलचन्द्रः तत्पट्टे भट्टारक श्री महेन्द्रसेण तदाम्नाये हिसारिवास्तव्ये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सेठी पारस तस्य भार्या सेठाणी परोज तस्य पुत्र द्वौ ज्येष्ठ पुत्र सेठी पाथु द्वि० पुत्र सेठी सुखनन्द तस्यभर्या सेठाणी घनो तस्य पुत्र युग्म प्रथम पुत्र तारा चन्द द्वि० पुत्र जगरूप, सेठी पार्श्व पुत्री शीलतोयतरंगिणी विनयवागेश्वरी साधर्म्मिणी जीवणी अपर अग्रोतकान्वये गोयल गोत्रे आसोवाल चौधरी वनू तस्य भार्या सा० जसो तस्य पुत्र अर्जुन तस्य भगिनी शीलतोयतरंगिणी दानगुणे रेवती साधर्म्मिणी दयालो तेन द्वौ० साधर्म्मिणी दशलाखिणी व्रत उद्यापनार्थं मृगांकलेखाचरित्र लिखापित हिसार नगरे श्री वर्द्धमानचैत्यालये पंचगोष्ठे तत्रस्थिति अबोधजीव संबोधिनी बाई माथुरी जोग्य घटापित।

३०. मेघेश्वर चरित्र।

रचयिता श्री पं० रइधू। भाषा अपभ्रंश पत्र संख्या १५६, साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३२। ३६ अक्षर। प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है। प्रारम्भ के ५ पत्रों का आधा भाग कितनी ही जगह से फटा हुआ है। प्रारम्भ मे कवि ने अपना विस्तृत वंश परिचय लिखा है लेकिन अक्षर विलमिल होने के कारण पढने मे नहीं आती।

अन्तिम पाठ—

इय सेणियरायहो कयअणुरायहो गोयमेण जसविप्फुरिउ।
मेहेसरचरियउ बहुगुणभरियउ अक्खिउ बुहयण आयेरियउ।

प्रशस्ति—

णंदउ आइजिणेसर सासणु, णंदउ सुरयणु[1] धम्मपयासणु।
णंदउ सायवायविहि जुत्ती भारइ देवी जयत्तसवित्ती।
णंदउ णरवइ णीइवियारउ णंदउ भव्वलोयगुण सारउ।

१ पुरयणु

देवसत्थगुरुभत्तिकयायरु, पज्जुणसाहु णामें णियमायरु।
वील्हाही पिय यम तहु सारी, सीलाहरण विहूसणधारी।
ताहि तणुब्भउ बुहमणरंजणु, जाचय जण दालिद्द विहंजणु।
जिण समयाणु भत्ति अणु रायउ, खेऊमाहु णाम विक्खायउ।
तहु भज्जा धणसिरि गुणवती, चन्दहु रोहिणी विपहवती।
णदण चारि ताहि उरि जाया, चरिपाण ण जीव सहाय।
चारि दाण ण पायड भूयलि, चारि वि दिग्गय ण जस णिम्मलि।
ताह पढमु गुणमणिरयणायरु, सहसराजु कुलकमल दिवायरु।
रतणपाल ही तासु जि भामिणि, णियभत्तारचित्त अणुगामिणि।
उद्धरणाहि हाणु हुउ णंदणु, परियणजण चित्तहं आणंदणु।
तहु पह जिणि जिणिउ मयको, वीयउ पहराज गय सको।
सुरतरु ण दुत्थियजणपोसणु, परउवयाररसारसुपयासणु।
मपणपालही तासु जि भज्जा, दाणपूजविहिं करणमणोज्जा।
सोणपालु तहि णंदणु णदउ, णिच्चं जिणिंदसूरपिय वदउ।

घत्ता

पुणु सुउ तहु तीयउ अइव विणीयउ जिणसासणरहधुरधणु।
रइपतिरयणोवमु पालियकुलक्कमु दुत्थिय जणदुहभरहरणु॥

रइपति भामिणि, कुलगिहसामिणि।
कोडी णामा, पूरियकामा।
सुउ खेमंकरु, सुक्खरिविक्करु।
तुरिउ वि पुत्तो, गुणगणजुत्तो।
साहु हु भासिउ, पवरंजसासिउ।
विज्जामंदरु, वंसहु चंदिरु।
वुहं चूडामणि, णिम्मच्छरु गुणि।
होलू पायडु, सयलकलापडु।
तासु कलत्ता, सररूहवत्ता।
भणिय सरासइ, विणउ पयासइ।
ससि व कलालउ, चदपालु हुउ।
इहु परियण धुउ, ।

प्रारम्भिक पाठ—

तिहुअणसिरिकंतहो अइसयवंतहो अरहंतहो हयवम्महहो ।
पणवेवि परमेट्ठिहो पविमलदिट्ठिहो चरणजुअल णयसयमहहो ॥

कोडिल्लगोत्तणहदिणयरासु, वल्लहणरिंदघरमहयरासु ।
णण्णहो मंदिरि णिवसंतु संतु, अहिमाणमेरु कइ पुप्फयंतु ।
चिंतइ इहु धणणारीकहए, पज्जुत्तउ कयदुक्कियपहाए ।
कह धम्मणिबद्धी का वि कहमि, कहियाइ जाइ सिवसोक्खु लहमि ।
पंचसु पंचसु पंचसु महीसु, उप्पज्जइ धम्मु दया महीसु ।
धुउ पंचसु दसमु विणासु जाइ, कप्पंघिवक्खइ पुणु पुणु वि होइ ।
काला विक्खए पढमिल्लु देउ, इय धम्मवाइ सियवसहकेउ ।
पुरुदेउ सामिरायाहिराउ, आणंदिय चउ सुरवर णिकाउ ।

घत्ता

वत्त गुट्ठ णें जणु धणदाणें, पइ पोसिउ तुहु खत्तधरु ।
तवचरणविहाणें केवलणाणें, तुहु परमप्पउ परमपरु ।

अन्तिम पाठ—

[१]किउ उवराहे जस्स कइमइ एउ भवंतर ।
तहो भव्वहु णामु पायडमि पयडउ भर ॥ २६ ॥
चिरु पट्टण छगे साहु साहु, तहो सुउ खेला गुणवंतु साहु ।
तहो तणुरुहु वीसलु णाम लाहु, वीरो साहुणियहि सुलहु णाहु ॥
सोयारु सुणाणगुणगणसणाहु, इक्कइय चिंतइ चित्ति लाहु ।
हो पंडियठक्कुर कण्हपुत्त, उवयारियवल्लहपरममित्त ॥
कइ पुप्फयंति जसहरचरित्तु, किउ सुट्ठु सद्दलक्खणविचित्तु ।
पेसहि तहिं राउलु कउलु अज्जु, अमहरविवाहु तह जणियचोज्जु ॥
सयलह भवभमणभवंतराइ, महु वज्जिउ करहि णिरंतराइ ।
ता साहु समीहिउ कियउ सव्वु राउलुविवाहु भवभमण भव्वु ॥
वक्खाणिउ पुरउ हवेइ जाम, संतुट्ठउ वीसलु साहु ताम ।
जोइणिपुरवरि णिवसंतु सिट्ठु, साहुहि घरे सुत्थियणहु घुट्ठु ॥
१३६५
पणसट्ठि सहिय तेरहसयाइं, णिवविक्कम संवच्छर गयाइं ।

१ यह मूल ग्रन्थ कार का पाठ नहीं है। ग्रन्थ रचना के पश्चात् जोड़ा हुआ है।

विलसउ गोमिणि, णच्चउ कामिणि।
घुम्मउं मद्दलु, पसरउ मंगलु।
सति त्रियभउ, दुक्ख णिसुंभउ।
धम्मच्छाहें, सहु णरणाहें।
सुहु णंदउ पय, जय परमप्पय।
जय जय जिणवर, जय भवभयहर
विमलसु केवलु, णाणु समुज्जलु।
महु उप्पज्जउ, एत्तिउ दिज्जउ।
मईं अमुणांति, कव्वु करंति।
जं हीणाहिउ, काइं मि साहिउ।

घत्ता

तं माय महासइ देवि सरासइ, णिहयसयल संदेहदुह।
महु खमउ भडारी तिहुअणसारी, पुप्फयंत जिणवयणरुह॥

इय जसहरमहारायचरिए महामहल्लणण्णकण्णाहरणे महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे चंडमारिदेवय मारिदत्तरायधम्मलाहो अवेविसगागमणं णाम चउत्थो परिच्छेउ सम्मत्तो।

संवत् १६१२ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे गुरुवारे अश्लेखानक्षत्रे तक्षकगढमहादुर्गे महाराजाधिराज राउ श्री रामचन्द्रराज्यप्रवर्त्तमाने श्र आदिनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्रीललितकीर्त्तिदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये छाबडा गोत्रे सा सोढा तद् भार्या सुहागदे तत्पुत्राश्चत्वारः प्रथम सा० चाहड द्वि० सा० दूलह, तृतीय सा० देवा, चतुर्थ सा० पूना। प्रथम सा० चाहड भार्या मदना, द्वि० दूलह भार्या दूलइदे तत्पुत्रास्त्रयः। प्रथम सा० पोया द्वि० सा० थेल्हा तृतीय सा० श्रीपाल। प्रथम सा० पोय भार्या पांसरि तत्पुत्रौ द्वौ, प्रथम सा० सुरभाण द्वितीय चि० पचाइण। प्र० सा० सुरत्राण भाया सुरत्राणदे। द्वि० सा थेभाल्हा र्ये द्वे प्रथम थेल्हश्री द्वितीय कौंतिगदे तत्पुत्रास्त्रयः प्र० सा० डूंगरसी द्वि० चि० मेला, तृतीय सा० तोल्हा। प्र० सा० डूंगर भार्या दाड्यौदे। तृ० सा० श्रीपाल भार्ये द्वे प्र० स्वरूपदे द्वि० ल्हौकन तत्पुत्रौ द्वौ प्र० चि० रूपा द्वि० चि० धर्मदास। तृ० सा० देवा भार्ये द्वे प्रथम थोसरि द्वितीय स्वरूपदे तत्पुत्रौ द्वौ प्र० सा० सरवण द्वि० सा० ईसर। प्रथम सा० सरवण भार्या सुहागदे, तत्पुत्र चि० हेमराज द्वितीय सा० ईसर भार्या अहंकारदे चतुर्थ सा० पूजा भार्या-वाली एतेषा मध्ये सा० पूजा भार्या वाली इदं यशोधरचरित्रं लिखाप्य सोलहकारणव्रतोद्यापनार्थं मंडलाचार्य श्रीललितकीर्त्तये दत्तं।

संवत् १५८० वर्षे आसोज सुदी १० शनिदिने श्रवण नक्षत्रे श्री यथानामनगरे तत्पार्श्वे सिकराबद शुभस्थाने सुलितान साहि इब्राहिमराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे पूर्वाचलदिनमणि षट्तर्कतार्किकचूडामणि वादिमदद्विपसिंह विबुधवादिमददलनवादिकंदकुद्दाल सकलजीव अबुधप्रतिबोधक भट्टारक श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य तर्क्क व्यकरणछंदोलकारसाहित्यसिद्धांतज्योतिषवैदक संगीत शास्त्रपारंगत जिनकथित सूक्ष्म सप्ततत्व नवपदार्थ षट्द्रव्यपचास्तिकाय अध्यात्मग्रंथसमुद्रमध्यमहारत्नमार्यनिरतिचार सीलव्रतसागर संपूर्णकादशप्रतिमापरिपालक श्री प्रभाचन्द्र गुरुस्वामिचरणस्मरणेण हर्षितचित्तदेशव्रति तिलकीभूत ब्रह्म बीडा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये परमश्रावक सो क्रिता तस्य भार्या मीता तयोः पुत्रास्त्रयः । प्रथम सा० देवू तस्य भार्या राणी । द्वितीय पुत्र सा० नरसिंघु भार्या धामणि तृतीय पुत्र सा धणसी भार्या राणी देवू पुत्र सा दोदू तस्य भार्या सवीरी तयोस्पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र सा. धरमू भार्या देवल। द्वितीय पुत्र सा० दासा तस्य भाया सूहो। तृतीय साह विमलू चतुर्थ पुत्र गजपालु एतेषां मध्ये साह दोदू इदं यशोधरशास्त्र लिखाप्य कर्मक्षयनिमित्त ब्रह्मवीडाय दत्त ।

३२. रत्नकरण्ड शास्त्र ।

रचयिता श्री पंडिताचार्य श्रीचद । भाषा अपभ्रंश । पत्र संख्या १४५. साइज ११×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०। ४४ अक्षर प्रति पूर्ण होने के साथ २ सुन्दर भी है। अन्तिम पृष्ठ नहीं है। रचना संवत् ११२० लिपि संवत् १६४० ।

मगलाचरण—

सो जयउ जयम्मि जणो, पढमो पढमं पयासिउ जेण ।
कुगईसु पडंताण दिण्णं करलंवणो धम्मो ॥ १ ॥
सो जयउ संतिणाहो, विग्घसहस्साइ णाम मित्तेण ।
जस्साविहत्थिऊण, पाविज्जइ ईहिया सिद्धी ॥ २ ॥
जयउ सिरिवीरइदो, अकलंको अक्खउ णिरवारणो[1] ।
णिम्मलकेवलजोएहा उज्जोइय सयल भुवण यत्तो ॥ ३ ॥
सिद्धिविद्धि जयवुद्धि, तुट्टि पुट्टि पीयकर ।
सिद्ध सरूव जयतु, चउवीसवि तित्थकर ॥ ४ ॥

प्रारम्भ मे कवि ने आचार्यों का इस प्रकार स्मरण किया है—

पणवेपिणु जिणवयणुग्गयाहँ, विमलइ पयाइं सुयदेवयाहँ ।

१ अणावरणो ।

चारु गुणोह रयणरयणायरु । चाउरंग गण वछल्लायरु ॥
इंदिय चवल मयह मयाहिउ । चउकसाय सारंग मिगाहिउ ॥
सिरिरयणदुज्जल जसु सज्झायउ । णामे सहमकित्ति विक्खयउ ॥

घत्ता

तहो देवकित्ति पुरु सीसु हुउ, वीयउ अहो वासिणि मुणि ।
वारिंदु उदयकित्ति वि तहासुहइदु वि पचमउ भणि ॥

जो चरणकमलआयमपुराणु । णाअत्त इ वहु सायमसमाणु ॥
आइरिय महागुणगणसमिद्धु । वछल्लमहोवहि जय पसिद्धु ॥
तहो श्रोर इदुमुणि पंचसासु । दूरुज्झिय दुम्मइ गुणणिवासु ॥
सउजणण मडमाणिकखाणि । वयसालालकिउ दिव्ववाणि ॥
सिरिचंदुणाम सोहण मुणीसु । सज्झायउ पंडिउ पढम सीसु ॥
तेणेउ अणेयछरियधामु । दमणकह रयणकरंडु णामु ॥
किउ कव्वु विहिय रयणोहधामु । ललियरक्खरु सुयणमणोहिरामु ।
जो पढइ पढावइ एय चित्तु । सइ लिहइ लिहावइ जो णिरुत्तु ॥
आयण्णइं मण्णइं जो पसत्थु । परिभावइ अहिणिसु एउ सत्थु ॥
जिप्पइ ण कसायहि इंदिएहिं । तो लिप्पइ ण सो पासंडिएहिं ॥
तहो दुक्किय कम्मु असेसु जाइ । सो लहइ मोक्ख सुक्खुब्भावइ ॥
जिणणाह चरणजुय भत्तएण । अमुणंते कत्थु करंत एण ॥
जं काइं वि लक्खण छंदहीणु । मइं वुत्त इत्थ अइ अहिउ हीणु ॥

घत्ता

तं खमउ सव्वु महु जणणामिय, सुयदेवय अण्णाणमइ ।
जगपुज्जणिज्ज सिरिचंदमइ, तहय भडारी विउस सइ ॥ १ ॥
एयारह ते वीसा वासमयाविक्कमस्स णरवइणो ।
जइयागयाहु तइया समणियं सुंदरं एय ॥ २ ॥
कण्णणरिंदहो रज्जिसुहि सिरिसिरिवालपुरम्मि ।
बुहसिरि चंदें एउ किउ णंदउ कव्वु जयम्मि ॥
जयउ जिणवरु जयउ जिणधम्मु, जिणवयणुवि जयउ जइ ।
जयउ साहु सतइ सुहकर पणवंतहो भव्वयण कुणउ जग्रहो सासुहपरंपरं ।

प्रारम्भिक पाठ—

पणवेवि अरिंदहो चरमजिणिंदहो वीरहो दसणणाणवहा।
सेणियहो णरिंदहु कुवलयचंदहो, णिसुणहो भवियहो पवरकहा।

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जयदेवाहिदेव तित्थंकर, वड्ढमाणजिण भव्वसुहकर।
णिरूवमकण्णरसायणु धण्णउं, कव्वु रयणु कुडल भउ पुण्णउ।
सो णंदउ जो णियमणिभावइ,[1] वीर चरित्तु विमलु आलावइ।[2]
सो णंदउ जो लिहइ लिहावइ, रस रसइ जो पढइ पढावइ।
जो पयत्थु पयडेइ[3] सुभव्वहु, मणिसद्दहणु करेइ सुकव्वहं।
णंदउ देवरायणंदणुवर, होलिवम्मु कण्णुवउ णयकर।
एहु चरित्तु जेण वित्थारिउ, लेहाविवि गुणियणउवयारिउ।
होउ संति णिसेसहं भव्वहं, जिणपयभत्तहं बियलियगव्वहं।
वरिसउ सयल पुहमि घरवारहं, मेहजालु पावसवसु धारहं।
घरि घरि मंगलु होउ सउणउ, दिणि दिणि धणधण्णह[4] सपुण्णउ।
होउ संति चउविहजिणसघह, देस वास णरणाह दुलघह।
णंदउ सासणु वीर जिणेसहो, णिग्गउ सेणिउ णरयणि वासहो।
मदर सिहरि होउ ज मुच्छउ, घरि घरि दुंदुहि सद्दु अतुच्छउ।
होउ सयल पूरत मणोरह, परमाणंदु पवड्ढउ इह सह।
अमियविडउ सहएवह णंदणु, जगि जगमित्त वि दुरियणि कदणु।
विण्णवेइ सम्मय दय किज्जउ, सासय सुहु णिवासु महु दिज्जउ।
अल्हसाहु साह सुमहु णदणु, सज्जणजणमणणयणाणंदणु।
होहु चिराउ सणियकुलमडण, मगणजणदुहरोरविहडण।
होउ संति सयलह परिवारह, भत्तिय वड्ढउ गुरुवय धारहं।
पउमणंदि मुणिणाह गणिंदहु, चरण सरणु गुरू कइ हरि इंदहु।
जं हीणाहिउ कव्वु रसढइं, पउ विरइउ सम्मइ अवियढइ।
त सुयणाण देवि जगसारी, महु अवराहु खमउ भडारी।

घत्ता

दयधम्मु पवत्तणु विमलु सुकित्तणु णिसुणतहो जिण इंदहो।

१ मणणइ २ आयण्णइं ३ पयडे ४ धणधण्णइं।

सवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बृहस्पतिवारे श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये अजमेरा गोत्रे साह नाथू तस्य भार्या तोला तत्पुत्र तिहुण तस्य भार्या चोखी तत्पुत्र धाना पारस। धाना भार्या नेमी तत्पुत्र कचमल, हेमराज, वील्हा, भरथा, श्रीवत। कचा भार्या गागी, हेम भार्या पूरा, पारस भार्या करमा, द्वि. भार्या गेगी एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं लिखाप्य नेमी आर्यका विनयसिरी जोग्यदत्तं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या ६२. साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति नवीन है तथा पूर्ण है।

संवत् १६३१ वर्षे माह सुदि ११ शुक्रवारे श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक पद्मनन्दिस्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचंद्रस्तत शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचंद्रस्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये रांवका गोत्रे साह देवा भार्या रानादे तस्य पुत्र तृतीय साह खेमा तस्य पुत्र घाटमल्ल द्वि० पुत्र साह वील्हा भार्या लाली तस्य पुत्र साह थेल्हा भार्या तिहणश्री तस्य पुत्र नानग। तृतीय पुत्र साह खेता तस्य भार्ये द्वे०. प्रथम महरखु द्वि० मानं तस्या पुत्र चत्वारः प्रथम पुत्र नानू द्वि० पुत्र हीरा तृतीय पुत्र विइरा चतुर्थ पुत्र पाला। हीरा भार्या हीरादे तस्य पुत्र बुधमल्ल। पाला भार्या प्रतापदे तत्पुत्रौ पुत्र-द्वौ प्रथम हेमराज द्वतीय नेमदास। एतेषां मध्ये इदं शास्त्रं घटापितं साह हीरा दशलाक्षणीक व्रतकनिमित्य मुनिश्रीरत्नानि ? मालपुरा मध्ये साह धान, चपा, हेमा, हीरा, के देहुरा (मंदिर) श्री भगवानदास राज्ये।

प्रति नं० ४ पत्र संख्या ५६. साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३५×४० अक्षर। प्रति सुन्दर और स्पष्ट है।

संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदी २ रविवारे कृतिका नक्षत्रे लाडणूपुरवरे आदिनाथचैत्यालये पेरोजखान राज्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिणचन्द्रदेवास्तत शिष्य मुनि जयनंदि तत् शिष्य ब्रह्म अचल्ल लिखितं कर्मक्षयार्थं ब्रह्म वीराय दत्तं।

३३. वर्द्धमान कथा।

रचयिता श्री नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या १७ साइज १०॥×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ३२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३२×३६ अक्षर। लिपि सुन्दर है। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

तवसिरिभत्तारहो णिज्जियमारहो पणविवि अम्मइं जिणवरहो।

छक्कम्मिहिँ पसत्ति मणिज्जइ, छक्कम्मिहि सुरणय रिहि गम्मइ ॥
छक्कम्मिहिँ पसद्धि जणि लब्भइ, छक्कम्मिहि तिहुयणु खणि खुब्भइ ।
छक्कम्मिहिँ वसिजायहिँ णरवर, छक्कम्मिहि देवंवि आणायर ॥
छक्कम्मिहिँ वञ्छिउ संपज्जइ, छक्कम्मिहि सुरदु दुहि वज्जइ ।
छक्कम्मिहिँ उप्पज्जइ केवलु, छक्कम्मिहिँ लब्भइ सुहु अविचलु ॥

घत्ता

छक्कमइ जो णीसल्लमणु, भविउ भवाहि विवज्जिउ पालइ ।
सो जिणणाहेँ देसियउ मोक्खम्मगु थिरदिट्ठि णिहालइं ॥ [1]

गाथा

विहियाएं सवुद्धीए एयाइं मए णिहत्थकम्माइं ।
अमुणतेण सुअत्थ जिणणाहपयासिय सम्म ॥

ताइ मुणिहि सोहेवि णिरंतरु, हीणाहिउ विरुद्ध णिहियक्खरु ।
फेडिव्वउममत्तु भावंतिहिँ, अम्हह उप्परि बुद्धिमहंतिहिँ ॥
छक्कम्मो वएसु एहु भवियहिँ, वक्खाणिव्वउ भत्तिए णामयह ।
अंवपसाए चच्चिवणि पुत्तेँ, णिहछक्कम्मपवित्तिपवित्तेँ ॥
गुणवालहो सुएण विरयाविउ, अवरेहिंमि णियमणि सभाविउ ।
वारहसयहिँ ससत्तचयालिहिँ, [2] १२७४ विक्कम सवच्छरहो विसालिहिँ ॥
गयहिमि भद्दवयहो पक्खतरि, गुरुवारम्मि चउद्दसि वासरि ।
एक्कें मासें एहु समाणियउ, सइं लिहियउ आलसु अवगणिउं ॥

णंदउ परसासण णिण्णासणु, सयलकाल [3] जिणणाहहो सासणु ।
णंदउ अणिसु देवि वाएसरि, जिणमुहकमलुब्भव परमेसरि ॥
णंदउ धम्मु जिणिंदि भासिउ, णंदउ संघु सुसील विहुसिउ ।
णंदउ महिवइ धम्मासत्तउ, पयपरिपालण णायमहंतउ ॥
णंदउ भवियणु णिम्मलु दंसणु, धकम्मीहिँ पाविय जिण सासणु ।
णंदउ अंव पसाउ वियक्खणु, अमरसूरि लहु वंधु वियक्खणु ॥
णंदउ अवरुवि जिण पय भत्तउ, विवुहवग्गु भाविय रयणत्तउ ।

---

१ पय २ वसयाहतहससत्तचयालिहिँ ३ कालि ।

वास्तव्या साधु यजने भार्या उदौसिरि पुत्र जौत गूजर। जौतू भार्या सरो पुत्र बाधू तस्य भार्या जोल्हा ही द्वि० सुहाग श्री पुत्र थाढा एतेषां मध्ये साधू जौतू भार्या सरो तया निजज्ञानावरणीयकर्मक्षयनिमित्त इदं षट् कर्मोपदेशशास्त्र लिखाप्य बाई जौतसिरि शिष्या बाई विमलसिरि तस्या देवशास्त्रगुरूपूजाविधान महामहोत्सवेन बाई विमल श्री योग्य सम्मर्पित। लिखित पंडित रामचन्द्र। इदं शास्त्र ब्रह्म पेमा तेन ब० इश्वरविमल दासाय समर्पित।

३५. षट् पाहुड सटीक।

मूलकर्त्ता श्री कुंदकुंदाचार्य। टीकाकार श्री श्रुतसागर। भाषा प्राकृत संस्कृत। पत्र संख्या १६५ प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे ४४×४८ अक्षर।

प्रशस्ति—

संवत्सरे वाणरसमुनीदुमिते १७६५ माघमासे शुक्लपक्षे पंचमीतिथौ पुनर्वसुनक्षत्रे वनोपवनदीर्घिकासरोनदीप्रसादशोभिते चतुर्विधसंघकृतगीतवाद्यप्रभावन निरंतरप्रवर्द्धितनित्योत्सवे बगरू नगरे श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालये श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति श्रीमद् जगत्कीर्त्तिजितः शासनकारी निजवचनचातुर्य पाडित्यगुणरंजित नागरलोकवृंदः पंडित श्री छीतरमल्लः तत् शिष्यः स्वशीलपडित्यवदान्यलोकरंजकत्व धैर्यगाभीर्यसौंदर्यप्रमुख गुण रत्नरोहणाचलः पंडितचेतोगजायत्तीकरणसृणि. प्रख्यः पंडित श्री हीरानंद तत् शिष्येण चोखचंद्रेण स्वशयेनेदं षट् पाहुडशास्त्रं संलिख्य भट्टारक श्री जगतकीर्त्तिशिष्याय श्री दोदराजाय प्रदत्तम्।

प्रति नं० २ पत्र संख्या १८६ साइज ११॥×५ इञ्च। लिपि संवत् १५८५।

संवत् १५८५ वर्षे महाबुदी ४ श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये बाकलीवालगोत्रे साह चाचा भार्या चौसिरि तत्पुत्र साह नेमा भार्या सवीरी द्वि० कोडमदे तयोः पुत्र साह घोपाल सांतू रूपा। साह घोपाल भार्या दानसिरि। साह सातू भार्या बाई साह रूपा भार्या दाभा एतेषां मध्ये कोडमदे रोहिणी व्रतोद्योतनार्थं इदं शास्त्र लिखाप्य भक्त्या मुनि श्री धर्मचंद्राय ज्ञानपात्राय दत्तं।

प्रति नं० ३ पत्र संख्या १६ साइज ११॥×५॥ इञ्च।

संवत् १६०२ वर्षे वैशाखसुदी १० तिथौ रविवासरे उत्तराफाल्गुननक्षत्रे राजाधिराजशाह आलम राज्ये नगरपद्मावती मध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणेसरस्वतीगच्छे भट्टारक श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री

३७. श्रीपाल चरित्र ।

रचयिता श्री पं० नरसेन। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ सख्या २६ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४४×४८ अक्षर। प्रति प्राचीन है।

मंगलाचरण—

सिद्धचक्कविहिरिद्धिय गुणहसमिद्धय पणवेप्पिणु सिद्धमुणीसरहो।
पुणु अक्खमि णिम्मलु भवियहमगलु सिद्धमहापुरसामियहो॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

घत्ता

इय रज्जु करतउ पुणु वि विरत्तउ देविसयलु णियपुत्त हो।
ससारहो संकिउ पुणु निखकिउ मतिपुरोहियजुत्तहो॥

पुहवीपालुहु रज्जु समप्पिउ, अप्पउराय महाव्वइ थप्पिउ।
मयणासुंदरिपमुहते उर, हरडोरउत्तारिय णेउर।
सयल विसंजइ यउ स तायउ, दुविहिं तवयरणेहि विरायउ।
महासुक्क सुरइदुह वोप्पिणु, गइय देव तियलिंगुह णोप्पिणु।
अंगरक्खजहिं जहिं वउ भायउ, तहि तहिं देवत्तणुसुहु पावउ।
सयल वि णरणरवइ समदेप्पिणु, घोरु वीरु तवयरणु चरेप्पिणु।
गउ सिरिपाल परमणिव्वाणहो, सिद्धचक्कफलु भवियहु जाण हो।
अवरु वि नरुनारिज्जु करेसइ, एव माइ सो फलु पावेसइ।
सग्गि सुराहिव सुहु भुंजेसइ, सुक्खएण्ह सिहु कील करेसइ।
कत्तिय आसाढहि फग्गुणमासहि, ते णंदीसर दीउ गवेसहि।
वहु भंत्ति हिं जिणपूयकरें सहि, सिद्ध चक्कफलु सुहु भुंजेसइ।
जिणइ अकित्तिमाइं वदेसइ, पुणु महियलि चक्कवइ हवेसहिं।
करिं विरज्ज पुणु मोक्खु लहेसहिं, . . ।

घत्ता

सिद्धचक्क विहि रइयमइं, णरसेण भणइ णियसत्तिए।
भवियणजणआणदयरे, करिवि जिणेसर भत्तिए॥

इय सिद्धचक्ककहाए महारायसिरिपालमयणासुदरिदेविचरिए पंडितसिरिणरसेण विरइए इह

सर्वज्ञोक्तधर्मरंजितचेतमान् कुटुंबभारधरधुरान साधु श्री नोकमु तद्भार्या शीलतोयतरंगिनी हीरा तयो. पुत्र सर्वगुणालंकृत देवशास्त्रगुरुविनयवत सर्वजीवदयाप्रतिपालकान् उद्धरणधीरान् दानश्रेयांसावतारान् आभारमेरान परमश्रावक महासधु श्री महे सुतेनेद श्रीपालनामशास्त्र कर्मक्षयनिमित्त लिखापित। लिखितं पं० वीरसिंधु। वाई मानिकी योग्य प्रदानार्थं।

प्रति नं० ४ पत्र सख्या ३७ साइज ११×५ इञ्च।

लेखक प्रशस्ति—

सवत् १६३२ वर्षे वैशाख अमावस्यां तिथौ भौमवासरे शावरतपगच्छे प० न्यास, श्री प० नयरत्नगणिशिष्य प० न्यास न्यास विद्यासुन्दरगणि लिख्यत चाटसुमध्ये।

श्री पार्श्वनाथचैत्यालये चपावतीमहादुर्गे महाराजाधिराजरावश्रीभगवानदासराज्ये श्री मूलसघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तदाम्नाये तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तत् शिष्य चन्द्रकीर्त्तिदेवा खंडेलवालान्वये साह गोत्रे साह टेहू भाया वाहू। तत्पुत्र साह नानू भार्या नारंगदे। द्वि० भार्या दिवू। नानू पुत्राः पंच प्रथम पुत्र साह कपूरा भार्या नमी। तत्पुत्र गुणराज। द्वि० पुत्र साह श्रवण भार्या साहिवेद तत्पुत्र हारिल ।

३८. श्रीपाल चरित्र।

रचियता प० रइधू। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या १२८ साइज ११×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २६×३२ अक्षर। प्रति शुद्ध तथा स्पष्ट है।

मगलाचरण—

सिद्धहं सुपसिद्धहं वसुगुणरिद्धहं, हियइ कमले धारे वि निरु।
अक्खमि पुणु सारउ सुहसयसारउ, सिद्धचक्क माहप्पुवरु॥

अन्तिम पाठ—

इय चरिउ सुहायरू बुहयणमणहरू नंदउ महियलि गुणभरिउ।
भवभमणविणासणु दुरियपणासणु अत्थपसत्थहि विप्फुरिउ॥
सत्यं वदति व्रतानि कुरुते शास्त्र पठत्यादरात्।
मोह मुञ्चति गच्छति स्वसमय धत्ते निरीहपद॥
पापु लुंपति पाति जीवनिवह ध्यान समालबते।
सोऽयं नदतु साधुरेव हरसी पुष्णाति धर्मं सदा॥ १॥

जो पुणु वाटूसाहु पयासिउ, तहु चउत्थु नंदणु विजयासिउ।
हरसी साहु नामु महि पायडु, जो जिण भणिय सेठ्ठ अत्थहु पडु।
तहु कलत्त परियणह पहाणी जिह सिरि रामहु सोया जाणी।
देवसत्थ गुरु वयणकलायर, दिवचदही नामं नेहायर।
वोई भज्जा पुणु वील्हाही, न गोविंदुहु लछिपसाई।
तहु नंदणु पुणु कइयण वणिउ, जो डू गररायं निरूमणिउ।
नामें करम सीहु सो नंदउ अहनिसु जिणवर चरणइ वंदिउ।
जंउ णाही तहु तय सुपसिद्धो, विहु कुल सुद्ध रूवगुणरिद्धि।
पुणु हरसीहहु पुत्ति पउत्तो, न मानतमई गुणजुत्ती।
जाइ अखंडु सीलु वउ पालिउ, कलिमलु असुहु सचित्तहु खालिउ।
पुणु विननो तहु लहु सुयसारी, सयलहु परिवारहु सुपियारी।
एहु गोतु नंदनु महि मंडलि, जा रवि सांस निवसहि आहंडलि।
एयह सव्वह मंतिस पहाणउ, सत्थ पुराण भेय बुह जाणउ।
कलिकालें जिणसाणु द्धरियउ, चेयणु गुणु अरूडु विप्फुरियउ।
तर्णिकाल रयणत्तउ अंचइ, सुद्ध धम्मु जो अहनिंसु सचइ।
जि वलहइ पुराणं सुहरू, कारा वियउ पयत्ते मणहरू।
सो हरसीह साहु चिरु नंदउ, सज्जण चित्तहु जणिया णदउ।

घत्ता

पोमावइ पुरवाड वंसिउ वणउ कुलतिलउ।
हरसिघ सघविहु पुत्तु रइधू कइगुण गणनिलउ॥

इति श्रीपालसिद्धचक्रचरित्रं रइधू पंडितकृत समाप्त।

संवत १६३१ वर्षे कार्तिक वुदी ६ शुक्रवासरे पुष्यनक्षत्रे साधानामयोगे श्री मूलसघे नद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये षड्त्रिशद् गुणविराजमान व्याकरणछंदोलंकारसाहित्य-तर्क्कागमादिशास्त्रार्णवपारप्राप्तान् भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री चन्द्रकीत्तिदेवास्तत् भ्राता आचार्य श्री हेमचन्द्र तदाम्नाये खडेलवालान्वये पुस्तिका लिखापित नागरचालमध्ये टौंक समीपे साखिणा नगरे पातसाह श्री अकब्बरविजयराज्ये सोलंकी महाराय श्री सुरजन श्री साह गोत्रे साह कमा भार्या करणादे पुत्र चिरंजीव साह उदा भार्या उत्पौदे पुत्र द्वि० चिं० साह भीखा। साह भीखा भार्या भावलदे पुत्र जैसा द्वि० पुत्र मोटा। साह सीखा भार्या सिंगारदे पुत्र चिं० तेजपाल साह माधू भार्या मुक्तादे पुत्र साह छीत

सावयवग्गु वि पुण्णसमग्गु वि, घरि घरि वीयराउ अंचिज्जइ।
मिच्छातम भरू भव्वह खिज्जउ, ... ।
मुणि जसकित्तिहु सिस्स गुणायर, खेमचन्द हरिसेण तवायर।
मुणि तह पाल्ह वमुच णवहु, तिण्णि वि पावहु भरू णिक्कदहु।
देवराज सघाहिव णदणु, हरिसिंघु वुहयणकुलआणदणु।
पोमावइ कुलकमलदिवायरू, सोविसु णदउ इत्थु जसायरू।
जस्स घरि जि रइधू वहु जायउ, देव सत्थ गुरू पयअणु रायउ।
चरिउ एहु णदउ चिरू भूयलि, पाढ ज रूपवट्टइ इह कालि।

घत्ता

सोणगिरि दुग्गहि खयआरि वग्गहि सुक्खयरे।
गोउर चउ दारहिं तोरणफारहिं वुहयणमनसतोसयरे॥

धयालिइमेहहिं जिणवरगेहहिं, मणिगणचदिरि णयणा णदिरि।
जिणु पुज्जिज्जइ धम्मुसुणिज्जइ, णिच्चजिजत्थहि थक्क अवत्थहिं।
तव ता किज्जइ भवमलु खिज्जइ, पुणु पुणु घरि घरि घण कं वण्ण भरि।
मंगलगिज्जहि उछवकिज्जहिं, सावय लोयहि मणहु पमोवहिं।
तिविहं पत्तहं गुणगणजुत्तहं, दाणाइं दिज्जइ पुण्णाइं लिज्जइ।
घरि घरि सद सणु भाविज्जइ, तसु भावणाइं कम्ममलु खिज्जइ।
आवणि आवणि वरकचण मणि, विक्कहि वणिवर रूवें जियसर।
करि करदाणें जहिं अपमाणे, पंथइं सित्तइं अलिआसत्तइ।
दह दिह धविय कत्थणमाविय, तहि पुहइसरू णाइ सुरेसरू।
रूवें ण सरू कंतिए ससिहरू, लच्छहिं आयरू णावइ सायरू।
कर करवालो अरिखयकालो, तोमर वसहु लद्ध पसंसहु।
उज्जोयणयरू कुलसंतयधरू, णामें डुगरू अरियण खययरू।
तासु जि रज्जहिं मई णिरवज्जहिं, जिणचरिठत्ति सुहमइ वति।
विरयउ कव्वो एहु जि भव्वो, पुव्वाहयरियहं पट्टि गुणायरू।
अणु कमेण सठिउ वयसायरू, ... ।

घत्ता

मिच्छित्त तिमिरहरू णाइसहसयरू आयमत्थ हरू तवणिलउ।

सहजो भवगुणमणिरयणायरु, तिविह पत्त दाणेण कयायरु ।
सहजपालु पढमउ जय वल्लहु, तेजू इयरु विवुह जण दुल्लहु ।
णिरुवम रूवसीलवयसज्जा, ... ही पढमिल्लहु भय ।
पुरिमरयणउ पाय णरखाणी, सचित्तजि परहु उवसमवाणी ।

घत्ता

तहिं उवरि उवण्णा लक्खणपुण्णा छह णंदण आणंदयर ।
ण जिणवर भासियं दव्व सुहासिय णं छहरसजणपोसयर ॥

ताह पढमु वरकीत्तिलयाहरु, दुहिय जणाण दुक्खघणखयमरु ।
दाणु णाय करुणं सुक्खंकरु परिवारहु पोसणे सुरभूरुहु ।
जिणपूयाविहि करणपुरंदरु, णियकुलमंदिर वहु सोहाहरु ।
भूरि दव्वु ववसाएं अज्जिउ, लच्छि सहाउ चवलु णंडि वज्जिउ ।
जिणणाहहु पइट्ठ काराविवि, मणइ छिय दाणवहु दाविवि ।
तित्थयरत्तु गोत्तु जि बद्धउ, सयहिउ सहदेउ जसद्धउ ।
धामाहिय तहु भामिणिभासिय, जिणदासहु सुवरसणेहासिय ।
कुमरपालहिय जिणदासहु पिय, वहु उवभिज्जइ तहिं सीलहु सिय ।
झाणु झाइय जिणपय कमला, तिण्णि पुत्त हुयतांह गुणाला ।
पढमउ वीयउ तीयउअमला, वछरजुसाभु नामाला ।

घत्ता

सहजपाल सुउउ यउ पुणु हुउ छीतमु गयतमु विमलजसु ।
दुहियण दुहखंडणु णियकुलमंडणु, गुणवण्णणि कोई सुत ॥

तासु पियखिम गुणसील अतुली, जायण जण आसातरु वल्ली ।
खिउं धरहिय अहि हाणें साहिय, ताहिं गाभहुअ पुत्त गुणाहिय ।
छह पमाण भूयलि सुसमाणिय, गुरुयण जेहिं णिच्च सम्माणिय ।
वणिवर यट्टह जो मुक्खेसरु, वीयराय पय पकय महुयरु ।
वीरदेउ पढमउं गुणमंदिरु, दाणु णाय करु जो नाग सुंदरु
वीयउ हेमाहेमु व दुल्लहु, णियपरियणयणम्मि अइवल्लहु ।
लदी णामे भासिउ तीयउ, देव सत्थगुरुपाय विणयउ ।
रूपा रूवें जिय मय रद्धउ, जिं मंहियलि जसु विम्मलुलद्धउ ।

सहजासाहु हिं पमुहहिर वणु, भायर चउक्कजु उपुणु वियणु।
सिरि सेट्ठिवंस उप्पणु धएणु, तेजा साहु जि णामे पसएणु।
तहु पिय जालपह्यि वएणणीय, परिवारभत्त मीलेणसीय।
तहिं गाठिभउ वएणासुयपुरिणा, राजसपालु ढाम्रू जि तिरिण।
तुरिया वि पुत्ति जा पुएणमुत्ति, णिच्चजि विरइय जिणणाह भत्ति।
खेमी ण मा वरसीलजुत्त, कोकइ वएणइ तहिं गुणह किंत्ति।
सा परिणिय तेण गुणायरेण, बहुकालिं जंति सायरेण।
णिय भायर णदणु गुण णिउत्त, मग्मेविणु गिणिहउ कमलवत्तु।
हेमा णामे परिवारभत्तु, तहु घरहु भारदेविणु विरत्तु।

× × × × ×

जिण वयधारण उक्कठएण, ससारू असारुउ मुणिमणेण।
जणणी जणु वि परवारलोउ, सयलह विषमावणु करि विसोउ।
अपुणु वि खमेप्पिणु तक्खणेण, जिणवेसुधरिउ णीसल्लएण।
जसकित्तिमुणिदहु णवि विपाय, अणुवयधारिय तिं विगयमाय।
तासउ णदणु दिवराजु अएणु, सा घाहिय पियणेहि पसएणु।
परिवारभत्त गुण सेणिजुत्त, णियवसगयण उज्जोयमित्त।
सच्चावइ भासि सच्चेवलीणु, जिणधम्मकज्जिकारणयत्रीणु।
तहु णदणजाया दुण्णिवीर, जिणधम्मधुरधरगुणगहीर।
चहुंव्वकालयरू सिखरचन्दु, पढमउ सज्जणह जणइ अगदु।
वीयउ पुणु णामे मल्लिदसु, वीसेगूणहु जिणवरहु दासु।
तोसउहु-पुत्ति पुणु विरिणजाय, जिणधम्मि कम्मि रयविगम गाय।
जोठी णामे जीवो जिउत्त, जिणपयगवोवयणिचसित्त।
वयणियमसीलपालणसमग्ग, जिणसमयहु भरू धरणअभग्ग।
लहुडी णामे सेल्ही पवित्त, विहुं परिवारहं जा णिचभत्त।
सेलें सोहग्गे सिय समाण, णिरू पत्तहं चउविह देइ दाण।
तहिं णदणह याविण्णिसज्ज, झाडा तेजा णामे मणुज्ज।
पच वि भयरह जि अएणसुया, जालही वीरो पमुहाइ हुया।

इहु परियणु वुत्तउ सजसवित्तउ, जा ऋणयायलु सूरससि।
जावहि महिं मडलु दिवे आहंडलु, णदउ तावहि सजसवसि॥

णामे सिद्धत्थे सजएण, विदिसेणें तव्रसिरिरजिएण।
पुणु विजयसेण पुठिल्लएण,[1] पुणु गगएव णामिल्लएण।
पुणु धम्मसेण णक्खत्तएण, जइपाले मुणिजय पत्त एण।
पड्डवु ध्रुवसेणे जियमएण, पुणु कसायरियं गयभएण।
भद्दे जय भद्दे पुगमेण, लोहज्जे सिवकोडियकमेण।

घत्ता

गणहरएव मुणिंदहि कुवलयचदहें एयहि अवरहिं अविचलु।[2]
आहासिउ पवयणे जहं मइभवियणितहं[3] पचणमोकारहो फलु[4] ॥

जिणिंदस्स वीरस्स तित्थे वहत्ते, महाकुंदकुंदाणए[5] एतसते।
सुसिक्खाहिहाणें[6] तहा पोमणंदी, पुणो विसहुणंदी तउ णदणंदी।
जिणुदिट्ठ धम्मं धुराणं विसुद्धो, कयाणेय गंधो जयते पसिद्धो।
भव[7] वोहि पोउं महीविस्स[8] णदी, खमाजुत्तसिद्धं तिउं विसहणदो।
जिणिंदागमाहासणे एयचित्तो, तवायारणिट्ठाइ लद्धाइ जुत्तो।
णरिंदामीरदाहिवाणदवदी, हुउ तस्स सीसो गणीरामणदी।
असेसाणगंथम्मि पारमिपत्तो, तवे अगवी भव्वराईवमित्तो।
गुणायास भूत्रोसु[9] तिल्लोक्कणदी, महापंडि अंतम्स माणिक्कणदी।

घत्ता

पढमसी सुतहो जायउ, जगविक्खायउ मुणिणयणदि आणिदिउ।
चरिउ सुदमण णाहहो तेण, अवाह हो विरइउ वुहअहिणदिउ।
आराम गाम पुरवरणिवेसि, सुपसिद्ध अवती णाम देसि।
सुरवइ पुरिव्व विवुहयणइट्ठ, तहि अत्थि धारणयरी गरिट्ठ।
रणिदुद्धर अरिवर सेलवज्जु, रिद्धियदेवासुरजणियचोज्जु।
तिहुयणु णारायण सिरिणिकेउ, तहिणरवइ पुगमु भोयदेउ।
मणिगणपहदूसिय रविगभित्थे, तहि जिणवर वद्धु विहारु अत्थि।

---

१ पोठिल्लएण २ अवियलु ३ मइभवेयणेतिह ४ पंचणमोकारह फलु ५ महाकुन्दकुन्दएण ६ सुसिक्खाहि, सुएहाखारि, ७ ओहि ८ महीविसह, महाविरत ९ भूउ ।

वीरमदे तत्पुत्र सा० लाला तत्पुत्रौ द्वौ सा० रामा कर्म्मा तद्भार्या रैणादे तत्पुत्र सा० पर्वत तत्पुत्रास्त्रयः सा० आशा तद्भार्या असलदे द्वितीय सा० कर्म्मा तद्भार्या करणादे तृतीय पुत्र सा० लूणा तद्भार्या ललितादे। तत्पुत्रै द्वौ प्रथम सा० नारायण तद्भार्या नौलादे द्वितीय पुत्र सा० केसोदास तद्भार्या केसरीदे एतेषां मध्ये सा० देवू तद्भार्या दाडौदे तत्पुत्र सुदरदास श्यामदास इदं शास्त्रं सुदर्शनाभिधानं लिखाप्य षोडशकारण-व्रतोद्यापनार्थं दत्त कर्मक्षयनिमित्त श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्त थे।

प्रति न० २. पत्र सख्या ६५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तिया तथा प्रति मे ३३–३८ अक्षर। लिपि सवत् १५०४.

प्रशस्ति—

सवत् १५०४ वर्षे मार्गसुदी ६ शुक्लपक्षे गुरुवासरे श्री काष्ठा संघे पुष्करगणे भट्टारक श्री गुणकीर्त्ति-वास्तत्पट्टे श्री यशकीर्त्तिदेवाः तस्य शिष्य श्री भवसेनदेवाः तस्य शिष्य भुवनकीर्त्तिदेवा। स० हुमामनि ताय भज्ज गुनविराजमान चतुर्विधदानसयुक्त मनगातास्य डालु भर्ज दौसिरी तस्य लघु भ्राता गुजरु। तस्य भार्या गुनसिरि तस्य पुत्र वत्यन पदमा तस्य लघु भ्राता नादा तस्य भार्जनरक पुत्र जिनदास तस्य भगिनि वइ धर्म्मिणि कर्मसयनिमित्त इद सुदर्शन चरित्र लिखापितं।

प्रति न० ३. पत्र सख्या १०६ साइज १०×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पक्तिया तथा प्रति पक्ति पर २५–२८ अक्षर।

संवत् १६३२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे चतुर्दशी दिवसे हस्तनक्षत्रे श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये वला-त्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा स्तत् शिष्यमडलाचार्य श्री ललितकीर्त्तिदेवा स्तत शिष्याचार्य श्री .. तदाम्नाये खण्डेल-वालवशे निवाई वास्तव्ये सेठी गोत्रे सा० थाछू तद्भार्या राजी तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम ठाकुर द्वि० देवा तृतीय सा० पहराज। सा० ठाकुर भार्या देउ तत्पुत्र साह महणा तद्भार्ये द्वे प्रथम बोली द्वि० लाडमदे तत्पुत्रास्त्रय प्रथम सा० हीरा भार्या हीरादे द्वितीय रामदास तृ० चि० शेशादेव भार्या देवलदे तत्पुत्रौ द्वौ। प्रथम चि० कोजू। साह पहराज भार्या पाटमदे एतेषा मध्ये साह पहराजेन इद शास्त्र सुदर्शन चरित्र लिखाप्य आचार्य हेमचन्द्राय धटापित।

४१. सुलोचनाचरित्र।

रचयिता महाकवि गणिदेवसेन। भाषा अपभ्रंश। पृष्ठ संख्या २४९. साइज १०×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३४–४० अक्षर। लिपि संवत् १५६०.

प्रारम्भिक पाठ—

तासु सीसु णिद्धि मयणुब्भउ, गुरु उवएसें णिव्वाहियतउ।
कहिय धम्मु परिपालियसजमु, भवियकमलरविणिणासियतमु।
सच्छपरिग्गहु णिहयकुसीलउ, धम्मकहाए पहावणसीलउ।
उवसम णिलउ चरिय रयरयणत्तउ, सोम्मु सुयणु जिणु गुणअणुरत्तउ।
देवसेण णामे मुणि गणहरु, विरइउ एउ कव्वु ते मणहरु।
असुण तेण किंपि हीणाहिउ, सुत्तविरुद्धउं काइं मिसाहिउ।
सयलु विखमउ देववाएसरि, तिहुयण जणणंदिय परमेसरि।
कुड्डु वुहयणु मोहेणिणु भल्ल तउ, केरंतु पउदेउणवल्लउ।
रक्खस सवत्सरे वुहदियसए, सुक्क चउद्दसि सावणमासए।
चरिउ सुलोयणाहि णिप्पउ, सद्दअत्थवणयसंपुण्णउ।

घत्ता

णवि मइकवित्त गव्वेण कियउ, अवरुण केणवि लाहें।
किउ जिणधम्मङो अणुत्तर गुहमणे कयधमुछहें॥

अथ सवत्सरेऽस्मिन् श्री नृपतिविक्रमादित्यराज्ये सवत १५७७ वर्षे पोसमासे कृष्णपक्षे नवम्या तिथौ सोमवासरे अश्वनी नक्षत्रे श्री योगिनीप्रत्यासने श्री कालिंदीतहे श्री फेरोजाबाददुर्गे गुणिजनव्रातिससव्यमान विद्वज्जनाहितनिवासाया भव्यजनाभ्यासपवित्रिताखिलनिवासिमनप्रवृत्तवासाया जिनधर्मरत्नाकारप्रियायां दुस्थितस्वस्थीकरणक्षमाया प्रतापपरमेश्वर महाराजाधिराज राजश्री इवराहिमशाहि रक्षमाणायां जैनबौद्धचार्वाक साख्य नैयायिक शैवादि षट् दर्शना द ससव्यताया जयवत श्री काष्ठासघे माथुरान्वये पुष्करगणे वादिकविभजनभट्टारक श्री ३ गुणकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री यशःकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीमलयकीर्त्तिदेवास्तत्पट्टोदयाद्रिभास्वद् भट्टारक श्री गुणभद्रसूरिदेवा स्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे श्री योगिनीपुरेवास्तव्यः सुश्रावक साधुनानिग तस्य भार्या साध्वी महीधरही लखणसी भार्या देवराजही तत्पुत्र वीरदास तस्य भार्या धनराजही तृतीय पुत्र साधु हेमा तस्य भार्या वेगाही एतेषा मध्ये चउधरी लखणसी तस्य भार्या शीलतोय तरगिणी प्रिया नाम दिउराजही तत्पुत्र वीरदास दिक्षाना पचमहाव्रतधारकः विवेकगुणसपन्नः विद्वज्जनसभारंजनःभव्य जीवप्रतिबोधकः मुनि श्री ३ विमलकीर्त्तिदेवैरिद सुलोचना चरित्र लिखापित निजद्रव्योपार्जित कर्मक्षयनिमित्तार्थं सद्भावतत्परेण लिखापित आत्मपठनार्थं।

४२. सुकुमाल चरित्र।

रचियता मुनि श्री पूर्णभद्र। भाषा अपभ्रंश। पत्र संख्या ४५ साइज १०॥×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंकियां तथा प्रति पंक्ति मे ३१×३३ अक्षर। प्रारम्भ के २ पृष्ठ से ३० पृष्ठ तक पत्र नहीं है।

गुरुभत्तिय परिणामिय मुणीसर, णामे साहु रजाणु वणीसर।
तहो गल्हु णामेण पियारी, गेहिणि णामणाइदय सुहयारी।
पविमलसीलाहरण विहूसिय, सुहि सज्जण वुहयणहपसंसिय।
ताह तणूरुह पीथे जायउ, जणसुहयरू महियलि विक्खायउ।
अवरू महेंदो वुच्चइ वीयउ, वुहयणु मणहरू तिक्कउ तइयउ।
जाल्हणु णामें भणिय चउत्थउ, वुणु विसलक्खणु दाणमहत्थउ।
छट्ठउ सुवसं पुण्णहु यउ जह, समुदपालु सत्तमउ भयउतह।
अट्ठमु सुवणइ पालु समासिउ, विणया इय गुणहि परिभूसिउ।
पढमहु पियणामेण सलक्खण, लक्खणकलिय सरीर वियक्खण।
तहि कुमारू णामेण तणुरुहु, जायउ पकय जेम सरोरूहु।
विणयविहूसण भूसिय कायउ, महियलिमय मिच्छत्त परिचत्तउ।

घत्ता

णाणू अवरू वीयउ पवरूकुमरहो हुय वरणेहिणि।
पउमा भणियासुयणहि गणिय जिणमय रयवहु सोहणि॥

तहि पाल्ह णामेण पहूयउ, पठमु पुत्तु णं मयण सरूवउ।
वीयउ णाल्हणु जो जिणु पुज्जई, जसु रूवेण णमणसिउपुज्जइ।
तइ यउ वलि जाणिव जणिज्जइ, वघव सयणह सम्माणिज्जइ।
तुरियउ जायउ सूपटु णामे, णावइ णियसवुदर सियकामें।
एयहणासेसह कम्मक्खउ, जिणमयरयहो दोउ दुक्खक्खउ।
मज्झु वि एउ जि कज्जण अण्णुँ, ससारिय सुहणोसुरवण्णुँ।
चउविहु सघु महीयलि णदउ, जिणवरपयपंकयए वदउ।
खयहु जाउ पिसुणु खलु दुज्जणु, दुट्ठदुरासउ णिदिय सज्जणु।
एउ सत्थु मुणिवरह पढिज्जउ, भत्तियभवियणेहि णिसुणिज्जउ।
जामणहगणि चददिवायर, कुलगिरिमेरू महीयलसायर।
पीथे वसु ताम अहिणदउ, सज्जणसुहिमणाइआणदउ।
वारहसयइ गयइ कय हरिसइ, अट्ठोत्तरइ महीयलि वरिसइ।
कसणपक्ख आगहणे जायए, तिज्ज दिवसि ससि वासरि मायइ।

घत्ता

वाहर सइय गत्थ कहइ पद्धदिएहिर वण्णउ।

सुरसरिजउणाणइ अंतरालि, तरुसोमखेत्तधणकणविसालि।
तहि णयरु अभयपुरि महिरवण्णु, सुरणाहु ववहुं वुहहिमण्णुण्णु।
इक्खारसगोरस ककणाइ, तरुहलइ रसालइ वणघणाइं।
पहियण पोसिय पयसालजत्थ, समविसमछुहातिसणत्थि जत्थ।
चउवण्णसमिद्धउ वसइ लोउ, सुरसत्थुवमण्णइ विविह भोउ।
जंहिं पूरिउ वहु मयणाह वासु, मणइच्छिय मण्णहिरइ विलासु।
णरणारिमणोहरगेहगेह, णावइ सुरसछर अइसणेह।
धम्माणु रत्त जण वसइ जत्थ, चउ दाणय हरइवपसत्थ।

घत्ता

चेयालयवेचि अइउत्तंग विसाल तहि।
धवलियसिहरगमंडिय कचण कलसजहिं॥ १॥

णंदणवणु वसवणवहुमंडिय, धम्मणिलय पावारि विहंडिय।
धयतोरण उल्लोवयसोहिय, पिछिमहुछउ सुरणरमोहिय।
कित्तिमपडिमअ किंत्तिमजेहिय, जिम कइलासहु दीसहितेहिय।
मंगलगीय महुछउ किज्जइ, दु दुहि सरुवहु थुइ रज्जइ।
एक्कु कट्ठमयह चेईहरु, धम्मसंचुणिण्णासिय भवडरु।
सत्थपुराण पूय जिणणाहउ, विमवण्णमिसिवलछिसणाहहु।

घत्ता

सावय पुरवाड णिव्वाहिया गेहधम्मभरु।
वयचाइं समत्थ तिविह पत्तउण्णतरुरु॥ २॥

तहिं वीयउ पसिद्धु जिणमंदिरु, भवियण जण मण णयणा णदिरु।
मूलसंघजिणसासणसारउ, रविविंवुव्वतमणियरणिवारउ।
गुज्जरगोट्ठि धम्मभरु ख चउ, णियधणपुंण्णणिमित्तें संचिउ।
सोहइ सहचउ सघसमिद्धउ, मुणितवतेउ व्वरिद्धिहरिद्धउ।
चिरु सामिउ सिरिगोयमुगणहरु, तहु सतइ अणेयणिज्जियसरु।
कुदकुदआयरियगरिट्ठउ, अंगपुव्वधरु आयमसिट्ठउ॥
तासु पट्टि अणुकमेण कुरुक्कउ, धम्मकित्ति मुणिवरु मलमुक्कउ।
तासु सिक्खसिक्खिणियअणेयवि, महवयअणुवय वुइ वहु भेयवि।

घत्ता

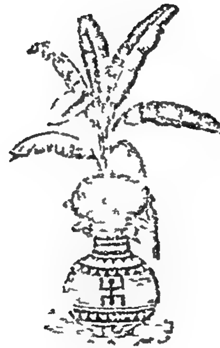
तहु गेहिउवएण वेविपुत्त ण चदरवि ।
सिउ गणु पढमिल्लु अयसमहो हरणाइंपवि ॥ ५ ॥

लहु भीषमु पुण्णालये खभुअ, धम्मधरारुहसिचणभुअ ।
सिउगणतिय रुपारुवहरइ, दाणपु णचेलणियमहासइ ॥
भीखमभज्जपटोगुणजुत्तिय, सीलणिकेयजणय ण पुत्तिय ।
सिउगुणतणय वेविकुलमडण, मीणुवीउ भाउ अहखडण ।
माणभज्ज पाथुल मणमोहण, मुह ससिहर ससिकिरण णिरोहण ।
चदू वंधु मदू चिरु भासिउ, जासु सुजसु वुहयण सुपयासिउ ।
तासु भज्ज पदमागुणसारी, रुवरासि वल्लहसुपियारी ।
वीई मुद्ध कुवरि णामकिय, जा सोहग्ग रुवरइ संकिय ।
सीलाहरणविहूसियदेहिय, मुणिवर विणयदाणसुसणेहिय ।
कुवरिउयरसुव तिण्णिउ वण्णइ, सुजसपुंज कव्वह वण्णेंकइ ।
णरयणत्तय धम्महु कारण, कप्पतरुवजण दुक्खणिवारण ।
दादू साहु पढमसुउ भासिउ, जें सुय णाणु दाणु सुपयासिउ ।
जसहरु वीउ भुवणि जस सायरु, णयण सोहु तहु लहु वउभायरु ।
दादू णारिउ हयसु मणोहरि, णरइ पीइ वेवि कामहु घरि ।
पढम भज्ज रुइ सासुय खणा । लच्छि पयंकिव अगसुह लक्खणा ।
खिउ सिरिणाम अवर सुपहाणी, ससिमुह जिम इदहु इदाणी ।
दाणमाण सम्मत्त सुरेवइ, रइ सोहग्ग सुजस णदेवइ ।
अतिहि दाणु अणु दिणु वहु दिज्जइ, चउविह सघ विणउ विरइज्जइ ।
तासु सरीर पुत्तु उप्पण्णउ, माणससरिह सुवसु मण्णुण्णउ ।
आसकण्णु णामेण मणोहरु, चिरु णदउ जें माढउ णिवघरु ।
गेहणितासु रुवगुणसारी, णाम राइ सिरिपइसुपियारी ।
परियणु अवरु जइ वण्णिज्जइ, तउ वीयउ पुराणु विरइज्जइ ।
एयह मज्झि गरुउ पुरिसत्तणु, वण्णिउ जासु सुयण गुण कित्तणु ।
दादू साहु जिणेसरि भत्तउ, पुरिससीहु वय सीलपवित्तउ ।
अभयाहारसत्थ पुणु ओसहु, तिविहि पत्तपीणियसंतोसहु ।

घत्ता

लेहाविउ एहु गुणणिहाणु कल्लोलणिहि ।

सवत् १५८३ वर्षे आसोजमासे शुक्लपक्षे दशम्या तिथौ शनिवारे उत्तराषाढनक्षत्रे अतिगंजनामजोगे श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत् शिष्यमंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्रः तदाम्नाये पोरवाडगोत्रे साह कुभा भार्या पुरी तत्पुत्र हे तस्य भार्या हिवसिरी, द्वितीय पुत्र रातु तस्य भार्या बाई चोखी, तृतीय पुत्र दीता तस्य भार्या सहजू, चतुर्थ दासा तस्य भार्या दौढादे तस्य पुत्र पदार्थ द्वितीय साह वोथु तस्य भार्या राता तस्यः पुत्र पाथ्यू तस्य भार्या लाडी तस्य पुत्र चोखा इदं शास्त्र लिखापित। बाई पदमसिरि जोग।



विघन हरन सब शुभ करन, नमो नमो भा वेव ॥

अन्तिम पाठ—

मातृ पुत्र अवतंस कहि, कुल अवतस सुजानि ।
सोग्ह वरिष ह्वै सु जो, अभिनव कदं बखानि ॥
मार्गसीर्ष दशमी रवौ असित पक्ष सुभ जानि ।
अब्द अठारसै वरसि ऊपरि चौबीस मानि ।
पढन काज लिख प्रेम कर नद किसोर द्विवेद ।
ज्ञानी लेहु सुधारि करि अक्षर ही को भेद ।

३. अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता श्री जीवणराम गोधा । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ६ साइज ११x४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८–४२ अक्षर ॥ रचना सवत् १८७१.

मगलाचरण—

प्रथम देवगुरु सारदा नमिहुं मन वच काय ।
वरत अठाई की कथा करु ग्रथ अनुसारि ॥

प्रशस्ति—

शुभचंद्रादि मुनीश्वर जेम, कथा करी हिरदै धरि प्रेम ।
गोधो जीवणराम सुजान, वरत करै विधि सु अभिराम ।
ताकै कह्यां कथा या कही, या कुं बुधजन सोधो सही ।
रेणी नगर कसवो सुभ ठाम, वनवाडी वापी अभिराम ।
पार्श्व जिनालय सोभै सदा, पूरन करी कथा हम यदा ।

॥ दोहा ॥

अठारह सै इकैतरया भादव उजली तीज ।
वार वहस्पतिवार नै सतगुरु कथा कहीज ॥

४. अष्टाह्निका कथा ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी । पत्र सख्या ५. पद्य सख्या ११७, रचना सवत् १७७४.

मंगलाचरण—

आदि जिनेसुर वंद फिरि, वर्धमान जिनराय ।
कहुं अठाई की कथा, सुण ज्यौं भवि मंन लाय ।

मुनी भुवनकीर्त्ति गुरु वंदसौइजला रासकरीसोहूरू बडो।
तव परसादे सार,
श्री आदि जीणंद गुण वणवु चारित्र जोइ भवतार॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति —

रास कीयो मे नीर्मलोए, भाव सहित वीसालतो।
आदपुराण जोई करीए, सुगम कीयो मे गुणमाल तो।
पढे गुणे जे साभलए, तेह ने पुन्य अपारतो।
मनवाछीत फल ते लहए, मुगति रमणी वसी होय तो।
लखे लखावे रु वडोए, करे ज्ञ न उधार तो।
तेह ने नवनीध सपजेए, मुगति रमणी होय हार तो।
जे भवियण विस्तार करए, तेह ने पुन्य अपार तो।
जिनवर गणधर मुनीवर, गुण गुथ्यां मे सार तो।
तीर्थकर श्री वृषभ जीन ए, कीयो पर उपगार तो।
जुगल्या धर्मनी वरो यो उ, लोक कियो जयवत तो।
षट् कर्म स्वामी थापी पाए, धमाधर्म वीचार तो।
मुगति रमणी प्रगट कीयो ए, त्रिभुवन जय २ कारतो।
तेह गुण मे जाणी या ए, सद गुरु तणो पसावतो।
भवि २ स्वामी सेवसु ए, लागु सइ गुरु पाय तो।
आदि जिनेसर २ तणो मेरा ए, कीयो सार सोहामणो।
एक चित भाव आणीए, पढे गुणे जे साभले।
जिनसासण गुण अणत जाणीए, श्री सकल कीर्त्ति गुरु प्रणमीने।
मुनी भुवनकीरति भवतार, ब्रह्म जिनदास कहे निर्मलो।
रास कीयो मे सार।

दोहा

वखाणे जे रु वडा सभा माहि गुणवत।
रुचि सहित जे साभले ने ह ने पुन्य महत।
समकीत गुण उपजे वरत नीमवली सार।
तत्त्व पदारथ जाणीये ज्ञान उपजे भवतार॥

आहे नारीय नर जे भाव धरी नित गाइसिइ एह ।
इन्द्रादिक पद पामीय शिवपुर जासिइं तेह ।
आहे एकाणउ अधिका शत पंच सलोक प्रमाण ।
सूणउ भणिसिइं लिखसिइं ते नर अतिहिं सुजाण ।

इति भट्टारक श्री ज्ञानभूषणविरचित श्री आदीश्वर फाग समाप्त । संवत् १६३४ वर्षे पौष बुदी १० बुधवार लिखितमिदं शास्त्र । मालपुरा मध्ये पाडे श्री डूंगा लिखावितं ।

९. आराधना प्रतिबोध ।

रचयिता श्री भट्टारक सकलकीर्त्ति भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र सख्या ४ पद्य सख्या ५५-३६ नम्बर के गुटके मे ४६ से ५२ पृष्ठ तक हैं । विषय-आराधना । अराधनासार का संक्षिप्त भाव दिया हुआ है ।

मगलाचरण—

श्री जिनवरवाणी नमेवि गुरु निग्रन्थ पाय प्रणमेवि ।
कहु आराधना सुविचार सचेपि सारोद्धार ।

अन्तिम—

जे भणई सुणइ नरनारि, ते जाई भवि नेइ पारि ।
श्री सकलकीर्त्ति कह्यु विचार आराधना प्रतिबोधसार ॥

१०. ऋषभविवाहलो ।

रचयिता श्री कुमुदचन्द्र । भाषा हिन्दी (पद्य) । पत्र सख्या ८. साइज ६×५॥ इञ्च । गुटका ५३. नं० गुटके के २२७ से २३४ पृष्ठ तक है ।

मगलाचरण—

समर वीसरसतीवोमउ शुभमती करो वरवाणी पसाउ लोए ।
प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर घरणावु' तास विवाहलोए ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

सवत् सोल अठोतरे ए मास आसाढे घनसार सु ।
ऊजलो बीज रलो आगरलोए··· ·· ·· ।
लक्ष्मीचंद्र पाटे निरमलो ए, अभयचन्द्र मुनिराय ।
तस पट्टे अभय ···· रतन कीरति शुभकाय ।
कुमदुचन्द्रे मन ऊजलोए,····· ····· ········

१३. कथा कोश सग्रह ।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास । भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ६७ साइज ६×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ६ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १६-२० अक्षर। कथा कोश में दश लक्षण व्रत कथा, निर्दोष सप्तमी व्रत कथा, चादण षष्ठि व्रत कथा, आकाश पचमी व्रत कथा, मोक्ष सप्तमी व्रत कथा, पच परमेष्ठी गुण वर्णन का सग्रह है। गुटका नवीन है। मंगला चरण तथा अन्तिम पाठ प्रत्येक का अलग २ है। दश लक्षण व्रत कथा का मगलाचरण इस प्रकार है—

मगलाचरण—

श्री वीर जिणवर पाय, पाय प्रणमवि सरस्वती।
स्वामिणी वलीस्तवु, बुद्धि सार हू वेगि मांगउ ॥ १ ॥
वलि गणधर स्वामी नमस्करु, श्री सकलकीरति पाय वदतु।
रास करीस्यू हू निरमलो, ब्रह्म जिणदास भणे सार ॥ २ ॥

अन्तिम पाठ—(पच परमेष्ठी गुण वर्णन)

श्री सकल कीरति पाय प्रणमीने, श्री भुवन कीरति भवतार।
ब्रह्म जिणदास गुण वरणया, पच परम गुण सार ॥ १ ॥
पढे गुणे जे साभले, मनि धरी निरमल भाउ।
मन वछित फलरुवरणा, पावें शिवपुर ठाउ ॥ २ ॥
इति श्री पंच परमेष्ठी गुणवर्णनरास समाप्त।

१४. चतुर्दशी चौपई ।

रचयिता श्री टीकम। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २० साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में १०-३४ अक्षर। रचना सवत् १७१२. लिपि सवत १७६३. विषय-अनन्त चतुर्दशी व्रत की कथा।

मगलाचरण—

प्रथम वदि पार्श्व जिनदेव, तीनि जगत जाकी करे सेव।
रिद्धि सिद्धि वर सुख दातार, बालपणे जीत्यो जिहि मार ॥

प्रशस्ति—

सतरह सें बारहत्तरै फागुण तेरसि जांणि।
बो द्यौ अधिको शुद्ध करि, पडित कहे वखाणि ॥ १ ॥
बुद्धि सारु टीकम कहै, काल पमां हूँ वास।

संवत् १८४३ वर्षे क्वांरमासे कृष्णपक्षे मिती क्वार बुदी १४ शुक्रवारे भट्टारक श्री रत्नकीर्त्ति जी तत् शिष्य पंडित गणेशरामेन चेतनकर्म चरित्र लिखायो शेरगढमध्ये श्री पार्श्वनाथचैत्यालये।

१६. चौदह गुणस्थान चर्चा।

रचयिता श्री अखयराज श्रीमाल। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या ६६. साइज ६॥×५॥ इञ्च। लिपि संवत १८०३.

अन्तिम पाठ—

यह चौदह गुणस्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र कह्या। जिनवाणी अनुसारि कथन करि पूरन किया। जो कहीं भूल चूक भइ होइ तौ जो पंडित जिनवानी मे प्रवीन होइ सो सुधारि पढियो।

॥ दोहा ॥

चौदह गुणस्थानक कथन भाषा सुनि सुख होई।
अखैराज श्रीमाल ने करो जथा मति जोइ॥

इति श्री गुणस्थान की चर्चा संपूर्ण। ग्रंथ कर्त्ता साह अखैराज श्रीमाल शुभ भवतु। लिपि कर्त्ता साह सकरदास स्वामी चाटसू का। संवत १८०३ मिती वैशाख सुदी ७ बुधवार संपूर्ण भयौ।

२०. छंदशिरोमणि।

रचयिता कवि शिरोमणि श्री शोभानाथ। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ३०. साइज ६×५ इञ्च। ग्रंथ संख्या २००. रचना संवत् १८२५ लिपि संवत् १८७६

प्रशस्ति—

श्री गुरु रसिक किसोर की, कृपा चाहि अभिराम।
सोभनाथ पंडित कियो, छंद शिरोमणि नाम॥ १॥

× × × × ×

संवत् अठारह सतक ता पर वरष पचीस।
जेष्ठ मास सुदि सुदिन लहि, भयो ग्रंथ यह गीस॥ २॥
सूरजि कुल आमेर पति, नृप जन कौ सरताज।
इक छित राज छत्र धरि, पृथ्वीस्यंघ महाराज॥ ३॥
ताके तीछन तेज ते, गारति होत गनीम।
पीथल नृप माधव तनै, द्वै है बल को भीम॥ ४॥
ताकौं चारयो चक्क के, नृपति नवावैं सीस।

तिन यह कथा करी मनलाय, पुन्य हेत उपचार कराय ॥
पढै सुनें मन लावै कोय, मनवांछित फल पावै सोय ।
जब लग मेरु सुर सांस रहे, तब लग खीर समुद जल वहै ।
जल लग तारा गन अरु चदं, जब लग सूर उद्योत करत ।
जब लग जैन धम अवलोई, स्वामी कथा पढो सब कोई ।

सवैया

संवत् सत्रैहसै इक्यावन फागुन दूजे बुधि वदि आइ,
अंतिम केवली केरी कथा रचिकैं जिनदास विचित्र बनाई ।
सो यह लाल विनोदी लिखी अपने हित वाचन कौमनुभाई,
तदपि भव्यन कौ उपदेशन हेतु करैहु महासुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

अन्तिम केवली की कथा, बरनी परम पवित्र ।
और ले आपुन तरे, पावन परम विचित्र ॥

इति श्रीजंवूस्वामीचरित्रे भाषा पांडे जिनदासविरचिते कथा संपूर्ण । संवत् १८४३ पौषमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे शेरगढ़मध्ये अष्टमी जादू लिखित ।

प्रति नं० २. पत्र संख्या ३४ साइज ११॥×५ इञ्च । लिपि संवत् १७६३

संवत् १७६३ का वर्षे सावणमासे शुक्लपक्षे तीज बृहस्पतिवारे जिहांनावादजैसिंहपुरामध्ये श्री वर्द्धमान चैत्यालये श्रीमूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी तत्पट्टोदयाद्रिदिनमणिप्रख्यः भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्तिजी तदाज्ञानुवर्णी पं० दयारामेन जंबूस्वामी ग्रंथ भाषा चौपई स्वहस्तेन लिपि कृपा ।

२२. जैनशतक ।

रचयिता पं० भूधरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या १४. साइज ६×४॥ इञ्च । पद्य संख्या १०७ रचना संवत् १७८१.

मंगलाचरण—

ग्यान जिहाज बैठि गणपति से गुणपयोधि जिस नांहि तरैं हैं ।
अमर समूह आन अवनी सौं धसि धसि सीस प्रणाम करैं हैं ॥
किधौं भाल कु करम की रेखा दूरि करण की बुधि धरैं हैं ।

प्रति नं २. पत्र सख्या १५५. साइज ११।×४ इञ्च ।

सवत् १७८२ का ! भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्ति जी का सिष्य दयाराम लिखित । मिति वैशाख सुदी ३ दीतवार कैं दिन सपुरण करो।

२४. त्रिभुवननो विनती ।

रचयिता श्री गगादास । भाषा हिन्दी गुजराती। (पद्य)। पत्र सख्या २७ पद्य संख्या ६३ ६ पक्तियों का एक पद्य माना गया है।

मगलाचरण—

गभीरार्णव बिंदुना नभ तारा सख्या।
गहन मही मे वृक्ष जे तृण ते पण लेख्या ॥
दारिद भजणा अकलदेव मिल ज्ञान पेख्या।
सत्यवचन जिन स्वामिना, गणधर गुण भाख्या।
करचा कविता घणा ए, ते मिइ किंपि न थाय।
हितकर दिउ मुझ सारदा, थोडि बहु बोलाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

महापुराण समुद्र थी, मइ काढ्या मोती।
खरा करो निकठ करी, प्रथि माला मोती।
सूरत नगर सोहामणउ, वणिकोत्तम वास।
नरसिंहपुरा न्यातिमा, जिन धर्म अभ्यास।
परवत सुत कविता कहइ, गगादास गुणवत।
भणइ भणावए पय करी, तेहन पुण्य महंत ॥ २ ॥

२५. त्रिलोक दर्पण ।

रचयिता कविवर श्री खड्गसेन। भापा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या १५७. साइज १२×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३१–३३ अक्षर। रचना सवत् १७१३.

मंगलाचरण—

ॐ नम सिद्ध नमू जिनराय, हुवा और होसी कर भाय।
साधु सकल जे सम्यक् सार, सरस्वति आदि नमुं सिरधार,॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

यही लाभपुर नगर में, श्रावण परम सुजाण।
सब मिलि करि चरचा करै, जाकौ जो उनमान ॥

तहा बौठि यह कियौ विनोद, तीन लोक को है यह मोद।
पूरण करि पूरब विधि धरी, रची माल तें बहु बंधि संगी॥
जो यह कथा पढ़ै धारि कंठ, मुक्ति श्री लावै तसु कंठ।
उघडै पलक तिमर मिटि जाय, कूज वेद तरण परभाय॥
पंडित राय नरिंद समान, मिसर गिरधर जगत प्रमाण।
सभा मध्य वडा गुणवंत, ग्रन्थ वखाणैं सुरित्तवंत॥
सभा सिंगार हार मुख सार, सुणत सबै रजै चित्त धार।
वांणी सुणत नृपति सोहि होय, अमृत वचन पीवै सहु कोय॥
सुर ता पढ़ै अति गुणवंत, अपणी बुधि अनुसार लहंत।
तिन का नाम सुणौ तुम जोय, भूर पुण्य उपजै तहा सोय॥
पंडित हीरानंद प्रवीण, चौदह विद्या में लय लीन।
मघवौ जग जीवन गुण खाण, सकल शास्त्र मय अरथ सुजाण॥
रतनपाल ग्याता बुधवंत, हिरदै ग्यान कला गुणवंत।
अनूपराय अनूपम रूप, बाल पणौं जिम सोहै भूप॥
दामोदर दरसण गुण लीन, माधोदास मधुर प्रवीण।
हीरानंद हिरदै परगास, तिलोकचंद तहा ग्यान विलास॥
विषनदास बुधि तीषण सरी, प्रतापमल्ल पूरण मति धरी।
मोहनदास महा गुण लीन, हंसराज जि हिरदै प्रवीन॥
कुंदन कनक नारायणदास, ग्यान कला आगम परवास।
पांडे हिरदै पूजा करै, हिरदै हरष सेव चित्त धरै॥
हृदय राम भो जग हितकार, सेवा करै सुजिन गुणधार।
ए सब ग्याता अति गुणवंत, जिनगुण सुणै महा विकसंत॥
सब श्रावक अति ही गुणवन्त, सुणैं ग्रन्थ पावै विरतंत।

× × × × × ×

साहि जहा सुलितान महान, फेरी चहु चेकक मे आन।
छत्रपति सेवै तसु पाय, चकत्ता चकवै सुभीहान॥
सवतसर विक्रमतें आदि, सतरह सैं तेरहै सुखस्वाद।
चैत्रशुक्ल पचमी प्रमाण, यह त्रिलोक दरपण सुपुराण॥

× × × × × ×

वागड देश महा विसतार, नारनोल तहां नगर निवास।

प्रथम परम मंगल जिन चच्चेनु, दुरित तुरित तजि भाजै हो।
कोटि विघन नासन अरिनदन, लोक सिखरि सुख राजै हो।
सुमिरि सरस्वति श्री जिनउद्भव, सिद्ध कवित सुभ बानी हो।
गन गधर्व जत्थ मुनि इद्रनि, तीनि भुवन जन मानी हो।

अंतिम पाठ—

ए त्रेपन विधि रहु क्रिया भवि पाप समूहनि चूरे हो।
सोरह सें पेसठि समच्छर कातिग तीज अंधियारी हो।
भट्टारक जग भूषन चेला ब्रह्म गुलाल विचारी हो।
ब्रह्म गुलाल विचारि बनाई गढ गोपाचल थानै।
छत्रपती चहु चक्र विराजें साहि सलेम मुगलाने ॥ १ ॥

२७. त्रेपनक्रियाकोष।

रचयिता श्री किशनसिंह। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या ७५. साइज १०×६ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तिया तथा प्रति पक्ति में ३५-४० अक्षर। रचना संवत् १७८४. लिपि सवत् १८२६.

मगलाचरण—

समवसरण लछमी सहित, वर्धमान जिनराय।
नमो विवुध वदित चरण, भविजन कूं सुखदाय॥

प्रशस्ति—

खडेलीवाल वंसविसाल नागरचालं देसथिय।
रामापुरवास देवनिवासं धर्म प्रकास प्रगटकिय॥
सगही कल्याणं सवगुणजाण गोत्र पाटणी सुजसलिय।
पूजाजिनरायं श्रुतगुरुपाय नमै सकति निज दानंदिय॥ १ ॥
तसु सुन दुय एवं गुरुसुखदेव लहुरो आणंदसिंघसुणौ।
सुखदेव सुनंदन जिनपदवंदन थान मान किसनेस सुणौ॥
किसन इह कीनो कथा नवीनी निजहित बीनी सुरपद की।
सुखदायक्रियाभनि यह मनवचननि सुद्धपलैं दुरगति पदकी॥ २ ॥
माथुरराय वंसत कौ जानैं सकल जिहान।
तसु प्रधान सुत कौ तनुज किसनसिंघ मतिमान॥ ३ ॥

अडिल्लछंद

क्षेत्रविपाकी कर्म उदै जब आईया, निजपुर तजि कैं सांगानेरि वसाईया।

जे नर नारी गावसे ए वीनती सुचंग।
ते मन वंछित पावसे नित्य नित्य मंगल तरंग ॥ ३ ॥

२६. दशलक्षणव्रतकथा।

रचयिता ब्रह्म ज्ञानसागर। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज १०×४॥ इञ्च। पद्य संख्या ५५. लिपि संवत् १८३८.

मंगलाचरण—

प्रथम नमन जिन वरनैं करूं सारदा गणधर पद अनुसरुं।
दश लक्षण व्रत कथा विचार, भाखु जिन आगम अनुसार॥

प्रशस्ति—

भट्टारक श्री भूषणधीर सकल शास्त्र पूरण गभीर।
तसु पद प्रणमो बोले सार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार॥ १ ॥

संवत् १८३८. श्रावणमासे शुक्लपक्षे सप्तम्यां पट्टणनगरे भट्टारक सुरेंद्रकीर्त्तिना लिखितं।

३०. दिलारामविलास औरआत्मद्वादशी।

रचयिता श्री दिलाराम। भाषा हिन्दी पद्य। साइज ६×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में २७-३० अक्षर। प्रति पूर्ण है।

मंगलाचरण—

परम पुरुष परमात्मा परम जोति परधान।
परमेसुर परब्रह्म प्रभु पूजौ परम पुरान॥ १ ॥
सबै काल के सिध सहु नमौ सदा पद तास।
जा प्रसाद जग विस्तरौ यह दिलाराम विलास॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

राजवंशावलिवर्णन—

ससि वंश चौहाण हाडा कहाये कीयो राज बूंदी मवासेदहाये,
भये भोज नामी वडे राव वंसी तनैं रत्न साचे भये रतन अंसी।
भये नाथ गौपी न टीकें विराजे भये छत्रसालै तिन्है राज साजे,
लखै राजधानी सबै शत्रु कंपै चहू चक के चकवै सास जंपै।
भये तास के देवता राव भाऊ सबै देस मैं दत्त नीभौ पुजाऊं,
लह्यो भाग तैं पाट अनुरुद्ध ताको वढ्यो देश मे राज आतंक ताको।

सहसक्रत समजिन परें	पराक्रित गम नाहि ।
भाषा कछु एक कवि कला	रची ग्रथ या माहि ॥
सवै काल के सिधि महु	नमों जोरि पद तास ।
जा प्रसाद जग विस्तरौ	यह दिलाराम विलास ॥
धनि सम यो धनि वा घडी	धनि वा बार मिलाय ।
अनुभव करण सुर पूजिये	गोगि सधर्मी पाय ॥
वहूत गये मिथ्यात मों	अजहू' नांहि अघाय ।
थानां सु दल वीनती	मेरो वेगि वलाई ॥

३१. धनपालरास ।

रचयिता ब्रह्म जिनदास । भाषा हिन्दी । पत्र ६ साइज ११॥×५ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पंक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे ३८-४२ अक्षर ।

मगलाचरण—

वीर जिनवर २'नमु ते सार, तीर्थंकर चोवीस मो ।
वंछित फल वहु दान दातार, सारद सामिण वीनवु' ॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

श्री सकलकीरति गुरु प्रणमीनें, श्रीभवन कीरति भवतार ।
दानतणा फल वरणव्या, ब्रह्म जिणदास कहें सार ॥ १ ॥
पढे गुणे जो साभलें, मनधरी निरमल भाऊ ।
मनवांछित फलरु वडा, लाभे शिवपुर ठाउ ॥ २ ॥

इति श्री दानफलमहात्म्ये ब्रह्म जिणदासविरचिते प्राकृतवधे धनपालधनमतीरास संपूर्ण । संवत १८७८ वर्षे श्रावण सुदी १ प्रतिपत्तियौ रविवासरे पाडे रूपचन्दजी तस्य वाचनार्थे ।

३२. धर्मपरीक्षा ।

रचयिता श्री मनोहरदास । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र सख्या १२४. साइज १२×५॥ इञ्च । सम्पूर्ण पद्य सख्या ३०००.

मगलाचरण—

प्रणमु' अरिहतंदेव गुरु निरग्रन्थ दया धरम ।
भवदधि तारन एव अवर सकल मिथ्यात भणि ॥

सदन सौ निसि अजोध्या कौ गमन कीनौं अजोध्या के सेठ उह उछिम करावें थो ॥
अपनी बराबरि को करि नाना भांति सेती देकर बडाई निज थान कौ पठायौ थो ।
ऐसे हम आसू साह राखे निज बांह देके कहै मनौहर हम पुनि जोग्य पायौ थौ ॥

॥ दोहा ॥

सातौ पहुँचे शुभग गति बारो सुभग बजाई ।
त्रिधो चद सुख भोगवें धर्म ध्यान चित्त लाई ॥
हीरामणि उपदेश तैं भयौ शास्त्र शुभ सार ।
दुष्ट लोग को प्रति हंसै हरदै घरी विकार ॥

॥ सवैया ॥

रचति सांलवाहण आगरे को बुधिवंत हिरदै सरल तिन ज्ञान रस पीयो है ।
जगदत्त मिश्र गौड हिसारको वासी शुभ विद्यावलि जगत मे सरजस लीयो है ॥
गेगुराज बाभण पंडित है नगर माहि जौतिया कौ पाठी सरस्वती वर दीयो है ।
इतने साई भये दोही जिनराज जू की तब मै विचार करि भापा वुधि कीयो है ॥

॥ दोहा ॥

दया सम ब्रह्मदालीया भयौ दूसरौ नाव ।
निरलोभी मन कौ सरल दया धर्म शुभ गाव ॥
सो भी हम प्रेरक भयौ दिन मे वारंवार ।
तव हम यह भापा करी लघु वुधि छांर विकार ॥

॥ छप्पय ॥

नगर धांमपुर मांहि करी भापा वुधि सारु
धम परीक्षा मित्र अर्थि विजन धरि त्रारु ॥
ना कछू कीर्त्ति हेति न कुछ अरति धनु वछन
जथा जुक्त मडली रचो पद २ रस चदन ॥
पढैं सुणैं उपजै सुवुधि है कल्याण शुभ सुख धरण ।
मनरसि मनौहर इम कहै सकल संघ मगल करण ॥

संवत् १८०२ वर्षे श्रावणमासे शुकलपक्षे तिथौ पूर्णिमा वार वृहस्पतिवार श्री सवाई जैपुरमध्ये ईश्वरीसिंह राज्ये श्री चन्द्रप्रभचैत्यालये भट्टारकजी महेन्द्रकीर्त्ति जी प्रवर्तमानेतत् समीपे पं० दयारामेण लिपिकृतम् ।

सहर नगर सुभ थान मे, कुण भट्टारिक आमनाय ॥ १ ॥
श्री काष्ठाये सघनायक गच्छराय, भट्टारिक भवि जण रंजण।
श्री कुंवरसेण कुल केवल दिणंद, विद्या वचन, गुण वारिधि।
रतन कीरति तस सीष सुजाण, दिलो मंडलाचार्य दीपता।
आज्ञा कारी तस आचार्य जाणि, अचलकीरति अवगाहि कै।
धरम रासौ कीयौ धरि सुभ ध्यान, आत्मा पर उपगाहु॥
पढत सुणत सुख सपदा होइ, सुरग मुकति सुख सास्वता॥ २ ॥

३५. धर्मोपदेश श्रावकाचार।

रचयिता श्री धर्मदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४६. साइज ६×४ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २८–३० अक्षर। रचना संवत् १५७८. प्रथम पृष्ठ नहीं है। विषय–आचार धर्म
दूसरे पत्र का प्रारम्भिक पाठ—

पणवहु भविजन शीतलनाहु, शीतलगुन निज अधिक अगाहु।
दह भेय जिन भास्यौ सव्व, वदहु ताहि सयल तजि गव्व॥

प्रशस्ति—

पन्द्रहसै अट्ठहत्तरि वरिसु, संवच्छरु कुसलह कन सरसु।
निर्मल वैसाखो अषतीज, बुधवार गुनियहु जानीज॥

ता दिन पूरो कियो यहु ग्रंथ, निर्मल धर्म भनौ जो पथ।
मगल करु अरु विघनि हरनु, परम सुख भवियन कहु करणु।
अच्छरासमवदछद करि हीन, किंचितु मात्र मै जुयहु कीन।
सो मो मद बुधि जानेहु, तातैं वहु जन पिमा करेहु।
सुध असुध मात्र करि हीन, इहु प्रमाद ज्ञान मे कीन।
सो सव खमहुं देवि सरसुती, जान ही मोहि बालक समती।
वारहसैंनी उत्तम जाति, मूल सघ श्रावग विख्यात।
जिनवर पय भत्तउ दोरिल साहु, सो जु दान पूज कौ पवाहु।
तासु मनू सदय जस गेहु, धर्म शीलवंतु जानेहु।
तासु पुत्र जेठो करमसी, जिनमति सुमति जासु मन वसी।
दया आदि दे वम हि लीन, परमविवेकी पाप विहीन।
पदम नाम ताके भो पूत, कवियनु वैदरु कला सजूतु।
अवरु वहुत गुन गदिर समान, महा सुमति अति चतुर सुजानु।

जिन सासन दुर्लभ जानेहु, पायौ तो दूर करि मानेहु।
जिन पूजहु जिनवर थुनहु, गुरु निग्रंथ सत्ये करि सुनहु।
जिन सिद्धांत जु कह्यो विचार, सो पालहु त्रिभुवन महि सार।
कहै धर्म कवि वेक्र जोडि, पंडित जन मन लावहु खोडि।
मति सारु हम कीनौ एहु, कपटु मुनि विमनि दया करेहु।
जह अट्ठ तह सुद्ध करहु, अपनी सज्जनत विस्तरहु।
साधु नितनौ भाउ वह नित्त, पर उपगारु धरहिं ते चित्त।

इति धर्मोपदेशश्रावकाचार पं० धर्मदास विरचित समाप्त मिति मार्गशीर्ष शुक्लसप्तम्या तिथौ शनिवासरे समाप्तोऽयं ग्रंथो। पं० शत्योदयेन मुनिना लिखितमिति।

३६. नयचक्र भाषा

भाषाकार श्री हेमराज। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र संख्या २४, साइज ६×४ इञ्च। रचना संवत् १७२६ विषय—नैगमादि सात नयों का वर्णन।

मंगलाचरण—

वंदौ श्री जिनके वचन, स्यादवाद नय मूल।
ताहि सुनत अनुभव तहीं, हैं मिथ्यात निरमूल॥
ता कारन नयचक्र की, सरल वचनिका कीन।
अधिक हीन अवलोकि के, करहु सुद्ध परवीन॥

अन्तिम पाठ प्रशस्ति—

सिरीमाल गच्छ खरतरै, जिनप्रभु सूरि संतानि।
लवधी रंग उवझाय मुनी, तिनके शिष्य सुजान॥
विबुध नारायण दास नें, यह अरज हम कीन।
जो नयचक्र सटीक हैं, पढे सवे परवीन।
तिनें प्रसन्न है कैं सही, भली भली यह बात।
तब हमहु उद्यम कियो, रची वचनिका भाव।
हेमराज की वीनती, सुनियो सुकवि सुजान।
यहु भाषा नय चक्रकी, रची सुबुधि उनमान।
सत्रहसैर छब्बीस कौं, संवत् फागुण मास।
उज्जल तिथ दसमी जहां, कीनो वचन विलास।

इति श्री प० नारायनदासोपदेसेन साह हेमराज कृत नयचक्र की सामान्य वचनिका समाप्त।

३८. नेमीश्वर चंद्रायण—

रचयिता श्री भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ८. साइज ६ × ४ इञ्च। पद्य स १०४। लिपि संवत १६६०। विषय—नेमिनाथ का जीवन।

मंगलाचरण—

परम चिदानंद मन्यधरी अनि प्रणमी श्री गुरु पाय।
हरष अणिदि सु स्तवु श्री नेमीश्वर जिनराय॥ १॥

प्रशस्ति—

महीयल महिमिमात्त वखाणो, श्री मूलसघ गछपात जांणो।
विजय कीरति सुरि नमित नरेन्द्र, तत्पट्ट दायक श्री शुभचन्द्र॥
तत्पट्ट पकज सुर समान, सुमति कीरति सुरी गुणहं निधान।
तें चरण चित्त धरी रे विशाल, नरेंद्रकीर्त्ति कहि रे रसाल॥
नरेंद्रकीरति पाठकं कहि अनि नेमिचंद्रायणसार।
भाव सहित भणि सांभलि, ते पावे भव पार॥

संवत् १६६० वर्षे भादवा सुदी ६ रवौ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचायान्वये भट्टारक श्री वादिभूपणदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री रामकीर्त्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री पद्मनन्दि गुरुपदेशात् तत गुरु भ्राता मुनि श्री देवकीर्त्ति तत् शिष्य मुनि श्री कल्याणकीर्त्ति तत् शिष्य ब्रह्मसिंहजी लिखित।

३९. नेमीश्वर रास—

रचयिता श्री ब्रह्मरायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या २२. साइज ७ × ६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १२६. उक्त रचना गुटके में है। गुटके के ११६ से १६० तक के पृष्ठों में है। रचना संवत् १६१५. लिपि संवत् १६८६.

मंगलाचरण—

स्वामी हो नेमीसर जिननाथ, चरणं वंदें धरि मस्तक हाथ।
मन अरु वचन काया थुणौ, सोभा जी सावला वर्ण सरीर॥ २॥

अन्तिम पाठ—

अहो मूल संगि मुनि सरस्वति गच्छ,छोडि हो चार कषायनि निमछि।
अनन्तकीर्त्ति गुरु वदितै अहो तास तणो सखी कीयो वखाण।
राइमल ब्रह्म सो जाणिज्यो, स्वामी हो पारसनाथ के थानि॥ १॥

पदमनंदि की बांनि गंभीर, ताकौ अर्थ लहै कोइ धीर।
भाषा पढतै न ह्वै खेद, मूरख जन पुनि जानै भेद।
सहर आगरो है सुख थांन, परतषि दीसै स्वर्ग विमा।
धारौ वरन रहै सुख पाइ, तहा पहु शास्त्र रच्यौ सुखदाइ।
संवत् सतरासें वावीस, फागुण मासि सुविपक्ष जगीस।
तिथि दशमी पुष्य मंगलवार, ग्रन्थ समाप्त भयौ जयकार।
नवखंड में है जाकी आन, तेजवंत दीपै जिन भान।
राज करै श्री अवरंग साहि, जाकें नही किसी परवाहि।
न भई भीति कछु ताके राज, धर्मी भविजन पढन कै काजि।
निजमति के अनुसारे यह, भाषा कीनी मन धरि कै नेह।

॥ छप्पय ॥

पाठक अतिहि प्रवीन पुण्य हर्ष गणि दीपै।
आगम युगति अनेक भेद करि वादी जीपैं।
कीनी भाषा एह जगतराय जिहि विधि भाषी।
पंडित महामति मंत वीरदास जु है साषी।
वाढें वहुविधि सकल पाप संताप हर।
इहुं ग्रंथ संतनि कै सुनहु करौ वीनति जोरि कर॥

चौपई— सुजान सिंघ नंदलाल सुनंद, जगराय सुत है टेकचंद।
जौ लो सागर ससि दिनकार तो लौं अविचल ए परिवार॥

सोरठा— अभय कुसल आनंद पदमनंदि पचवीसि की।
भाषा भई निरदंद सुनियो भविजन सर्वदा॥

इति श्री जगतराय विरचितायां पद्मनंदिपंचविंशिकाया भाषा समाप्ता संवत् १८११ वर्षे मिति...।

४१ पंचेन्द्रिय बोल

रचयिता कवि घेल्ह। भाषा हिन्दी। पत्र संख्या ७. साइज ७×७ इञ्च। पद्य संख्या ६. रचना संवत् १५८५. लिपि संवत् १६८८. पांच इन्द्रियों की बात चीत।

प्रशस्ति—

कवि घेल्ह सुजन गुण ठावो, जगि प्रगट ठकुरसी नावो।
तीं वेलि सरस गुण गाया, चित चतुर मुरिख समझाया।

आपुन जे सिवपुर गये, भव्यनि पथ दिखाइ ॥

४४. प्रद्युम्न प्रबंध ।

रचयिता भट्टारक श्री देवेन्द्रकीत्ति । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या ३७. साइज १०॥×४॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३८-४२ अक्षर । रचना सम्वत् १७२२. विषय—जीवन चरित्र ।

मंगलाचरण—

सकल भव्य सुख नेमि जिनेश्वर पाय ।
यदुकुल कमल दिवसपति प्रणमु तेह ना पाय ॥ १ ॥

प्रशस्ति—

श्री मूलसंघ मुकुटमणि श्री सकल कीर्त्ति गुरु पायरे ।
भुवनकीर्त्ति तेह निपाटि, वहु भूपति पूजित पायरे ॥ १ ॥
तास पटाबर दिनमणीह वा ज्ञान भूषण भवतार रे ।
विजयकीर्त्ति तस पटधारी, प्रगट्या पूरण सुखकार रे ॥ २ ॥
तेह यह कुमुद पूरण समी, शुभचन्द्र भवतार रे ।
न्याय प्रमाण प्रचंड थी गुरुवादी जल दशमीर रे ॥ ३ ॥
तस पट्टोधर प्रगटीया श्री सुमतिकीर्त्ति जयकार रे ।
तस पट्ट धारक भट्टारक, गुणकीर्त्ति गुणगण धार रे ॥ ४ ॥
तेह तणि पाटि प्रसिद्ध धणी श्रीयवादि भूषण सूरी संत रे ।
रामकीर्त्ति तेहनि पाटि, प्रगट्यो गुरु विद्यावंत रे ॥५ ॥
तस पट धारी पूरण मतो श्री पद्मनंदी सूरीस रे ।
विद्यावाद विनोदथी जेहिं नामि नरवर शीस रे ॥ ६ ॥
तस पट कमल कमन बंधु, श्री देवेंद्रकीर्त्ति गच्छ ईशरे ।
प्रद्युमन प्रबंध रच्यो तिणि भवियण भणयो निश दिश रे ॥ ७ ॥
संवत् सत्तर बावीसि सुदि चैत्र तोज बुधवार रे ।
महेश्वर माहि रचना रचि, रहि चंद्रनाथ गृहद्वार रे ॥ ८ ॥
सूरत वासी संघपती च्वेर्मजि सूरजि दातार रे ।
तेह आग्रह थी प्रद्युमन नो ए प्रबंध रच्यो मनोहार रे ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनोहार प्रबंध ए गुथ्यो करि विवेक ।
प्रद्युमन गुण सूत्रिकरी, सब वन कुसुम अनेक ॥ १० ॥

जौ कहूँ मेरी चूक ह्वै, लीज्यौ सता सुधारि।
वरण छंद कौ देखि कै, गुण औगुण सुविचारि॥
यश मिश्र हरिनाभजी, रहौ सदा सुखरूप।
ताकी संगति जो करी, पायो काव्य सरूप॥

सवैय्या—

कोई देवी खेतपाल बीचासनिमांनत है,
केई सती पित्र सीतला सो कहै मेरा है।
कोई कहै सावलौ कवीर पद कोई गावै,
केई दादू पथी होय परे मोह घेरा है।
कोई ख्वाजै परमान कोई पथी नानिग के,
केई कहै महावाहु महारुद्र चेरा है।
याही वारा पथ मे भरमि रह्यौ सबै लोक,
कहै जोध अहो जिन तेरापथी तेरा है।

× × × × × ×

इति श्री प्रवचनसार सिद्धान्ते जोधराज गोदीका विरचिते रुचि वर्णन नाम द्वादश प्रभाव सवत् १८४६ का कार्तिक सुदी १२ शुक्रवार सवाई जयपुर मे लिख्यौ अमल महाराजाधिराज श्री सवाई प्रतापसिंहजी का मे पुस्तक जोधराज गोदीका की है सवत् १७२६ कौ लिख्यौ तीसु लिखो पुस्तक जीवण राम गोधा रैणी का को। लिखत कन्हीराम बाकलीवाल सपतरामगोधा।

४६. प्रवचनसार।

भाषा प्राकृत सस्कृत-हिन्दी। (गद्य)। पत्र सख्या ४४ साइज १२×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ७ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर। लिपि सवत् १७२७. प्रस्तुत ग्रथ मे प्राकृत और सस्कृत मूल ही दिया हुआ है। हिन्दी मे प्रत्येक गाथा मे वर्णित विषय का सकेत दिया गया है। इसके अतिरिक्त हिन्दी म फुटकर टीका भी दी हुई है। भाषा परिमार्जित है।

भाषा का प्रारम्भ—

आगे श्री कुन्दकुन्दाचार्य प्रथम ही आरभ विषे मगलाचरण निमित्त नमस्कार करै है। · · · ·। आगै आत्मा के शुभ अशुभ शुद्ध ऐसे तीन भावनि की ठीकता करै है।

फुटकर टीका की भाषा—

स्निग्ध रुक्ष गुणविषै अनन्त अश भेद है। एक परमाणु दूजे परमाणु सौं तब बधै जब दोइ अश अधिक स्निग्ध अथवा रुक्ष गुण का परिणाम होइ ···· ····,

सब श्रावक पूजें जिनधर्म, करें भक्ति पावै बहु शर्म्म ॥
कर्मक्षय कारणशुभहेत पार्श्वनाथ चौपई समेत।
पंडित लाखो लाख समान सेवौ धर्म लहौ सुख थान ॥

भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजी का शिष्य पांडे दयाराम नरायणा का वासी जाति सोनी। भट्टारक श्री महेन्द्रकीर्त्ति का राजपट विषै दिल्ली का जैसिंहपुरा का देहुरा मे पार्श्वनाथ चौपई लिखी।

४६. पार्श्वनाथपुराण।

रचयिता श्री भूधरदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ६१. साइज १०॥×४॥ इञ्च। रचना संवत् १७८६. रचना प्रकाशित हो चुकी है।

मंगलाचरण—

मोह महातम दलिनदिन तपलक्ष्मी भरतार।
ते पारस परमेस मुझ होहु सुमति दातार ॥

अन्तिम पाठ—

प्रभु चरित्र मिस किमपि यह कीनो जिन गुन गान।
श्री पारस परमेस कौ पूरन भयौ पुरान ॥
पूरव चरित विलोकि कै भूधर बुधि समान।
भाषा बंध प्रबंध यह कियौ आगरे थान ॥

× × × × ×

दोहा— संवत सत्रैसें समै और निवासी लीन।
सुदि अषाढ तिथ पंचमी, ग्रंथ समापित कीन ॥

इति पार्श्वनाथपुराण की भाषा संपूर्ण। लिखावित साहजी श्री चैनरामजी ठोल्या सवाई माधोपुर मध्ये। महाराजाधिराज श्री सवाई जगतसिंहजी विजयराज्ये लिपीकृत जती अमरचन्द्रेण वासी कोटा का।

५०. पोसहरास।

रचयिता भट्टारक श्री ज्ञानभूषण। भाषा हिन्दी (पद्य) पद्य संख्या ११५

मंगलाचरण—

सरसति चरण युगल प्रणमी सहि गुरु आणू।
बार बरत महि साह बरत पोसहवरे काणू ॥ १ ॥
आठमि चउदसि नोम सहित नित पोस लीजे।
उत्तम मध्यम अधम भेदि त्रिहु विधि जाणी जे ॥ २ ॥

ऐसी जानि एक ठौर भीनी सब भाषा जोरि
ताको नाम धर्‍यो यो बनारसी विलास है।

॥ दोहा ॥

सत्रहसैं एकोत्तरें समै चैत सित पाख।
दुआसौ पूरन भई इह बनरसी भाष॥ १ ॥

संवत् १८२१ मिति फागुण सुदी ५ आदित्यवार लिखापित पंडित जोधराज जी वृंदावती मध्ये साह शंभूराम बाकलीवाल आंवाका लिपि कृतं।

५२. वाशिठिया बोलरो स्तवन।

रचयिता मुनि श्री कान्तिसार। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४; साइज ८x३॥ इञ्च। प्रत्ये पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति मे २६-३० अक्षर। रचना संवत् १७८३, विषय-सिद्धान्त

मंगलाचरण—

श्री गुरुवचनलही करी आगमें नै अणुसार।
वोल वाशिठियां मार्गनों, द्वार तणो सुविचार॥
वासठि वोल कह्या जिनै, धन ते जिन चौवीश।
ते माहैं वाशिठिया वोलत वन पभणीश॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

संवत् सतरैं व्याशिया वरसैं, नगर उदयपुर मांहि रे।
नर नारि समझावण हेतै एह तवन कर्‍यो उछाहि रे।
तपगच्छ मांहि सुर शिरोमणि श्री विजयक्षमा सुहिरायो रे।
गुणवंता जयवंता वर तो जस अनैतेज जस वायो रे।
कान्तिसागर पंडित सुपसाया जसवंत सागरराय रे।

इम थुण्यो जिनवर सयल सुखकर तीर्थंकर चोवीस ए।
वासिठ वोलें अमिय तोलैं जे कह्या जगदीस ए।
जसवंत सागर सुजस आगर, जिनेंद्रसागर शिष्य ए।
नवनिधि होय्यें सघ नें घर दिएं इम आसिश ए॥

इति श्री वाशिठियां वोलरो स्तवन संपूर्ण। मुनि मोहनविजय वाचनार्थं।

मंगलाचरण—

स्वामी चन्द्रप्रभ जिणनाथ, नमौं चरणधरि मस्तकि हाथ।
लछिन वण्यौ चद्र माता सु, काया उज्जल अधिक उजासु॥

अन्तिम पाठ तथा प्रशस्ति—

मूल संघ शारद शुभ गछि, छोडी चार कषाय निरभछि।
अनंत कीर्ति मुनि गुणह निधान, ता सुत नै सिख कीयो बखाण॥

ब्रह्म रायमल थोडि बुधि, आखिरपद की न लहै सुधि।
जैसी मति दीनै औकास, व्रत पंचमी को कीयौ परकाश॥
केवल पाइ तहिने फुरै।
जो इह कथा सुणे दे कान, काल लहिविपहुचै निरवान।
सोलह से तेतीसा सार, कातिग सुदी चौदसि सनिवार।
स्वाति नक्षत्र सिद्धि शुभजोग, पंडा ख न व्यापै रोग।
देस ढूढाहड सोभा घणी, पुजै तहा आल मण तणी।
निमल तलै नदी बहु फिरै, सुख स वसै बहु सांगानेरि।
चहु दिशि बाण्या भला बजार, भरे पटोला मोनी हार।
भवन उत्तुंग जिनेश्वर तणा, सोभै चदवा तोरण घणा।
राजा राजै भगवतदास, राजकवर सेवहि बहु तास।
परजा लोग सुखी सुख वसै, दुखी दलिद्री पुरवै आस।
श्रावक लोग वसै धनवंत, पुजा करहि जपहि अरहंत।
उपराउ परी वैरन कास, जिहि आहिमिद सुगे सुख वास॥
मंगल श्री अरहत जिणि, मंगल अनंतकीर्त्ति मुणिंद।
मंगल पढइ करई वखाण, मंगल ब्रह्म राइमल सुजाण॥

दूसरी प्रति का भिन्न पाठ—

आखिर मात जु भूलो होय, पंडित जन सहु खमिज्यो मांहि।
अति अयाण मति थोडी भई, कथा पंचमी व्रत की कही॥
वारवार नवि भणै पसार, जामैं जीव दया व्रतसार।
जो नर जीव दया को पाल, रोग सोगा न व्यापै काल॥

संवत १६६० वर्षे भादवा सुदी १ शुक्रवारे पोथी लिखी सा० जैता पाटणी दानुकाकी लिखी आगरा मध्ये साहिभीजहा की हवेली श्री जलाखाकोरची की मध्ये वास जैता पाटणी।

खडेलवाल वर वंस मैं गोत बिलाला जग विदित।
अन्नोदक कारत पायकै बसै भरतपुर मे सुखित॥
नंदन सोभाचन्द को नथमल निपट अयान।
छदं कोस पिंगल तनों ग्यान अंस नहिं जान॥
अन्नोदक के जोग तैं सो हीरापुर आय।
सुख सो तहं निवसत भयौ कछु इक काल गमाय॥
तहां मिल्यौ कौरन भलौ पुन्य तनैं परभाय।
नगर करौली सौं जहां पंडित लाल सु आय॥
सकल कला मैं निपुन अति कविता करत असेस।
नथमल के ऊपर सदा करत सनेह विशेष॥
भगतामर जी की कथा तिन जिन भवन मंझार।
बाची तब सुनि कें भयो मो मन हरष अपार॥
सुनि नथमल बचन कौं उर मे कियो विचार।
मूल ग्रथ अति कठिन है पंडित करै उचार॥
लालचन्द सौं तब कही नथमल हर्षित होय।
जौ याकी भाषा बनै तो समझै सब कोय॥
जौ लग रचिये छद कौं अर्थ वरन सुविचार।
जो लौहै सुभ ध्यान की प्रापति सुख दातार॥
निज पर हेत बिचार कें नथमल लाल विशेष।
दोऊ मिलि भाषा रची रायमल्ल कृत देख॥
सवत अष्टादश सत जांनि तापै पुनि उनतीस प्रवान।
जेठ सुकल दशमी बुधवार पूरन कथा करी सुखकार॥
परमदेव इस जगत मे आदि रिषभ अवतार।
जैवंतो वरतौं सदा भवजल तारनहार॥
भवजलतारनहार कर्मभूविधि दरसाई।
दयासिंधु जग तात सकल जीवन सुखदाई॥
सुखदाई संसार में कथित एक जिन को धरम।
नथमल लाल सुन मात हैं देहु भगति अपनी परम॥

इति श्री भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र काव्यछंद कथा सपूर्ण। मिति माह सुदी १४ शुक्रवार सवतै १८५३ का पत्री लिखी करौलीदास।

रावल मालि सुपाट धरि, कुवर श्री हरिराज।
विरचिएह सिणगारसि, तास कतुहल काज।

५८. मिथ्या दुकड।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषा हिन्दी। पद्य सख्या २३. लिपि सवत् १७६२.

मगलाचरण—

आदि जिणेसर भुवि परमेसर सयल दुख विणासणो।
भुवि कमल दिणेसर मोह तिमर हर तत्त्व पदारथ भासणो॥ १॥
हूँ विनती करु हवें आपणीय।
तूं त्रिभूवन स्वामी सुणि धणीय॥
जे पाप कर्‌या ते कहूँ अनुभ्रू।
ते मिथ्या दुकड होउ नमभ्रू॥ २॥

अन्तिम पाठ—

जिनवर स्वामी मुगति हिं गामी सिद्धि नयर मडणो।
भव वधण खीणो समर सलीणो, ब्रह्म जिनदास पाय वंदणो॥ १॥

५६. यशोधरचरित्र।

रचयिता ब्रह्म श्री जिनदास। भाषागुजराती मिश्रित हिन्दी (पद्य) पत्र सख्या २५. साइज १०॥×४॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३६–४० अक्षर। लिपि संवत् १८२६. पडित रूपचदजी के पढने के लिये ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गयी।

मगलाचरण—

मुनिसुव्रत जिन मुनिसुव्रत जी नतवु ते सार।
तीर्थकर जे वीसमु वाछित बहु दान दातार॥
सारदा स्वामिणि वलीस्तवु, जिमिबुद्धि सार हु वेगी मागु।
गणधर स्वामिनमस्करू, वली सकलकीरति गुरु भवतार॥
तास चरण प्रणमीनें, करें सुरासुर सार॥

अन्तिम पाठ—

राय यसोधर २ तणु जे रास जीवदयानु पीहर।
पाप मिथ्यात निकदसार, रागमोह विहडणु॥
गुणहतणु भडार सुणिइ, जेनर अनुदिन भणें
हिय में धरी बहुभाव, ब्रह्म जिणदास इम परिभणें
तेहनें शिवपुरे ठाम॥

दिल्ली सांहर विषें भलो जेसिहपुर जानु।
धम सथान समानयां अनि थानन मानूं ॥
सुन्दर नद खुस्यालए रचना ठहरानी।
भव्य धरौ निज चित्त में, भगवन की वांनी ॥
संवत सतरासै भले अरु और इक्यासी।
जे पढ़िसी सुणसी सदा, ते ही सुख पासी ॥
कातिक षष्टी भावती, ससि कै उजियारै।
भव्य जीव सुणि जे पढ़ें, वे ही विसतारै ॥
जैन धर्म परभाव सौ सबही सुख होई।
तातै धम सुधारिहे, तौ ता सम कोई ॥

अथ शुभ सवत्सरेस्मिन् श्रीमन्नृपति विक्रमादित्यराज्यात् सवत् १८०१ का वर्षे शाके १६६४ प्रवर्त्तमाने कार्त्तिक मासे कृष्णपक्षे नवम्या वृहस्पतिवासरे असलेखा नक्षत्रे जिहानावादस्थ जेंसिहपुरामध्ये श्री महावीर चैत्यालये पातिसाह श्री महम्मदसाह विजयछत्रे महाराजाधिराज श्री सवाई ईसरीसिंहजी राज्ये श्री मूलसघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सारस्वती गच्छे कुदकुदाचार्यान्वये भट्टारक जी श्री १०८ श्री देवेन्द्रकीर्त्तिजा तत्पट्टे भट्टारक श्री १०८ श्री महेंद्रकीर्त्तिजी तदाम्नाये आचार्यजी श्री नेमीचन्द्र तत् शिष्य पडित श्री रूपचदजी तत शिष्य पडित दयारामेण इद पुस्तक हस्तेन लिखित।

६१. यशोधर चौपई बंध कथा।

मूलकर्त्ता कायस्थ श्री पद्मनाभ। भाषाकर्ता साह लोहट। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र सख्या १३३. साइज ६×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर १० पक्तिया तथा प्रति पंक्ति मे २३-२६ अक्षर। रचना सवत १७२१ लिपि सवत् १८०३

मगलाचरण—

तीर्थंकर जिन बीसमौ मन मनसुव्रत वंदि।
ता समया की या कथा हिरदें धरि आनद ॥

प्रशस्ति—

थाव नवर खैराड महंत, हाडौती अर देस कहंत।
तामैं गढ बूंदी सुभ थान, इंद्रपुरी सम सोभै थान ॥
महाराज राजा सिरताज, पतिसाही थामनवधिपाज।
राव रतन गुन रतन समान, ... सुरभान।

धौलहर धाम घर घर मे विचित्र धाम,
नर कामदेव केसे सेवै सुखसर मै ॥
वापी वाग वारुण वजार वीथी, विद्या वेद विवुध विनोद ।
वानी वोलें मुखि नरमै, तहा करै राज राव भावस्यघ महाराज ॥
हिंदु धर्म लाज पाति सही आज कर मै ॥ १३ ॥

॥ चौपई ॥

श्रावक लोग वसैं धर्म वत पुजाकरैं जपैं अरिहत ।
तिनको सवक लोहट साह, करो चौपई धरी सुभ लाह ।
वस वघेर वाल भोवाल, दुगैरया वरगो भवि साल ।
धरम धुरंधर धरमो धीर, ता सुत तीन महा वरवीर ।
हीरो सुन्दर वड़े सुजान, लघु लोहट वुधि कौनिधान ।
श्री जिनदेव सगुरको दास, कीनो भाषा ग्रन्थ प्रकास ।
लघु दारघ गण अगण विचार मात छद विस्तार ।
सव्द शास्त्र कौ लह्यो न भेद, तातै वुधि मति करो न खेद ।

× × × × × ×

वरषा रिति आगम सुभ सार, मास असाढ तीज गुरवार ।
पाख उजाल पुरी भई सरल, अरथ भाषा निरमई ॥
सवत सत्रासै इकईस करी चोपई फली जगीस ।
मन अभिलाष सपूरन भए, जिन गुरु चग्न सीस धरि लए ॥

इति श्री राव जसोधर की चउपई वध कथा सपूर्ण । ग्रन्थ कर्त्ता श्री पद्मनाभ दतनुसारेण साह लोहट दुगरयौ गोत्रे धर्मा सुत वघेरवाल वासिगढ वू दी राजराव श्री भावसिंहजी विजयराज्ये ।

६२. योगीरासो ।

रचयिता पाडे श्री जिनदास । भाषा (पद्य) । पत्र सख्या २. साइज ११×४½ इञ्च । पृष्ठ पर १२ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ४६-५० अक्षर ।

मंगलाचरण—

आदि पुरुष जो आदि जु गोतम आदि जती आदिनाथो ।
तास परपरहुवा मुनिवर दिगंवर सहताणो कु दकुदाचारिजगुरुमेरा ॥१॥

इति रत्नपाल श्रेष्टिनो रास सपूर्णम्। संवत् १८२३ वर्षे पोष वुदि १३ सोमवारे श्री मूलस सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे कुदकुदाचार्यान्वये श्री सुरतवदिरे आदीश्वरचैत्यालये भट्टारक श्री विद्यानदं तत्पट्टे भट्टारक जी श्री १०८ देवेन्द्रकीर्त्ति जी लिखापितं।

६४. राजुल पच्चीसी।

रचयिता लालचन्द विनोदीलाल। भाषा हिन्दी (पद्य)। पत्र संख्या ४. साइज ६×४ इञ्च। पद्य सख्या २५.

मगलाचरण—

प्रथमहि सुमरु जादौराय, पुनि सारद हि मनावस्यौ जीव वे।
वंदौ अपने गुरु के पाय, राजमती गुण गायस्यो जीव वे॥ १॥

अन्तिम पाठ—

इह लालचन्द विनोद गावे, सुनत सब जन गह वरौ।
राजुल पति श्री नेमि जिन सब संघ कौ मगल करौ॥

६५. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता ब्रह्म श्री वीर। भाषा हिन्दी। पत्र सख्या ७, पद्य सख्या ८५

मंगलाचरण—

श्री गुरुभक्ति करो मन लाय, वचन सुणी मन उलटो थाय।
रात्रि भोजन कहुं निहाल, साभल ज्यो सहु वाल गोपाल॥

अन्तिम पाठ—

भोला काई भ्रमे पडो जीस्यो जू उ महार।
रात्री भोजन परहरो जेम पावो भवपार॥ १॥
मूल सघ मडल मणी सरस्वती गच्छे राय।
भट्टारक शुभचन्द्र शिष्य ब्रह्म वीरजी गुणगाय॥ २॥

६६. रात्रिभोजनकथा।

रचयिता श्री कि नसिंह। भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र संख्या २६. साइज ६×४ इञ्च। पद्य सख्या ४१५.

मगलाचरण—

समोसरण सोभा सहित जगतपूज्य जिनराज।
नमों त्रिविध भवदधिनको तरण त्रिरद्ध जिहाज॥ १॥

सुनि के दौलति वेल सु वेंन, मन धरि गायो मारग जैन।
नंदौ विरधौ जिन मतसार, सुखपावो चउ संघ अपार।
दौलति वेल लहो निज बोध, होहु होहु सब को प्रतिवोध।

संवत् १८०८ कार्त्तिक मासे शुक्लपक्षे तिथौ १४ भौमवासरे उदयपुर मध्ये सेवकालुवालालजी सुख जी की बहु बाई मोठी तथा राजबाई ने लिखा।

६८. व्रतकथाकोष।

रचयिता श्री खुशालचन्द काला। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११४ साइज १२×५ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३४-३८ अक्षर। रचना संवत् १७८७. लिपि संवत् १८२०.

मंगलाचरण—

आदिनाथ वंदू जिनराय, कर्मकलंक रहित सुकाय॥ १॥
धनुष पचसै जाकी काय, वृष लक्षण सोभैं अधिकाय।
वर्द्धमान वंदौ जिनदेव, प्रियकारिणी मात सुत एव॥ २॥
सप्त हस्त तन हेम समान, सिद्धारथ नृप को सुत जान॥ २॥

प्रशस्ति—

॥ दोहा ॥

दक्षिण दिसि की कूंट मे जो सु कयौ आवास।
तिस मंदिर मांही रहै पंडित लिखमीदास॥ १॥

॥ सवैया ॥

देव इन्द्र कीरति भयेजु मूलसंघ भट्टारक कौ पदस्थ जाकौ सोहितु है।
पूजारु प्रतिष्ठा करवाई अतिसर्मकार मोहनी सुमूरति लखेतैं मोहितु है॥
जाही के सुगच्छ माहि पंडितश्रीय जु दास वानी कामधेनु तैं सुग्यान दोहि इतु है।
खिमावान ग्यानवान पंडित विवेकवान राति धोस आगम विचार टोहि इतु है॥२॥

× × × × ×

ऐसे लिखमीदास ढिग मैं कुछ पढ्यो सुग्यान।
पठन कीयो मो बुध्य लौं वे तो ग्यान निधान॥
तिनिहीं के उपदेस तैं भाषा सार बनाय।
श्रुत सागर ब्रह्मचार को सुभ अनुसार सुनाय॥

॥ चौपई ॥

सांगानेर थकी इकबार, मैं आयौ दिल्ली सुमझारि।
श्री जिनराज तणीं बरसव, करिहूँ सुखदा मनवच एव॥

बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री चन्द्रकीर्त्ति आम्नाये खण्डेलवालान्वये शेरपुरा की श्राविका लिख मुक्तावली व्रतोद्यापनार्थं उपदेश बाई धनाई। लिखत पाडे कैसोसाह मान्या सुत सगही पूरा सगुणदत्त देहुरा को पाडे लिखी।

७१ समयसार नाटक।

रचयिता महाकवि बनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ११८, साइज १०×५६ इञ्च। रचना सवत् १६६३.

प्रशस्ति—

अब यह बात कही है जैसे, नाटक भाषा भयौ सु ऐसें।
कुदकुदं मुनिमूल उथरता, अमृतचन्द्र टीका के करता।
समैसार नाटक सुखदानो, टीका सहित संसकृत बानी।
पडित पढै मूढमति बूझै, अलपमती कौ अरथन सूझै।
पाडे राजमल्लजिनधर्मी, समैसार नाटक के मर्मी।
तिह्नी गरंथ की टीका कीनी, बालाबोध सुगमकरिदीनी।
इहि विधि बोध बचनिका फैली, समै पाइ अध्यातम सैली।
प्रगटी जगत माहि जिनबानी, घर घर नाटक कथा बखानी।
नगर आगरे माहि विख्याता, कारन पाइ भये बहु ज्ञाता।
पच पुरुष अति निपुन प्रवीने, निसिदिन ग्यान कथा रस भीने।

॥ दोहा ॥

रूपचद पडित प्रथम, दुतीय चतुर्भुज जांन।
तृतीय भगौतीदास नर, कौरपाल गुणधाम॥
घरमदास ए पच जन, मिलि बैठहि इक ठौर।
परमारथ चरचा करैं, इन्हीं के कथन न और॥
कबहौं नाटक रस सुनहि- कबहौं और सिधत।
कबहौं बिग बनाई कैं, कहै बोध बितत॥
वास हमारा टोडो जानि, सागनेरि बसे पुनि आनि।
फेर जिहानाबाद मझारि, आप रहै जैस्यंघ पुरिसार॥
महावीर को मन्दिर जहा, सकल पच जन आवैं तहा।
चित कौं रागरु घरम धरु, सुमति भगौती पास।
चतुर भाव थिरता भए, रूपचद परगास॥

॥ दोहा ॥

समैसार आतम दरव, नाटक भाव अनत।
सोहु आगम नाम मै, परमारथ विरतत ॥

इति परमागम समयसारनाटक नाम सिद्धात पूर्णम्।

७२. समयसारनाटक भाषा।

भाषाकार श्री रूपचद। भाषा हिन्दी गद्य। पत्र सख्या १३७. साइज १२॥×५॥ इञ्च। पद्य संख्या ७२४. महाकवि बनारसीदास द्वारा रचित समयसार नाटक के पद्यों का गद्य मे अर्थ लिखा गया है। रचना सवत् १७००.

मगलाचरण—

श्री जिन वचन समुद्र कौ, को लग होय बखान।
रूपचन्द तौहु लखै, अपनी मति अनुमान ॥

प्रशस्ति—

पृथ्वीपति विक्रम के राज मरजाद लीन्हे,
सत्रहसै बीते परिठातु आव रस मै।
आसू मास आदि वौंसु सपूरन ग्रन्थकर्न्हौ,
वारतिक करिकै उदारससिमै।
जौ पै यहु भाषा ग्रन्थ सबद सुबोध या कौ,
ठौहू विनु सप्रदाय नावै तत्व वस मैं।
यातै ग्यान लाभ जाति सबनि कौ बैन मानि,
बात रूप ग्रन्थ लिख्ये महा शात रस मे ॥ १ ॥

खरतर गच्छनाथ विद्यमान भट्टारक,
जिनभक्ति सूरि जू के धर्मराज धुर मैं।
खेमसाखमांडि जिनहर्ष जू वैरागी,
कवि शिष्य सुखवद्ध शिरोमनि सधम मैं।
ताके शिष्य दयासिव गणी गुणवत,
मेरे वरम आचारिज विख्यात श्रुत धर मे।
ताकौ परसाद पाइ रूपचद आनद सौं,
पुस्तक बनायो यहु सोणगिरि पुर मैं ॥ २ ॥

सागानेर सुथान मे देश ढुंढाहडि सार।
ता सम नहि कौ और पुर, देखे सहर हजार॥
अमर पूत जिनवर भगत, जोधराज कवि नाम।
वासी सागानेर कौ करी कथा सुखधाम॥
धर्मदास को पूत लघु जाति लुहाड्यौ जोय।
नाम कल्याण सु जानिये कवि कौ मामौ सोय॥
ताके पढिवें कारनै, कियो ग्रन्थ यह जोध॥
नाम समकित कौमुदी, दायक केवल बोध॥
इहै समकित कौमुदी, जो नर पढै सुभाय।
सो सुर नर सुख पाय कै अनोकरमि सिव जाय॥

॥ चौपई ॥

संवत सत्रासै चौवीस फागुन वुदि तेरस शुभ दीस।
सुकरवार सो पूरन भई इहै कथा समकित गुन ठई॥

॥ दोहा ॥

ग्यारासैं अठहत्तरि इहै छंद चौपई जान।
कह्यौ कौमुदी ग्रंथ को जोध सुमति अनुमान॥

महाराम के हेतो सौं राखे अपने पास।
काम खजाना कौ दयौ नथमल कौं सुखरास॥

पुनि भाषा रचना विषै धार्‍यो मैं उपयोग।
पैं सहाय विन होय नहीं, तवहि मिल्यो इक जोग॥

कारन विन शुभकाज की सिद्ध न होय लगार।
तातै सो कारन सुनौ, वुध जन सुख करतार॥

॥ चौपई ॥

श्री सुखराम सकल गुन खान, बीजामत सु गछ नभ भान।
वसवा नाम नगर सुखधाम, मूलवास जानौ अभिराम॥
अमोदक के जोग उसाय, वसुवा तजैं भरतपुर आय।
जिनमन्दिर मे कियो निवास, मूलवास जानौं अभिराम॥

७५. सिद्धान्तसारदीपक ।

रचयिता श्री नथमल बिलाला । भाषा हिन्दी (पद्य) पत्र सख्या १६६ साइज १२×६ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १७ पक्तिया तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर । भट्टारक सकलकीर्त्ति की सिद्धान्तसार नामक रचना के आधार पर भाषा लिखी गयी है ।

सर्वदर्शी सर्वज्ञ महत सकल अर्थ दीपक श्रीमंत ।
गणधर पद वदित जगनाथ, वदौ चरण जोरि जुग हाथ ॥१॥

अन्तिमपाठ तथा प्रशस्ति—

जिहिं विधि भाषा ग्रंथ यह, भयो परम हितकार ।
सो वरनन बुधजन सुनो, करि निज चित्त इक ठार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

नगर आगरो परमपुनीत, साधर्मीजन वसै विनीत ।
जहां जेठमल साह सुजांन, गुन गन मंडित परम निधान ॥
ताके तनुज दोय गुनवान, निजकुल कमल प्रकाशन भान ।
जेठौ सोभा चंद उदार, लघु सुत गोकुलचद विचार ॥
वस खण्डेवाल अवदात, गोत बिलाला जग विख्यात ।
अन्नोदक को कारण पाय, वसे भरतपुर माही आय ।

॥ दोहा ॥

नदन सोभाचंद को, नथमल निपट अयान ।
छद कोस पिंगल तनों ज्ञान अस नहीं जान ॥

॥ चौपई ॥

सगही चादूवाड प्रसिद्धि, कैमोदास वरत बहु रिद्धि ।
मयाराम ताको सुत सही, पोतदार जानै सब मही ।
मोदी.... 'महाराज जाकौं सनमान दीह्नौ,
फतेचद पृथ्वीराज पुत्र वनमाल के ।
फतेचद जूके पुत्र जसरूप जगन्नाथ,
गौतमानधर में धरैयासुभवाल के ।
ता में जगन्नाथ जू के बुझिबेके हेतु,
हम व्यौरी कैं सुगम कीन्हे वचन दयाल के ।

संवत् १८६० आसोजमासे कृष्णपक्षे तिथौ १३ मंगलवासरे लिख्यत महात्मा गुमानी नासरीदा मध्ये।

७६. सिन्दूर प्रकरण।

रचयिता कौरपाल बनारसीदास। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १२. साइज ६×४ इञ्च। पद्य संख्या १०४. रचना संवत् १६६१.

मंगलाचरण—

सोभित तप गजराज सीस सिन्दूर पूर छवि,
विविध दिवस आरम्भकरन कारन उद्योत रवि
मंगल तरु पल्लव कषाय कंभार हुतासन
बहुगुन रत्ननिधान मुक्ति कमला कमलासन
इहि विधि उपमा सहित अरुन बरन संताप हर।
जिनराय पाय नपजोतिभर नमत बनारसी जोरिकर॥

प्रशस्ति—

कौरपाल बनारसी मित्र युगल इक चित्त।
तिन गरथ भाषा कियौ बहुविध छंद कवित्त॥
नाम सुक्ति मुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शत शिलोक परवान सब, इति गरंथ विस्तार॥
सोलासै ईक्यानवें रितु ग्रीषम वैशाख।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सित पाख॥

७७. सीताचरित्र।

रचयिता कविवर रायचंद। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या १४४. साइज १२×५॥ इञ्च। प्रत्येक पृष्ठ पर ११ पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ३०-३३ अक्षर। रचना संवत् १७१३. लिपि संवत् १८०८. प्रति पूर्ण है।

मंगलाचरण—

प्रणमौं परम पुनीत नर   वर्द्धमान जिनदेव।
लोकालोक प्रकास तस   करैं समकिती सेव॥ १॥

प्रशस्ति—

कियो ग्रन्थ रविषेण नैं   रघु पुराण जिय जांच।
बदे अरथ ईसु मैं कह्यो   रायचन्द उर आण॥

वादीचन्द्र वाद बहु जीत्या	घट सरतो गुणमाल जी।।
महीचन्द्र मुनि जन मन मोहन,	वांणी जेह वीस्तार जी।
परवादी नामा नमुं काव्या	गर्वन करो भगार जी।।
मेरुचन्द्र तस पटे सोहे,	मोहे भवीयण मन्न जी।
व्यास्याय वांणी अमीयसमाणी,	साभलोए के मन्न जी।।
गोर महीचन्द्र सीप जयसागर,	रच्यो सीता हरण नो रास जी।
नरनारि जे भण छे सूण छे	तस घरे जय जय कार जी।।
हूंवड वसो रामां संतोषी.	रामादे तेह नो नार जी।
तेह तणो पूत्र से तस घरे	जय जय कार जी।।
तेह तणे आदे सासी हरणे,	कीधु मन उलास जी।
साभल भांगा ता सूख हो सी,	सीता सील विलास जी।।
संवत सतरवत्रीसावरसे	वैसाख सुदी वीज सार जी।
वूधवारे परिपूर्ण ज चरयुं,	सूर तनय रयफार जी।।
आदी जिणेसर तणे प्रसादी	पद्मावती पसाय जी।
साभलतां गातां ए सहूनें,	मन मां आनद थाये जी।।
महापुराण तणे अणुसारी,	कीधूं से मनोहार जी।
कवि जिन दोप में देसो कोई,	सोधजो तमे सूखकार जी।।
मुझ आलसूने उजय घढयुं,	सारदा ए मती दाघ जी।
तेह प्रसादे ग्रन्थ ए कीधो,	स्यामदासे जसलीव जी।।
सीता सील तणो ए महीना,	गाउ सहू नरनार जी।
भावधार जे गाए महीना,	तस घर मगल च्यार जी।।

॥ दोहा ॥

भावधार जे भणे सूणे सीता सीलविलास।
जयसागर रई उचरे यह चेतस मन नी आस।।

इति भट्टारक महीचन्द्र शिष्य ब्रह्म जयसागर विरचिते सीता हरणाख्याने श्री रामचन्द्र मुक्तिगमन-वर्णनं नाम षष्टमोऽधिकार समाप्त.।

संवत १८२५ वर्षे पोषसुदी २ शुक्रवासरे गाम श्री देवदनगरे पद्मप्रभचैत्यालये श्री मूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री रत्नचन्दजी तत्पट्टे भट्टारक श्री देवचन्द्रजी तत्पट्टे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रजी तत् शिष्य ब्रह्म गोकलजी तल्लघु भ्राता ब्रह्ममेघजी लिखितं स्वहस्त।

श्री पद्मनन्दि पाट हुंवा   सकलकीर्ति भव तारतो.
भुवनकीर्त्ति तपमूर्त्ति   श्री ज्ञानभूषण ज्ञान धारतो।
श्री विनय कीर्त्ति पाटि उपज्या   भट्टारक श्री शुभचद्रतो ॥
भव्य कुमुदचंद्रजसो,   कुवादी गजमृगेंद्रतो।
आम्नाय गुरु श्री शुभचद्रतो   आगम गुरु मुनिचद्र तो।
अध्यात्म गुरुकर्मसी ब्रह्म,   शिष्य गुरु हीर ब्रह्मिद्रतो ॥
अक्षर शास्त्र कवित गुरु,   ब्रह्मचारी श्री जिणदास तो।
जेण धर्म उपदेश दियो   शास्त्र श्लोक पट भापना ॥
ते सहु गुरु हुवा मुझनणां,   कर जोडि करू प्रणाम तो।
गुरु,गुण नविलोपिये,   गुरु लोपी पापी नाम तो ॥
मुझ हृदय पदम माहि,   गुरु भानु वाणी किरण तो।
मोह तिमर दूरैं हरी,   ते गुरु तारण तरण तो ॥
सामंतभद्रसूरी कृत,   वसुनन्दि श्रावकाचारतौ।
आसाधर पंडित कृत,   सकल कीरति कृत सारतो ॥

× × × × ×

वानवार देश सोहामणि,   शाकपुर नयर मझारि तो।
हाट हार मदिर मालीया,   प्रजा वासि वर्ण च्यारतो ॥
श्री आदिनाथ तीरथ तणों,   सोहै जिन प्रासाद तो।
समोसरण कल्याण त्रय आदि,   जिनविंब करि आह्लादतो ॥

× × × × ×

त्रेपनक्रिया रास जेणें कीयो,   जेणैं कीयो ध्यानामृत रासतो।
श्री महावीर रास कीयो,   तेणि कीयो एह भासतो ॥
कर जोडि पद मीं कहै,   श्रावका चार कीयो रासतो।
निज वुद्धि नैं अनुसारैं,   साह्यकारी मित्र जिणदास तो ॥

× × × × × ×

सवत संख्या जिन भावना,   संवच्छर संख्या प्रमाद तो।
मास माहि सुहामणों,   भाद्रवा सुदि मर्याद तो ॥
तिथ सख्या चारित्र भेदो,   रस संख्या शुभ वारतो।
शुभ नक्षत्र शुभ योगि,   कीयो मैं श्रावकाचार तो ॥

× × × × ×

श्रावकाचार तणो श्रावकाचार तणो रास कियो मैं एणा—

तासु महिन बुद्धि नहि आन, कीयौ चौपई बध प्रवान।
होय अशुद्ध जहाँ पदहीन, फेरि सवारौ गुणियन चीन ॥
वार वार जपौं करि जोर, बुधिजन मोहि देहु मति खोरि।
वंदौ जिन सासन कौ धम्म, जापमाय नासै अघ कर्म्म।
वंदौ गुरु जे गुण के मूर, जिनके होय ग्यान कौ पूर।
वंदौं माता सीह वाहिनी, जातैं सुमति होय अतिघनी।
वंदौ मुनियन जे गुन धम्म, नवरस महिमा उदतिन कर्न।
वंदौ सज्जन कुल सुख धाम, वंदौ धर्म्म बुद्धि वर नाम।
महिमा सागर महा सुजान, ... ।
जाकै हृदै दया कौ वास, जीवन कवहू देयन त्रास।
ताकै एक अपूरव रीति, सुरही सौं अति राखै प्रीति।
सुख मे जल पीवै तृणा खाय, अपणै मारग आवै जाय।
तिनकी सक सीह मनि धरै, अकबर कै आयस तें डरै।
मारसबद मुख थै नहि चवै, एक छत्र महि मंडल तवै।
नवौ रिद्धि पूरण भंडार, हय गय वाहण अगणी अपार।
नृप अनेक सेवैं दरवार, दुःखी दीदन कौ आधार।
सुखी भये जिनसए पाय, विमुख भये दुख लहै अवाय ॥
परनारी परधन अति आहि, तिन तन कोउ सकयन चाहि।
सत्तराज महि मंडल तेन, सुरपति हू थै अधिकमतेज।

इति श्री श्रीपालजी को चरित्र चौपई वंध परिमल्ल कृत संपूर्ण। संवत् १७६४ वर्षे पोष सुदी १० भोमवासरे तत्दिने इद पुस्तक लिखी जोसीजी पाटन मध्ये वास्तव्ये। तत्दिने इद पुस्तक लिखायत वाई तुलसा पठनार्थं।

८२. श्रीपालरास।

रचयिता ब्रह्म श्री रायमल। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ४०, साइज ७×६ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य सख्या २६७, रचना संवत् १६३०, लिपि संवत १६८६.

मंगलाचरण—

हौं स्वामी प्रणमो आदि जिणंद, वंदौ अजित होई आनंद।
संभौ वंदौ जुगति स्यौं, हो अभिनंदन ना प्रणमो पाई ॥

श्री सरस्वती गच्छ गण बलात्कारान्वय कुदकुद महान ।
नद्यम्नाय भव्यचित कमलसु पदमनन्दि जिम भान ॥ १ ॥
तिनके पटि श्री सकलकीर्त्ति मुनि भवि जीव समोद दिवाइ ।
सुकवि सरल वानी करि महीयल बुधजन मन रजवाइ ॥ २ ॥
तिनके पटि श्री भुवनकीर्त्ति तसकीर्त्ति भवनपसरान ।
ज्ञातातत्त्वपूरान काव्य करता जिन बिंब प्रतिष्ठा विधान ॥ ४ ॥
तिह पर श्री ज्ञान भूषण विराजें परकासन सुभ ग्यान ।
निज वचनै दिन कर सम उदयै अद्भुत मनास भव्यान ॥ ५ ॥
तिन पट विजय कीर्त्ति जैवतं गुरु अन्यमती परवत समान ।
स्याद्वाद वजें करि फोडत तिन सिष्य शुभचन्द्र जान ॥ ६ ॥
जिन पुनी पुरुष पुरान पवित्र सुभ कहियौ सुभग वखान ।
ना कवि मद थें न कीर्त्ति अहंकार निज मत प्रमोद लहान ॥ ७ ॥
निज अघहरण कारन ग्रंथ सस्कृत ता मुनि सशेष आनि ।
भाषा करी ढाल चौवन मे लिखमीदास ठान ॥ ८ ॥
सुनौ भवी भावीक जिन गुण गान ॥

॥ दोहा ॥

श्री शुभचन्द्राचार्य तिन्ह, कह्यौ सहसकृतसार ।
ते सुनि, लछमीदास भनि, भाषा ढाल पियार ॥ ९ ॥
ना मैं देख्या ग्रथ कोऊ, व्याकरण छद न जानि ।
तुच्छ मति रह भाषा रची, बुधजन मनीह सवान ॥ १० ॥
आगम चूक पनीसकति, उदीर कैं धन जूत क्रपनतनूर ।
तासा मित्रापन अधिक, प्रति पर सपरस मान ।
कूसलसींव करनी उचित, ताकी सम नही आनी ॥ ११ ॥
पडित जसरथ सुत सुभग, तवानद तस नाम ।
ता उपदेस भाषा रची, भविजन कौं विसराम ॥ १२ ॥
सवत सत्तरासें उपरि तेतीस जेठ सु पास ।
पचमी ता दिन पूर्ण लहि मगल कारी भाष ।
फेरि लिखी गुनचास में लद्मीदास निज बोध ।
भूलौं चूकौं सबद कोउ बुधजन लीज्यौं सोधि ।

रितु वसंत मास वैशाख, नौमि सनीसर कृष्णहि पक्ष ।

× × × : × × ×

स्वामी सुव्रत नाथ जिनंद, सुमरत होइ सिद्धि आणंद ।
नासै पाप भली मति होइ, नमौ सीस जोडे कर दोय ॥

८६. हरिवंशपुराण भाषा ।

रचयिता श्री खुशालचन्द । भाषा हिन्दी पद्य । पत्र संख्या २४६. साइज १२×५॥ इञ्च । प्रत्येक पृष्ठ पर १० पंक्तियां तथा प्रति पंक्ति में ४०-४२ अक्षर । रचना संवत् १७८०. लिपि संवत् १८६०. लिपि सुन्दर है।

मंगलाचरण—

महावीर वंदौ जिनदेव, इंद्रादिक करि हैं तिन सेव ।
तीन लोक में मंगल रूप, ते वंदौ जिनराज अनूप ॥ १ ॥
नेमिसुर वंदौ चित लाय, तिहु जग करि पद अघाय ।
पाप विनाशन है जिन नाम, सब जिन नाम वंदौ गुणधाम ॥

अन्तिम पाठ—

नेमनाथ जिनके वचन, सब जीवन सुखदाय ।
तहां ब्रह्म जिनदास जू, करि लीहो अधिकार ॥ १ ॥
ताही श्री जिनदासजी, ग्रन्थ रच्यौ इह सार ।
सो अनुसार खुस्याल ले, कह्यो भविक सुखकार ॥ २ ॥

प्रशस्ति— ॥ दोहा ॥

मेरी बात सुनो अबै, भव्य जीव मन लाय ।
कहौ जाति खुस्याल जु, सुन्दर सुत जिनराय ॥

॥ चौपई ॥

देश टुंढाहर जाणौ सार, तामैं धरम तणु अधिकार ।
विसनसिंघ सुत जैसिंहराय, राजकरै सबकूं सुखदाय ॥
देशतनो महिमा अति घनी जिन गेहा करि अति ही बनी ।
जिन मंदिर भवि पूजा करै, केइक व्रत ले केइक धरै ।
जिन मंदिर करवावै घना, सुरग विमान तनी वर छवा ।
रथ जात्रादि होत बहु जहां, पुन्य उपावत भविजन तहां ।

ग्रन्थ तनी भाषा रची, जिन सेवक अनुसार।
जसको कारिज ना कर्यो, कर्यो भविक उपगार ॥ १२ ॥

॥ चौपई ॥

ऐसी जानि भविक सुखदाय, पढिजे सुनिजै मनवचकाय।
काला जाति खुस्याल सुनाम, भाषा रची परम सुख धाम ॥ १३ ॥
संवत् सतरासै अरु असी, सुदी वैशाख तीज वर लसी।
सुकरवार अति ही वर जोग, सार नख्यतर कौ संजोग ॥ १४ ॥
पहर डोढ दिन बाकी रह्यौ, भाषा पूरण करि सुख लह्यौ।
कसर देखि पंडित जन कोय, सुन कर लीज्यौ अक्षर सोय ॥ १५ ॥
मैं तो ग्रन्थ पढे कछु नांहि, सार विचार नहीं मुझ माहि।
यातै दोष न दीजौ कोय, अलप बणौ गुण लीज्यौ जोय ॥ १६ ॥
जिनवर चरित सुवर्णतैं, उपजै पुन्य अपार।
जे भवि सुमरै भाव सौं, ते पावै शिवसार ॥ १७ ॥
हरिवंश महत्शास्त्र तस्य भाषा विनिर्मित।
नाम्ना खुस्यालचद्रेण भव्याना खलु शर्मदा ॥ १८ ॥

संवत् १८६० का भाद्रवमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ ८ लिखते वैष्णव चेतनदास नासरोदा नगर मध्ये शुभ भवतु।

८७, हरिवंशपुराण।

रचयिता श्री नेमीचन्द्। भाषा हिन्दी पद्य। पत्र संख्या ७७. साइज १२×५ इञ्च। सम्पूर्ण पद्य संख्या १३०५ रचना संवत १७६६. लिपि संवत् १७८३. प्रति पूर्ण है। इसका दूसरा नाम नेमीश्वर रास भी है।

मंगलाचरण—

श्री भगवान जो वीनउ, अरहत देव निरदोष अठारतो।
छीयालीस गुण शोभता, शोभै हो चौतीस अतिशय सारतो ॥

प्रशस्ति तथा अन्तिम पाठ—

देस दु ढाहड सोभितो नाना विधि वृच्छ भला सुसार तो।
कलपवृछिकी वोपमा जसी मन वांछित फल का दतारतो ॥ १ ॥
चहु दिसि सरवर वापिका नदी कुवा अर कुड अपार तो।
निरमल पाणी स्यौं भरया, कमल उपरि भ्रम करे गुंजार तो ॥ २ ॥

मरसत्ति गछ महा सोभिता, कुदकुंदा अवतार ॥ १६ ॥
कुदकुंद भट्टारक भणौं, जिहि नै विदेह ले गया देवतै ।
सूत्र सिधात ल्याया तवै, प्रगट वात जाणै सव एव तौ ॥ १७ ॥
ता पाछै क्रमि क्रमि भया, भट्टारक गुणधाम ।
पंच महाव्रत पालवैं, आचारै अभिराम ॥ १८ ॥
भट्टारक सव उपरै, जग कीरति जग जोति अपारतौ ।
कीरति चहुं दिसि विस्तरी, पाच आचार पालै सुभसारतौ ॥ १९ ॥
प्रमत्त मैं जीतै नहीं, चहुं दिसि मै सव ताकी आणतौ ।
खिमा खडग स्यौं जीतिया, चौराणवैं पट नायक भाणतौ ॥ २० ॥
ताकौ सिप नेमचद जी, लघु भ्राता तसु झगडु जाणितौ ।
सेठी गोत पद्मावत्या, खडेलवाल तसु वै सव खाणितौ ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

नेमचद कै सिख भला, डू गरसी रुपचद ।
पडित चतुर विवेक सव, सील तणा सव कद ॥ २२ ॥
लिखमीदास दोदराज जी, पडित सव मनकै सिर मौरतौ ।
ज्या दीयो उपदेस नै, रासौ रच्यौ विविध स्यौं दोरतौ ॥ २३ ॥
देव गुरु शास्त्रप्रसाद थी, सरसति माता तणौ पसावतौ ।
रच्यौ रास श्री नेम कौ, नेमिचंद मनि धरकरि भावतौ ॥ २४ ॥
आचार्य ब्रह्म वाई मवै, पडित मवयन स्यौं मनहारितौ ।
नेमचद विनती करे, कवियन सवही लेहु सुधारितौ ॥ २५ ॥
सतरासै गुणहत्तरै, सुदि आसोज दसैं रवि जाणतौ ।
रास रच्यौ श्री नेमि को, वुधि सारु मैं कीयो वखाणतौ ॥ २६ ॥
दोय सवैया दीपता, सोरठा कहियैं तहा पचीस तौ ।
दोइ सैं साठि दोहा कया, एकादास कड खैर जगीमतौ ॥ २७ ॥
एकहत्तर दम टाल की, गाथा कही सवै शुभ शुद्ध तौ ।
वार्ता ठाम पैंतीस मैं, कड़े अविकार छत्तीस प्रसिद्ध तौ ॥
गाथा दोहा सोरठा, सवमिलि कह्या तेरासै आठतौ ।
वार्ता उपरि जाणि ज्यौं, सव ग्रथ उगईस सैंवलि आठमौ ॥ २८ ॥

परिशिष्ट

१. पउमचरिय ।

रचयिता महाकवि स्वयभु त्रिभुवनस्वयभु। भाषा अपभ्रंश। पत्र सख्या ३७५. साइज ११×४।। इश्च प्रत्येक पृष्ठ पर १३ पक्तियां तथा प्रति पक्ति मे ३८-४२ अक्षर। लिपि सवत् १५४१ वैशाख सुदो १२।

प्रारम्भिक अ श—

(१)

णमह णवकमल-कोमल-मणहर — वर-वहल-कंति-सोहिल्लं।
उसहस्स पायकमल समुरासुरवंदिय सिरसा ।। १ ।।
चउमुहमुहम्मि सद्दो दती सद्द च मणहरो अत्थो।
तिण्णि वि सयभुकव्वे किं कीरइ कइयणो सेसो ।। २ ।।
चउमुहएवस्स सद्दो सयभुएवस्स मणहरा जीहा।
भद्दस्स य गोग्गहण अज्जवि कइणो ण पावंति ।। ३ ।।
जलकीलाए सयभु चउमुहएव च गोग्गहकहाए।
भद्द च मच्छवेहे अज्जवि कइणो ण पावंति ।। ४ ।।
तावच्चिय य सच्छंदो भमइ अवब्भस-मच्च मायगो।
जाव ण सयभु-वायरण- अकुसो पडइ ।। ५ ।।
सच्छद-वियउ-दाढो छदालकार-णहर-दुप्पिच्छो।
वायरण-केसरड्ढो सयभु पचाणणो जयउ ।। ६ ।।
दीहर-समास-णालं सद्दल अत्थकेसरग्घविया।
वुह-महुयर-पीयरस सयभु-कव्वुप्पलं जयउ ।। ७ ।।

(२)

वड्ढमाण-मुह-कुहर विणिग्गय, रामकहाणए एह कमागय।
अक्खरवास-जलोहमणोहर, सुयलकार-छंदमच्छोहर।
दीह-समास पवाहावंकिय, सक्कय-पायय पुलिणालकिय।
देसीभासा-उभय-तडुज्जल, कविदुक्करघणसद्दसिलायल।
अत्थवहल—कल्लोलाणिट्टय, आमोसय-सम तूहपरिट्ठिय।

तिहुयणसयंभु णवर एक्को कइरायचक्किरुप्पण्णो।
पउमचरियस्स चूडामणि व्व सेसं कयं जेण ॥
कइरायस्स विजयसेसियस्स वित्थारिओ जसो भुवणे।
तिहुयणसयंभुणा पोमचरियसेसेण णिस्सेसो ॥
तिहुयणसयंभुधवलस्स को गुणो वण्णिउं जए तरइ।
बालेण वि जेण सयंभुकव्वभारो समुव्वूढो ॥
वायरणदढक्खंधो आगमअंगोपमाणवियडपओ।
तिहुयणसयंभुधवलो जिणतित्थे वहउ कव्वभरं ।
चउमुहसयंभुवाएण वण्णियत्थं अचक्खमाणेण ।
तिहुयणसयंभुरइयं पंचमिचरियं महच्छरियं ॥
सव्वे वि सुया पंजरसुयव्व पढअक्खराइं सिक्खंति ।
कइरायस्स सुओ पुणसुयव्व सुइगब्भसंभूओ ॥
तिहुअणसयंभु जइ ण हो हुतु णंदणो सिरिसयंभुदेवस्स।
कव्वं कुलं कवित्तं तो पच्छा को समुद्धरइ ॥
जइ ण हु उ च्छंदचूडामणिस्स तिहुयणसयंभुलहुतणउं।
तो पद्धडियाकव्वं सिरिपंचमि को समारेउ ॥
सव्वो वि जणो गिण्हइ णियतायविढत्तदव्वसंताणं।
तिहुयणसयंभुणा पुणु गहियं सुकइत्तदव्वसंताणं॥
तिहुयणसयंभुमेक्कं मोत्तूण सयंभुकव्वमयरहरो।
को तरइ गंतुमंतं मज्झे णिस्सेसमीसाण ॥
इय चारुपोमचरियं सयंभुएवेण रइयसमत्तं।
तिहुयणसयंभुणा तं समाणियं परिसमत्तमिणं॥
चेष्टितमयणं चरितं करणं चारित्रमित्यमोयशब्दापेदया ।
या रामायणमित्युक्तं तेन चेष्टितं रामस्य बोधपति ॥
शृणोति जन तस्यायुर्वृद्धि मोयते पुण्यं वा ।
श्रीकृष्णखड्गहस्तारिपुरपि ण करोति वैरमुपसमेति॥
मा वरसुयंमिणिभूवइ रायतणयकयपोमचरियं अवसेसं।
सयलं वंदइअलहुअप्पुण्णं गोइंदमयणसुयणंतविरइयं ॥
वंदइ पउमचणयस्स अच्छरंअ दाणं तिहुयणसयंभुणा रइयं ॥
मडयस्सं वंदइआगसिरिपालपहुइ भव्वयणसमूहस्स ।

घत्ता

परिणिंदणिणद्दलेसलदणु, सदवदरत्ता णट्ठिय ।
कलिकदल अट्ठवि गुणगरुव, मइ मुएविकसुसाठय ॥३॥
परणिंदपमुहगुणजझविवत्त, महुनोवि कित्तिणउ किवरत्त ।
मा चारु चायसुहडत्तणेण, अह हवइ सगस सुइत्तणेण
वभेण भुवणु कासो ण भव्वु, गयकणखलेदिएणु दियहसव्वु ।
परुसेण परुपरामेहयत्ति, खत्तियहणेवि दिण्णयहरित्ति ।
कुरणेण कणयकोडिहि कयत्थ, उयरित्तचित्त विप्पाण सत्थ ।
चाएणविदुत्थिय कयविरामु, हरिचदु चदसणिहियणामु ।
तक्खयरक्खणे गरुडहो अभगु, जीमूयवाहणेणावि अगु ।
दिएणउ सिवेण सप्पहोपसमु, दह्यखणमसरीरमसु ।
जेणेहु दवीइणा अट्ठिदिएण, को पावइ तिहुयणे तहो पइएण ।

घत्ता

तहो चारुचाय चलणरहचलिय, कित्तिरमणिविभयकरि ।
अज्जवि जणुजणियाणंदभरे, भणइ भुवण भवणतरे ॥ ४ ॥
णिक्कलकलिकायाण जुत्तत्रीरवित्तियाए, देवदाणवाहमल्लु रावणो जगेक्कमल्लु ।
कुभकुभयण्णसुमु सारणो सुओणिसुंमु, इंदई महिंददक्खु अक्खओ गवक्खु वक्खु ।
जुवुज ववमुताक णीलुमारुईकुमारु, लक्खणो विवक्खतासु रामचदु सप्पयासु ।
दोणु भीममो असंगु दुद्धरो नलिगुतुंगु, सावुहो विसल्लु सल्लु भीमसेणु भोममल्लु ।
अज्जणो णिया रजूरु आसथामु आसपूरु, कीयहु कसि कुसणासु दुट्ठरिट्ठकालपासु ।
आहवे अदीणविट्ठि मालसणु पचहुट्ठि, ...प्पओ तरुप्पहारि सुवणखर रोपहारि ।
माउली तहेव मुच्चु सूरवीरणिप्पवचु, चक्किवीरउब्भियकु संकुकेसरी णायकु ।
कुदु नदु डिडपउ खडयण्णु खदपउ, वासणउ मोरणउ केउवोसुसावलेउ ।
साहमीर सारमल्लु भीमणउ भाइमल्लु, इट्ठु सखलादु गुल्लु देवईउ देवतुल्लु ।
मिघलो महामइग्घु घुघु सोमजग्घु जग्घु, रोमसोमरोमजंघु रिच्छकहिताहिजघु ।
मिघइ उग्गघइउ नन्नमत्तिविणउ, चडइट्ठ इट्ठमसु मुट्ठिउ मणिट्ठु रंमु ।
आरूणोउ आरुण सु पहलाउ ओविहत्थु, कोसलोविसालहत्थु हत्थिवच्छु सुदहत्थु ।
सुदइसु वीरराउ कण्हमोसु अगराउ, मालिवाहणो रसिल्लु कुतली सुकुंतलिल्लु ।

शताब्दी के अनुसार ग्रन्थों की प्रतिलिपियों की सूची

१४ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
१.	उत्तरपुराण [पुष्पदंत]	१३६१ ज्येष्ठ सुदी ६ गुरुवार	
२.	क्रियाकलाप [अज्ञात]	१३६६ फाल्गुन सुदी ५ शुक्रवार	

१५ वीं शताब्दी

अपभ्रंश

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
३.	आदिपुराण [पुष्पदंत]	१४६१ भादवा सुदी ६ बुधवार	
४.	पार्श्वनाथचरित्र [पद्मकीर्त्ति]	१४६४ भादवा सुदी ७ शनिवार	११८६
५.	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला [अमरकीर्त्ति]	१४७६ अषाढ सुदी ५ बु वार	१२७४

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

	नाम	लेखनकाल	रचनाकाल
६.	आदिपुराण [जिनसेनाचार्य]	१५८७ मगसिर सुदी २ सोमवार	
७.	उत्तरपुराण सटीक [प्रभाचन्द्राचार्य]	१५७१ आषाढ सुदी ७ रविवार	१०८०
८.	धन्यकुमारचरित्र [सकलकीर्त्ति]	१५३३ पोष सुदी ३ गुरुवार	
९.	धर्मपरीक्षा [अमितगति]	१५६६ पोषसुदी ६ शुक्रवार	१०७०
१०.	धर्मसंग्रहश्रावकाचार [मेधावी]	१५४२ कार्तिक सुदी ५ गुरु	१५४१
११.	प्रतिष्ठापाठ [आशाधर]	१५६० वैशाख सुदी १५ शनि.	१२८५
१२	प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति [ब्र० रत्नदेव]	१५७७ अषाढ सुदी ३	
१३.	,,	१५४३ भादवा सुदी ६	
१४.	राजवार्तिक [भट्टाकलंकदेव]	१५८२ अषाढ सुदी १३	
१५.	श्रावकाचारसार [पद्मनन्दि मुनि]	१५६४ वैशाख सुदी ७ सोमवार	
१६.	सम्यक्त्व कौमुदी [अज्ञात]	१५८० फागुण सुदी १४	

४४.	रत्नकरंडशास्त्र	[श्रीचन्द]	१५८२	शक १४४७	११५०
४५.	वर्द्धमान चरित्र	[जयमित्रहल]	१५६३	ज्येष्ठ सुदी ५ बृहस्पतिवार	
४६.	,,	,,	१५४५	वैशाख सुदी २ रविवार	
४७	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	[अमरकीर्त्ति]	१५६१	कार्तिक बुदी ५ शनिवार	
४८.	,,	,,	१५५८	चैत्र सुदी १० सोमवार	
४९.	,,	,,	१५५३	ज्येष्ठ सुदी ५ मंगलवार	
५०.	षट्पाहुड सटीक	[कुन्दकुन्दाचार्य]	१५८८	माघ बुदी ४	
५१.	,,	,,	१५६४	माघ सुदी २ बुधवार	
५२.	श्रीपालचरित्र	[नरसेन]	१५१२	चैत्र बुदी १२ मंगलवार	
५३	,,	,,	१५८४	शक १४४६ भादवा बुदी ८ रविवार	
५४.	,,	,,	१५७६	मंगसिर सुदी २ बुधवार	
५५.	सकलविधिविधानकाव्य	[नयनन्दि]	१५८०	चैत्र बुदी ४ गुरुवार	
५६.	सुदर्शनचरित्र	[नयनन्दि]	१५६७	माघ बुदी २ बुधवार	११००
५७.	,,	,,	१५०४	मगसिर सुदी ६ गुरुवार	
५८	सुलोचनाचरित्र	[गणिदेवसेन]	१५७७	पौष बुदी ६ सोमवार	
५९.	सुकुमाल चरित्र	[श्रीधर]	१५४६	ज्येष्ठ सुदी ६ बुधवार	१२०८
६०	हरिषेण चरित्र	[अज्ञात]	१५८३	आसोज सुदी १० शनिवार	

१७ वीं शताब्दी

संस्कृत

६१.	जम्बूस्वामीचरित्र	[ब्रह्म जिनदास]	१६६३		
६२.	जयकुमारपुराण	[ब्रह्म कामराज]	१६६१	भादवा सुदी ३ शुक्रवार	
६३.	जीवंधरचरित्र	[शुभचन्द्र]	१६३६	अषाढ सुदी १३ सोमवार	१५९६
६४	दुर्गपदप्रबोध	[श्री वल्लभगणि]	१६८१	कार्त्तिक सुदी ७	
६५	धर्मपरीक्षा	[अमितगति]	१६६६	कार्त्तिक सुदी ३ शुक्रवार	
६६.	नेमिनाथपुराण	[ब्र० नेमिदत्त]	१६४३	शक १५०८ फाल्गुन बुदी ८ सोमवार	
६७.	,,	,,	१६७४	फाल्गुन बुदी ५ शुक्रवार	
६८	पद्मपुराण	[धर्मकीर्त्ति]	१६७०		
६९	भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	[गुणसुन्दर]	१६५४	कार्त्तिक सुदी १४	

१५०.	सम्यक्त्वकौमुदी कथा	[जोधराज गोदीका]	१७६३	ज्येष्ठ शु० १४ बुधवार	१७२४
१५१.	श्रीपालचरित्र	[परिमल्ल]	१७६४	पौष सुदी १० मंगलवार	
१५२	हरिवंशपुराण	[नेमीचन्द]	१७६३		१७६६

१६ वीं शताब्दी

संस्कृत

१५३	आदिपुराण	[जिनसेनाचार्य]	१८०३	माघ सुदी १५ बृहस्पतिवार
१५४	आदिनाथपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१८३३	भादवा शुक्लपक्ष
१५५	उपदेशरत्नमाला	[सकलभूषण]	१८२६	मगसिर सुदी २ बृहस्पतिवार
१५६.	करकण्डुचरित्र	[शुभचन्द्र]	१८६१	
१५७.	ज्ञानसूर्योदय नाटक	[वादिचन्द्र]	१८३५	असाढ सुदी १३ सोमवार
१५८.	दुर्गपदप्रबोध	[वल्लभगणि]	१८१२	पौष सुदी १० रविवार
१५६.	पाडवपुराण	[शुभचन्द्र]	१८३१	वैशाख सुदी ६ रविवार
१६०	पुराणसार संग्रह	[सकलकीर्त्ति]	१८२२	कार्त्तिक सुदी ८ सोमवार
१६१.	,,	,,	१८२४	मगसिर सुदी ८ शनिवार
१६२.	भोजप्रबन्ध	[रत्नमन्दिरगणि]	१८०५	चैत सुदी ११
१६३	महीपालचरित्र	[चारित्रसुन्दरगणि]	१८७५	ज्येष्ठ कृष्णा
१६४	मुनिसुव्रतपुराण	[रायकृष्णदास]	१८५०	पौष सुदी ५ सोमवार
१६५	वरागचरित्र	[वर्धमानदेव]	१८७३	आसोज सुदी ५ बुधवार
१६६.	वर्द्धमानपुराण	[सकलकीर्त्ति]	१८०४	माघ सुदी १४ बृहस्पतिवार
१६७	सिद्धान्तसारसंग्रह	[नरेन्द्रसेन]	१८०३	
१६८	सिन्दूरप्रकरण	[सोमप्रभसूरि]	१८८६	भादवा सुदी ७ बृहस्पतिवार
१६६	हरिवंशपुराण	[ब्र० जिनदास]	१८२७	ज्येष्ठ सुदी ५ सोमवार
१७०	श्रावकाचार	[लक्ष्मीचन्द्र]	१८२१	फागुण सुदी ५ रविवार

हिन्दी

१७१.	आदिपुराण	[ब्र० जिनदास]	१८५६	मगसिर सुदी ३	
१७२.	उपदेशरत्नमाला	[शोभानाथ]	१८७६	फागुण सुदी १० शनिवार	
१७३.	जम्बूस्वामीचरित्र	[पांडे जिनदास]	१८४३	पौष शुक्ला बृहस्पतिवार	१६४२

ग्राम नगर व शासकों की समयानुसार सूची

ग्राम व नगर का नाम	शासक का नाम	समय	पृष्ठ तथा पंक्ति	विशेष
अदेहलारपल्लानगर	×	संवत् १५६०	२४×१२	
अजमेर	राव श्री जगमल	,, १५८६	१४६×१	
,,	×	१५६५	१३८×१	
अकबरनगर [बंगाल]	महाराजा मानसिंह	१६६२	५०×१५	महाराजा मानसिंह बंगाल के राज्यपाल थे
आगरा	अकबर	१६२२	६७×७	
,,	,,	१६४२	२१३×१२	
,,	×	१७८१	२१५×५	
,,	औरंगजेब [अवरंगसाह]	१७२२	२३४×८	
,,	×	१७७१	२४१×१५	
,,	×	१६६०	२४४×२६	
,,	×	१७६३	२५६×१२	
आमेर [अंबावती]	सवाई जयसिंह	१७७७	७×७	
,,	राजाधिराज भारमल	१६१६	७७×२	
,,	,,	१६११	१०४×२१	दूसरा नाम आम्रगढ है
,,	,,	१६१६	१२६×१५	
,,	,, पृथ्वीसिंह	१८२५	२१२×२३	
आल्हणपुर	×	१६११	१२८×१६	
उदयपुर	महाराणा जगतसिंह	१७६८	२१६×२१	
,,	×	×	२५५×२७	
,,	×	१८०८	२५५×४	
करौली	×	१८२६	२४६×८	
घालस	×	१७१७	२०८×२८	
कुंभनेर [कुंभलमेर]	×	१६०४	८५×१०	
कृष्णगढ़	बहादुरसिंह	१८८१	३५×१६	

जिहानाबाद [आगरा]	×	१७६३	२१४×१५	जैसिंहपुरा का नामोल्लेख हुआ है।
जयसिंहपुरा [दिल्ली]	×	१७७४	२०३×४	
,, ,,	×	१७६३	२०६×५	
,, [आगरा]	मुहम्मदसाह	१८०१	२५०×१२	महाराजा ईश्वरीसिंह का शासन भी लिखा है
जैंसिंहपुरा [देहली]	×	१७८१	२५०×१	
झिलाय	महाराजा कुशलसिंह	१७८५	७७×१२	
टोंक	×	१८२५	४७×५	
,,	×	१५७६	१७७×१०	
,,	×	१८०३	२१५×२७	
डारा	×	१७५७	२×८	
तक्षकगढ[टोडारायसिंह]	महाराजा जगन्नाथ	१६६४	८६×२४	यह गढ जयपुर प्रांत में स्थित है।
,,	राजाधिराज राव श्रीरामचन्द्र	१६१२	११३×४	
,,	,,	,,	१६२×१६	
,,	सलीम [जहांगीर]	१६१०	१६३×१३	
देवपुरी	×	१८२६	२१३×१०	
देहली	×	११८६	१२६×१३	कवि ने 'ढिल्ली' नाम से सम्बोधित किया है।
,,	औरंगजेब	१७३४	२३६×२६	
दौलतपुर	बाबर	१५८४	१७५×२४	
धामपुर	×	,,	२२५×६	
नयनपुर	गयासुद्दीन	१५३३	१६×१७	
नरसिंहपुरा	×	×	२१८×१८	सूरत प्रांत में स्थित है
नागपुर	फिरोजखां	१५४१	२३×५	
,,	महाराजा विजयसिंह	१८२४	४१×२७	
,,	×	१५७७	६६×२६	
,,	×	१५६०	१३२×२	
नारनोल	×	१६८५	२१८×२८	
निजामाबादपत्तन	आलाउद्दीन	१५१८	१३८×१२	

रामपुर	×	१७८४	२२०x१६	
,,	×	१७२७	२३६x१	
,,	×	×	२२५x६	
राणापुर	हेमकरण	१५६४	८८x२२	
रावरवत्तन	राजाधिराज डूंगरसिंह	१५१२	१७६x२	
रेणी	×	१८७१	२०२x१६	
रोहतक	अकबर	१६१६	१५६x१५	
,,	सिकन्दर लोदी	१५७६	८०x१६	
,,	अकबर	१६५६	११६x२४	
लवाण		१७५१	[illegible]३x१६	पचवारा प्रान्त मे स्थित है
लाभपुर	×	१७१३	२१६x२८	
लालकोट	महाराजा प्रतापसिंह	१८११	८x११	
बहादुरपुर	हुमायुं	१५६४	५६x१५	मेवात मे स्थित है।
बारानता	गयासुद्दीन	१५५६	१६५x५	
बुरहानपुर	×	१७३२	२[illegible]७x१६	खानदेश मे स्थित है
बंराट	×	×	[illegible]६x३	
वृंदावन	रावराजा विष्णुसिंह	१८३५	१६x१६	
,,	सूर्यमल	१६०३	६६x ६	चौहान वंशजों का राज्य था।
,,	×	१८[illegible]१	२४२x६	
शेरगढ	×	१८४३	२१२x२	
शेरपुर	महाराजा जगन्नाथ	१६६५	४०x३	
,,	×	१ [illegible]५३	[illegible]५८x१	
[illegible]	इब्राहीम	[illegible]५८[illegible]	१४६x१०	
[illegible]लपुर	कृष्णनरेन्द्र	[illegible]१२०	१६६x[illegible]५	
सराअपुरी	×	१६६६	३[illegible]x२[illegible]	
सहारनपुर	बाबर	१५८[illegible]	१३[illegible]x[illegible]	
[illegible]पुर	महाराजा मानसिंह	१६६२	[illegible]६x२१	
[illegible]	×	[illegible]६६८	[illegible]x१५	वागड देश में स्थित है
[illegible]	राय श्री सुरजन	[illegible]६३३	१५x४	

आचार्य-मुनि-भट्टारक-लेखकों की सूची

कुल-वंश-जाति आदि की सूची

९ वीर —(देहली)— सूची के सम्पादक का प्रयत्न सराहनीय है जिन्होंने प्रयत्न और परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों को जनता के सामने उपस्थित किया। आशा है शास्त्रों की प्राचीन प्रतियों से, साहित्य एवं इतिहास प्रेमी विद्वानों को अनुसंधान में काफी सहायता मिलेगी। विद्वानों को ऐसी पुस्तकों की सूची अवश्य देखना चाहिये।

१० जैन गजट (अंग्रेजी) लखनऊ —The Mahavir Kshetra Committee Jaipur deserves congratulations on publication a catalogue of the ancient manuscripts as old as 1334

संवत् १३३४ तक के प्राचीन प्रतिलिपि वाले ग्रन्थों की सूची प्रकाशन के लिये श्री महावीर क्षेत्र कमेटी धन्यवाद की पात्र है।

११ डाक्टर ए. एन. उपाध्याय कोल्हापुर, लिखते हैं—By bringing to light the valuable contents of the Amer Bhandar you have highly obliged the students of Indian literature and those of Jain literature in particular It is a highly useful catalogue It is necessary that wide publicity should be given to the contents of the Amer Bhandar and I shall do my best in that direction

आमेर शास्त्र भण्डार के बहुमूल्य ग्रन्थों को प्रकाश में लाकर आपने भारतीय साहित्यिकों तथा विशेषतः जैन साहित्यसेवियों के लिये बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ सूची बहुत उपयोगी है। आमेर शास्त्र भण्डार के ग्रन्थों पर विस्तृत प्रकाश डालना आवश्यक है और मैं भी इस दिशा में सभी प्रयत्न करने के लिये तैय्यार रहूंगा।

१२ प्रो० रामसिंह तोमर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, लिखते हैं—भण्डारों में बहुत ही महत्त्वपूर्ण सामग्री है। इस सामग्री से आपने इस ग्रन्थ द्वारा ग्रन्थविद्या अनुसन्धान में रुचि रखने वाले जगत् का परिचय कराया है। इसके लिये आप बधाई पात्र हैं। आपने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और इसके लिये आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय कम ही होगी।

१३ श्री [illegible] जैन [illegible] सोसाइटी (बनारस)— आपने संशोधन विभाग की स्थापना करके अनुपम कार्य किया है ऐसी सूचियां ही आगे जाकर साहित्य के इतिहास को लिखने में बहुत काम की सिद्ध होती हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए आपको धन्यवाद देता हूं।

श्री अगरचन्दजी नाहटा (बीकानेर) — आपने इस उपयोगी एवं महत्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर दि० [illegible] में अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है। प्रशस्ति संग्रह छप रही है यह जानकर और भी

[illegible] विभाग को जारी रख जयपुर के समस्त भण्डारों का निरीक्षण करा

[illegible] [illegible] ग्रन्थों का प्रकाशन करावें।

[illegible] ([illegible]) आपका इस दिशा में यह महान

[illegible] भी सहायता प्राप्त होगी।